॥ वन्दे वीरम् ॥

जै० उ० सा० प्र० पु० ३४

ज्ञान जानना क्रिया करना

समकित रत्न सार संग्रह

प्रकाशक—

रत्नलाल महता

जैन रत्न उत्तम साहित्य प्रकाशक मंडल

उदयपुर (मेवाड़)

प्रथमावृत्ति १०००

वीर सं० २४६४

वि० सं० १९९४

मूल्य आधा आना

श्रीकृष्ण छापाखाना, उदयपुर।

॥ ॐ ॥

समकित रत्न सार संग्रह ।

देव-परिचय

(छन्द नवीन)

जो घाति कर्म को चूर, शीघ्र सर्वज्ञ धीर बन जाते हैं ।
जिन में न राग का लेश, द्वेष से जो सुदूर हो जाते हैं ॥
जिनके समीप में क्रोध, मोह, मद, काम स्वयं शरमाते हैं ।
देवाधिदेव अरिहंत हमारे, देव वही कहलाते हैं ॥

गुरु-लक्षण

जो विषय कषाओं को तज कर, वैराग्य भाव विस्तारे हैं ।
जो स्वयं वेदना सह कर के, पर की रक्षा निरधारे हैं ॥
जो नित देकर व्याख्यान शास्त्र का ज्ञान भव्य को तारे हैं ।
वे पंच महाव्रत शूर मान्य, गुरुराज मुनीश हमारे हैं ॥

धर्म परिचय ।

जो निज सुभाव से जीवों में, खुद दया भाव आ जाता है ।
जो निज पर के कल्याण हेतु, कम वेश सभी को भाता है ॥
जो धर्मों का है सार, जिसे संसार सदा अपनाता है ।
यह जैन धर्म निज धर्म हमारा, दया धर्म कहलाता है ॥

मनुष्य का कर्त्तव्य ।

मनुष्य मात्र का धर्म है कि देव, गुरु और धर्म के नव पदों पर पूर्ण श्रद्धा रखे व व्यवहार समकित को समझ कर मोक्ष मार्ग की आराधना करने में प्रवृत्त होवे।

१. देव

(१) अरिहन्त देव जो राग द्वेष का अन्त कर के केवलज्ञान एवं केवल दर्शन सहित विराजमान हैं। (२) सिद्ध भगवान सब कर्मों से विरक्त होकर सिद्ध गति (मोक्ष) में विराजमान हैं। इन दोनों देवों का स्मरण एवं भक्ति करने से प्राणी मात्र का हित व सभी दोषों का नाश होकर सुख की प्राप्ति होती है।

२. गुरु के तीन पद ।

(१) आचार्य, (२) उपाध्याय (३) एवं साधु। जो अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य (५) अपरिग्रह इन पांच महाव्रतों का पालन करनेवाले तथा कामादि अनेक दोषों को टालनेवाले, सब जीवों की भलाई करने के लिये सांसारिक भोगों को त्याग कर विषय-कषाय को जीतकर शुद्ध संयम को पालनेवाले ऐसे तीनों गुरु पद वाले की सेवा करने से आत्मा का कल्याण होता है।

३. धर्म के चार पद ।

१ ज्ञान, २ दर्शन, ३ चारित्र, ४ तप । ये ही धर्म के अंग हैं । इनकी आराधना वृक्षों में कल्पवृक्ष, मणियों में विषहरण मणि, रत्नों में चिन्तामणि, पशुओंमें कामधेनु, औषधियों में संजीवनी जड़ी के समान सदा सुखदाई है । और विद्या तथा कला की खानि है । इसलिये इनकी प्रीति पूर्वक आराधना करनी चाहिये ।

व्यवहार समकित के ६७ भेद ।

व्यवहार समकित (सम्यक्त्व) में देव अर्हन्त, गुरु निर्ग्रन्थ, केवली प्ररूप्या दया धर्म की जानकारी पूज्य श्रीहस्तीमल्लजी महाराजने (धारणा) कराई जिसका खुलासा तफसीलवार पाठकों के समक्ष रखता हूं ।

१. श्रद्धा ४

(१) परमार्थ का परिचय अर्थात् जीवादि तत्त्वों की यथार्थ जानकारी करना ।
(२) परमार्थ के जानकार की सेवा करना ।
(३) समकित से गिरे हुए की संगति वर्जना ।
(४) मिथ्यामति (३६३) पाखंडियों की संगति छोड़ना ।

२. लिंग ३ (सम्यक्त्व की पहचान)

(१) धर्माराधना की रुचि ।
(२) शास्त्र सुनने की रुचि ।
(३) गुरु सेवा की रुचि ।

(१) जैसे तीन दिन का भूखा पुरुष उत्तम भोजन पाकर रुचि से करता है ऐसे ही भव्य जीव धर्म की आराधना रुचि से करे ।

(२) बत्तीस वर्ष का तरुण पुरुष जैसे सुन्दर स्त्रियों के राग-रग सुनने में रांचे, ऐसे ही भव्य जीव वीतराग की वाणी सुनने में रांचे ।

(३) पढ़ने की इच्छा वाला पढ़ाने वाले का योग पाकर रुचि से उद्यम करता है, ऐसे ही भव्य जीव सुगुरुओं की सेवा तन-मन से करे ।

३. विनय १०

(१) अर्हन्त, (२) सिद्ध, (३) आचार्य, (४) उपाध्याय, ५) स्थविर, (६) कुल, (७) गण, (८) संघ, (६) स्वधर्मी, १०) क्रियावन्त की विनय करना ।

४. शुद्धता ३

(१) मन-शुद्धता, (२) वचन शुद्धता, (३) काया शुद्धता ।

(१) मन शुद्धता—मन से वीतराग प्ररूपित धर्म ही

सत्य और हितकर है ऐसी विचारणा करे, मन से वीतराग देव को ध्यावे, अन्य को नहीं।

(२) वचन शुद्धता—वचन से श्री वीतराग प्रभु एवं सुगुरु का गुण-ग्राम करे, अन्य का नहीं।

(३) काय शुद्धता—काया से सुदेव, सुगुरु को सिर नमावे (शरीर का छेदन भेदन होने पर भी) दूसरे को नहीं नमावे।

५. लक्षण ५

(१) शम—कषायों की मन्दता, (२) संवेग—वैराग्य-भाव तथा मोक्ष की अभिलाषा, (३) निर्वेद—विषयों से घृणा होना, (४) अनुकम्पा—दुःखियों के दुःख को देख कर हृदय का पिघलना, (५) आस्था—वीतराग के वचन में दृढ़ विश्वास रखना।

६. दूषण ५

(१) शङ्का—जिन वचनों में सदेह अविश्वास का होना। (२) कंखा—अन्य धर्मियों की ऋद्धि आदि देख ललचाना। (३) विचिकित्सा—क्रिया के फल में संदेह करना, गुणियों के मलिन वेष आदि को देख कर घृणा करना। (४) पर पाखंड प्रशंसा—मिथ्यात्वी की प्रशंसा करना। (५) पर पाखंड संथवो—मिथ्यात्वियों से अधिक परिचय करना।

७. भूषण ५

(१) जैन धर्म में कुशल होना, (२) जैनधर्म के धारक सुसाधुओं की सेवा-भक्ति करना। (३) चतुर्विध संघ की सेवा करना। (४) जैन धर्म में स्थिर रहना तथा दूसरों को स्थिर करना। (५) जैन धर्म के गुण वर्णन करके अन्य धर्मियों को इस मार्ग में लगाना।

८. प्रभावना ८

(१) जिस समय जितने शास्त्र उपलब्ध हों, उनका ज्ञान करके धर्म को दिपाना।
(२) स्वमत तथा परमत की जानकारी कर धर्म दिपाना।
(३) निमित्त ज्ञान से भूत, भविष्य, वर्तमान काल की बात जान कर धर्म दिपाना।
(४) प्रत्यक्ष, हेतु, दृष्टांत पूर्वक अन्य मतियों से विवाद करके धर्म की उन्नति करना।
(५) अनेक विद्याओं की जानकारी कर धर्मोन्नति करना।
(६) कठिन तपस्या करके धर्मोन्नति करना।
(७) प्रसिद्ध व्रत लेकर धर्म की उन्नति करना।
(८) आगमों के अनुसार कविता रचकर धर्मोन्नति करना।

९. आगार ६

(१) राजा, (२) जाति, (३) बलवान्, (४) देवता, (५) माता पिता, (६) दुर्भिक्ष का आगार।

१०. जयणा ६

(१) आलाप, (२) संलाप, (३) दान, (४) प्रदान, (५) वंदना, (६) गुण ग्राम ।

११. स्थानक ६

(१) धर्म रूपी वृक्ष की समकित रूपी मूल है ।

(२) धर्म रूपी नगर की समकित रूपी कोट है ।

(३) धर्म रूपी महल की समकित रूपी नींव है ।

(४) धर्म रूपी किराणा की समकित रूपी दुकान है ।

(५) धर्म रूपी आभूषण की समकित रूपी पेटी है ।

(६) धर्म रूपी भोजन की समकित रूपी थाल है ।

१२. भावना ६

(१) जीव द्रव्य शाश्वत है । (२) जीव का लक्षण चेतना है । (३) जीव पुण्य पाप का कर्त्ता है । (४) जीव-सुख दुःख का भोक्ता है । (५) भव्य जीव ८ कर्मों को क्षय कर मोक्ष में जाते हैं । (६) मोक्ष के चार मार्ग हैं—(क) सम्यग्ज्ञान, (ख) सम्यग्दर्शन, (ग) सम्यक् चारित्र, (घ) सम्यक् तप तथा दान, शील, तप और भावना ।

जैनरत्न उत्तम-साहित्य, पुष्प नं० २६

॥ वन्दे वीरम् ॥

पच्चीस बोल अर्थसहित

सूत्रों की चाबी

संग्रह-कर्त्ता

रतनलाल मेहता

प्रकाशक—

जैनरत्न उत्तम साहित्य-प्रकाशक-मंडल

उदयपुर (मेवाड़)

प्रथमावृत्ति १००० | वि० सं० १९८९ वीर सं० २४५८ | मूल्य दो आना

निवेदन

जैन समाज में पच्चीस बाल का ज्ञान रटाने का बहुत प्रचार है और ज्ञानी पुरुषों की यह सम्मति है कि आत्मोन्नति के लिये जिस वस्तु को प्राप्ति करना उसका पहिले ज्ञान हाँसिल करना चाहिए केवल रटने से क्या लाभ ! इस बात को समझ कर फिर प्राप्त करने के लिए यत्न करना चाहिए इसी को ज्ञान और क्रिया प्राप्त करना कहते हैं। वर्तमान समय में अनेक विद्यार्थि व शिक्षित लोग कार्य रूप में नहीं लावे जिसका कारण यह है कि वह रटा हुवा ज्ञान उनको सूखा लगता है जिससे ज्ञान सीखने वाले क्रिया रहित होते हैं सीखने वाले को आनन्द प्राप्त नहीं होता इसका कारण यह है कि उन्होंने मतलब रहित ज्ञान रटा है जिसमे आत्म शून्य होकर अपनी आत्मा द्वारा धर्म का विकास नहीं कर सकते । इमका वर्षों तक अनुभव करने के बाद इस निर्णय पर पहुँचा हूँ कि जो ज्ञान विद्यार्थियों को सिखाया जावे उसका संक्षिप्त विस्तार भी पुस्तक में दिया जावे ताकि पाठशाला के अध्यापक बच्चों को पढ़ाते समय हरएक बात उदाहरण देकर बहुत अच्छी तरह से समझा दिया करें । बच्चों को रटाने के साथ मतलब समझाने की ज्यादा कोशिश करें । संग्रहकर्ता जैनधर्म का विद्यार्थी है और अनेक पुस्तकों के अनुवाद से इस पुस्तक को विद्यार्थियों के लाभ के लिए बनाई है । जैन साहित्य की हरएक पुस्तक-दर्पण इस हेतु से प्रकाशित हो रहे हैं कि अल्प परिश्रम में ज्यादा ज्ञान प्राप्त होवे । बुद्धिमान सज्जन इनको अपनावें और २५ बोल की चावी अर्थ सहित मँगाने की कृपा करें ।

भवदीय—

रतनलाल महता

आवश्यक सूचना

१. जैन-शिक्षण-संस्था—इस संस्था में बालक-बालिकाओं को विद्वान, सदाचारी, धर्म-प्रेमी, बलवान बनाने की पूरी चेष्टा की जाती है। धार्मिक विषय के साथ संस्कृत, प्राकृत, अंग्रेजी, महाजनी, व्यापारिक शिक्षा आदि का ज्ञान भलीभांति स्वल्प-समय में कराया जाता है। इस पढ़ाई के साथ ही हुनर—कला का भी ज्ञान कराया जाता है।

२. जैन-रत्नहुनरशाला—इस हुनरशाला में स्वदेशी, हर क़िस्म का कार्य सिखलाया जाता है। विधवा-सधवा बहिनों से सूत कताकर उनको पूरा महिनताना दिया जाता है। बेकारों को थोड़े ही समय में उद्यमी बना दिया जाता है। और तैयार कपड़ा बड़ी किफ़ायत से मिलता है।

३. जैनरत्न-उत्तम-साहित्य-प्रकाशक-मण्डल उदैपुर (मेवाड़) से ज्ञान वृद्धि के लिए वा धर्म पुस्तकालय में रखने के लिए जो सज्जन हर तरह की १५० पुस्तकें मँगायँगे, उनसे अल्पमूल्य के अतिरिक्त बहुत से पुस्तक-दर्पण बिना मूल्य उनकी सेवा मे भेंट किये जावेंगे। धार्मिक परीक्षा बोर्ड की पुस्तकें भी हमारे यहाँ मिलती हैं।

निवेदक—

रतनलाल महता,

(संचालक—जैन-शिक्षण-संस्था)

रत्नलाल महता, जन्म १९३३ माह वदी ७

|| ॐ ||

|| वन्दे वीरम् ||

मंगलं भगवान वीरो मंगलं गौतम प्रभु ।
मंगलं स्थूल भद्राय जैन धर्मस्तु मंगलं ॥

पच्चीस बोल का अर्थ सहित

पहले बोले गति चार—नरक, तिर्यंच, मनुष्य और देव गति ।

विशेषार्थ—जीव की पर्याय विशेष को गति कहते हैं । (१) नरक में रहने वाले जीवों की नरक गति है । (२) गाय, भैंस, कुत्ता, आदि जीवों की तिर्यंच गति है । स्त्री, बालक, मनुष्य की मनुष्य गति है । देवताओं की देवगति है ।

प्रश्न !

गति कितनी हैं ? नरक व देवगति का क्या अर्थ है । मनुष्य, और पशु कौन गति का जीव है ? गतियों के नाम कहो ?

दूसरे बोले जाति पाँच—एक इन्द्रिय (२) दो इन्द्रिय (३) तीन इन्द्रिय (४) चार इन्द्रिय (५) पांच इन्द्रिय ।

विशेषार्थ—एकेन्द्रिय आदि की पर्याय को जाति कहते हैं वे पाँच हैं । (१) एक इन्द्रिय—जिनके सिर्फ शरीर हो, जैसे पृथ्वी, जल, अग्नि वायु और वनस्पति ।

(२) दो इन्द्रिय जीव वे हैं जिनके शरीर और जीभ हो; जैसे-केंचुआ, जौंक, शंख आदि जीव ।

(३) तीन इन्द्रिय जीव वे हैं जिनके शरीर, जीभ और नाक हो, जैसे-चींटी, खटमल, जूँ आदि जीव ।

(४) चार इन्द्रिय जीव वे हैं जिन के सिर्फ शरीर, जीभ, नाक, और आँख हो, जैसे-बिच्छू, भौंरा, मक्खी, मच्छर आदि ।

(५) पांच इन्द्रिय जीव वे हैं जिनके शरीर, जीभ, नाक, आँख और कान हों, जैसे-देव, मनुष्य पशु, पक्षी आदि ।

प्रश्न ?

जाति कितनी हैं ? उनके नाम लो ? दो, चार तीन इन्द्रिय किसे कहते हैं ? केंचुआ, खटमल, भौंरा पशु, मक्खी कौनसी जाति के जीव हैं ? तुम किस जाति के हो ?

तीसरे बोले काय छै—पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति और त्रस काय।

विशेषार्थ—काय का मतलब शरीर है, इस लिए-जिनका शरीर पृथ्वी हो वे पृथ्वी काय, जिनका शरीर जल हो वे जल काय। जिनका शरीर अग्नि हो वे अग्नि काय। जिनका शरीर वायु हो वे वायु काय। शाक, भाजी, फल, फूल आदि जिनका शरीर हो वे वनस्पति काय और जो सरदी, गरमी से बचने के लिए चलते-फिरते हो वे त्रसकाय जीव हैं।

प्रश्नावली—

काय शब्द का क्या अर्थ है ? त्रस काय, अग्नि-काय और वनस्पति कायका क्या अर्थ है ? ये जीव किस काय के हैं ? वायु, कुए का जल, अंगार, फल-फूल, सेव, नारंगी, नमक, भोडल, गाय, बालक। तुम किस काय में हो ?

चौथे बोले इन्द्रिय ५-कान (श्रोत इन्द्रिय)

आंख (चक्षु इन्द्रिय) नाक (घ्राण इन्द्रिय) जीभ (जिह्वा-रसना इन्द्रिय) चमड़ी-शरीर (स्पर्शन इन्द्रिय)

विशेषार्थ--जिस के द्वारा जीव की पहचान हो। वे ५ इन्द्रियाँ हैं। (१) कान-जिससे आवाज सुनी जाय, जैसे हरमोनियम की आवाज, हमारी तुम्हारी बात-चीत। (२) आँख—जिससे काला, नीला, पीला, सफेद लाल रंग का ज्ञान हो। (३) नाक—जिससे सुगन्ध-दुर्गंध का बोध हो। (२) जीभ—जिससे खट्टा, मीठा, कड़ुवा, कषायला, चरपरे आदि रसों का स्वाद जाना जाय। शरीर छूने से ज्ञान हो, जैसे अग्नि गरम है, पानी ठंडा है आदि।

प्रश्नावली—

इन्द्रियाँ कितनी हैं? नाम लो? नाक, कान, जीभ से क्या जानते हो? हाथ रखकर पांचों इन्द्रियाँ बताओ? रंग का ज्ञान, आवाज सुनना, छूकर जानना किस इन्द्रिय का काम है?

५ पांचवें बोले पर्याप्ति छै—आहार, शरीर, इन्द्रिय, श्वासोच्छ्वास, भाषा और मन।

विशेषार्थ—पर्याप्ति—आत्मा की शक्ति विशेष

को पर्याप्ति कहते हैं। वे छः हैं—(१) आहार पर्याप्ति-आहार वर्गणा के परमाणु को ग्रहण कर उससे रस बनाने की शक्ति की पूर्णता को आहार पर्याप्ति कहते हैं।

(२) रसका खून, मांस, मज्जा आदि सप्त धातु बना शरीर बनाने वाली शक्ति की पूर्णता को शरीर पर्याप्ति कहते हैं।

(३) धातु से शरीर, जीभ आदि इन्द्रियां बनाने की शक्ति की पूर्णता को इन्द्रिय पर्याप्ति कहते हैं।

(४) श्वासोच्छ्वास वर्गणा के परमाणुओं को ग्रहण कर श्वास-उच्छ्वास रूप परणमाने की शक्ति की पूर्णता को श्वासोच्छ्वास पर्याप्त कहते हैं।

(५) भाषा वर्गणा के पुद्गलों को ग्रहण कर कर वचन रूप में बदलने की शक्ति को भाषा पर्याप्त कहते हैं।

(६) मन योग पुद्गल वर्गणा को ग्रहण कर उन्हें मन रूप में बदलने की शक्ति को मनः पर्याप्ति कहते हैं।

प्रश्नावली ?

पर्याप्ति कितनी हैं ? नाम कहो ? ३, ४, ५, १
पर्याप्ति का क्या अर्थ है ? पर्याप्ति का स्वरूप कहो ?
किस २ के कौन पर्याप्ति होती हैं।

(नोट—एकेंद्रिय के ४, दो इन्द्रिय के असंज्ञी जीवों तक ५ और संज्ञी के छः होती हैं।

छट्टे बोले प्राण दश—५ इन्द्रियाँ, ३ बल, आयु, श्वासोच्छ्वास। प्राण—जिसके संयोग से जीव जीवन और वियोग मरण को प्राप्त हो। वे दश हैं—

(१) छूने की शक्ति को स्पर्शेन्द्रिय प्राण कहते हैं।

(२) (चखने) स्वाद लेने की शक्ति को रसना-इन्द्रिय प्राण कहते हैं।

(३) सूंघने की शक्ति को घ्राण इन्द्रिय प्राण कहते हैं।

(४) देखने की शक्ति को चक्षु इन्द्रिय प्राण० ५) सुनने की शक्ति को श्रोत इन्द्रिय प्राण कहते हैं। (६) अच्छे, बुरे का विचार करने वाली शक्ति को मन बल प्राण कहते हैं। (७) वचन बोलने की शक्ति को वचन प्राण कहते हैं। (८) शरीर से

काम करने की शक्ति को काय बल कहते हैं । (६) श्वांस लेने व छोड़नेकी शक्ति को श्वासोच्छ्वास कहते हैं। (१०) नियत समय तक एक पर्याय में आत्मा को टिकाने वाली शक्ति को आयु प्राण कहते हैं।

प्रश्नावली--

प्राण किसे कहते हैं ? वे कितने हैं ? उनके नाम लो ? ४,६, ६,५, ७ वें प्राणों के लक्षण कहो ? प्राणों से तुम क्या समझे ?

सातवें बोले शरीरपांच-(१) औदारिक, (२) वैक्रियक (३) अहारक, (४) तैजस (५) कार्माण ।

विशेषार्थ-जो नाशवान् हो वह शरीर है। वे ५ हैं। (१) मनुष्य और तिर्यंचों के स्थूल शरीर को औदारिक कहते हैं। (२) जिससे नाना तरह के रूप बनाये जायँ वह वैक्रियक है। (३) जो शंका निवारण के लिये छट्टे गुण स्थान वाले मुनि के एक हाथ शरीरके आकार का पुतला निकलता है वह आहारक शरीर है। (४) आहार को पचावे वह तैजस शरीर है। (५) आठ कर्मों के समुदाय को कार्माण शरीर कहते हैं।

प्रश्न-

शरीर किसे कहते हैं? वे कितने हैं,नाम लो ?

मनुष्य, देवता, के कौनसा शरीर है? तुम्हारा अन्न कैसे पचता है? कार्माण शरीर किसे कहते हैं?

आठवें बोले योग, १५–

४ मनका–सत्य, असत्य, मिश्र, व्यवहार।

४ वचन का–सत्य भाषा, असत्य भाषा, मिश्र भाषा, और व्यवहार भाषा।

७ औदारिक, औदारिक मिश्र, वैक्रियक, वैक्रियक, मिश्र, आहारक, आहारक मिश्र, कार्माण।

प्रश्नावली—

योग कितने हैं? मन, वचन, काय के स्पष्ट भेद कहो?

नवें बोले उपयोग १२—पाँच ज्ञान, चार दर्शन, तीन अज्ञान।

विशेषार्थ–ज्ञान-दर्शन रूप उपयोग हैं। वे १२ हैं।

(१) पांच इन्द्रियों और छठे मन से जो ज्ञान हो, वह मति ज्ञान है। (२) शास्त्रों के पढ़ने सुनने से जो ज्ञान होता है वह श्रुत ज्ञान है। (३) द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की मर्यादा के लिए जो रूपी पदार्थों को स्पष्ट जाने वह अवधि ज्ञान। (४) आत्मा की सहायता से दूसरों के मन तिष्ठते

हुए रूपी पदार्थों को जानना मनः पर्यव ज्ञान है। (५) जो भूत, भविष्यत, वर्तमान की वस्तुओं को स्पष्ट जाने वह केवल ज्ञान है। (१) झूठे मति ज्ञान को मतिअज्ञान, (२) मिथ्या श्रुत ज्ञान को कुश्रुत और (३) झूठे अवधि को विभंग कहते हैं। झूठे का मतलब जैसे का तैसा न जानता है।

४ दर्शन—(१) आंखों से सत्ता मात्र को देखना चक्षुदर्शन है। (२) आंखों के सिवाय अन्य इन्द्रियों से सत्ता मात्र का देखना अचक्षु-दर्शन है। (३) अवधिद्वारा, रूपी पदार्थों का सामान्य जानना अवधि- दर्शन है। (४) केवली को समस्त पदार्थों की सत्ता का ज्ञान होना केवल दर्शन है। दर्शन सामान्य पदार्थ को और ज्ञान विशेष को ग्रहण करता है।

प्रश्नावली—

उपयोग के कितने भेद हैं? ज्ञान और दर्शन किसको ग्रहण करता है? २ रे, ३ रे, ५वें, ८वें ज्ञान का स्वरूप कहो? ३रे, १ले दर्शन किसे कहते हैं? ऐसी चीज का नाम लो जिसमें ज्ञान-दर्शन न हो?

दशवें बोल कर्म आठ—

(१) ज्ञानावरणीय–जो जीवके ज्ञानको ढके।

(२) दर्शनवरणीय–जो जीव के दर्शन रोके।

(३) वेदनीय–जो सुख और दुख का अनुभव करावे, अर्थात् सुख और दुख की सामग्री पैदा करे।

(४) मोहनीय–जो जीव को सत्य-असत्य के ज्ञान से शून्य कर दे, धर्म विमुख कर दे।

(५) आयु–जो जीव को नियत समय तक एक पर्याय में रखे।

(६) नाम–जो शरीर की रचना आदि करे–बनावे।

(७) गोत्र–जो नीच-ऊँच कुल में पैदा करे।

(८) अन्तराय–जो विघ्न करे।

कर्म–जिससे जीव संसार में भटके। इसका कारण राग-द्वेष है।

प्रश्नावली

कर्म किसे कहते हैं? ३रे, ५वें, ६टे, ८वें कर्म का क्या नाम है? उनको लक्षण भी कहो? जीव संसार में क्यों भटकते हैं? उसका क्या कारण है? तुम संसार में क्यों रुके हो? नीच ऊँच कुल में होना दुख मिलना, विघ्न करना, शरीर

की रचना करना, किस कर्म का कार्य है ?

११ वें बोले गुण स्थान १४-(१) मिथ्यात्व, (२) सासादन (३) मिश्र (४) अविरति सम्यक् दृष्टि, (५) देश विरति (६) प्रमत्त संयत (७) अप्रमत्त संयत (८) अपूर्व करण (९) अनिवृत्ति करण (१०) सूक्ष्म संपराय (११) उपशान्त मोह (१२) क्षीणमोह (१३) सयोग केवली (१४) अयोग केवली।

विशेषार्थ-गुणस्थान-मोह और योग के निमित्त आत्मा की शुद्धि में घटती-बढ़ती होना।

१ मिथ्यात्व-झूठा विश्वास करना।

२ सासादन-सम्यक्त्व को छोड़ मिथ्यात्वी होना। अर्थात् सम्यक्त्व को छोड़ कर जब तक जीव मिथ्यात्व को नहीं पाता उसके बीच की अवस्था को सासादन कहते हैं।

३ सम्यक्त्व और मिथ्यात्व के मिले हुए भावों को मिश्र कहते हैं।

४ अविरति सम्यक्दृष्टि-सम्यक्त्व तो हो गया है पर कोई व्रत व चरित्र धारण न करे।

५ देशविरति-सम्यकत्व सहित श्रावक धर्म का पालना।

६ प्रमत्तसंयत—अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह रूप पंच महाव्रतों को पालता है, लेकिन उसके प्रमाद मौजूद होने से प्रमत्त संयत कहलाता है।

७ अप्रमत्त संयत—प्रमाद रहित होकर पाँचों महाव्रतों को पालना।

८ अपूर्व करण—अपनी विशुद्धि में अपूर्व (जो कभी न की हो) उन्नति करना।

९ अनिवृत्ति करण—आठवें गुण स्थान से अधिक।

उन्नति करना

१० सूक्ष्म संपराय—जहां पर सर्व कषायें दब गई हों या नाश हो गईं लेकिन सिर्फ लोभ कषाय सूक्ष्म रूप से मौजूद हो वह सूक्ष्म संपराय है।

११ उपशान्त मोह०—जहां पर सर्व कषायें दब गईं हों- किसी का भी उदय न हो।

१२ क्षीण मोह—जहां पर सब काषायें नष्ट हो गई हों।

१३ सयोग केवली-जिसको केवल ज्ञान तो हो गया है पर योग (मनादि की क्रिया) मौजूद है वह सयोगी केवली है।

१४ अयोग केवली–केवल ज्ञान के बाद जब मन, वचन, और काय की प्रवृत्ति दूर हो जाती है वह अयोग केवली जिन है। फिर मोक्ष में चले जाते हैं।

प्रश्नावली

गुण स्थान किसे कहते ? वे कितने हैं ? १, ४, ६, ८, १०, १३ वें गुणस्थान का स्वरूप कहो ? कषायें कहां पर नष्ट होती हैं ? अपूर्व क्या अर्थ है ? गुण स्थानों से क्या समझते हो ? मोक्ष कब मिलती है ?

बारहवें बोले–पांच इन्द्रियों के २३ विषय ३ श्रोत इन्द्रिय के ३ विषय—१ जीव शब्द (पशु पक्षी, मनुष्य आदि की आवाज) २ अजीवशब्द (बिना जानवाली चीजों की आवाज़) जैसे बादल का शब्द ३ मिश्र शब्द–(जीव और अजीव की मिली हुई आवाज) जैसे हारमोनियम, सारंगी तबला की आवाज

५ चक्षु इन्द्रिय के पांच–सफेद, काला, नीला और लाल।

२ घ्राण इन्द्रिय के दो–सुगंध और दुर्गन्ध।

५ रसना इन्द्रिय के पांच–खट्टा, मीठा, कड़ुवा,

कषायला और चरपरा।

८ स्पर्शन के आठ–हलका, भारी, ठंडा-गरम, कठोर–नरम, रूखा और चिकना।

विषय–जिसको इन्द्रियां जाने

प्रश्नावली

इन्द्रियों के विषय कितने हैं ? जीव शब्द और मिश्र शब्द का स्वरूप कहो ? ये कौनसी इन्द्रिय के विषय हैं ? चरपरा, पीला, नरम, तबला का शब्द, दुर्गन्ध, भारी। स्पर्श, घ्राण, श्रोत इन्द्रिय के विषय कहो ? प्रत्येक इन्द्रिय के विषय के दो दो उदाहरण दो ? विषय किसे कहते हैं ?

१३ वें बोले मिथ्यात्व के १० भेद

१ जीव को अजीव मानना मिथ्यात्व है
२ अजीव को जीव मानना ,,
३ धर्म को अधर्म जानना ,,
४ अधर्म को धर्म जानना ,,
५ साधु को असाधु श्रद्धा न करना ,,
६ असाधु को साधु श्रद्धा नकरना ,,
७ संसार के मार्ग को मोक्ष का मार्ग जानना
८ मोक्ष-मार्ग को संसार का मार्ग जानना ,,
९ कर्म रहित को कर्म सहित मानना ,,

१० कर्म सहित को कर्मरहित मानना ,,

विपरीत श्रद्धान–विश्वास करना मिथ्यात्व है।

प्रश्नावली

मिथ्यात्व के भेद कहो? २, ४, ६, ६, मिथ्यात्व के नाम बोलो? मिथ्यात्व का क्या मतलब है? दूध को चूना का पानी, सुई को पिन समझना मि० है या नहीं?

जो दूसरों से न रुके न दूसरों को रोके वह सूक्ष्म है और जो दूसरों से रुके तथा दूसरों को रोके, वह स्थूल है।

१४ वें बोले नवतत्व के ११५ भेद-नव तत्वों के नाम–जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, बंध, संवर, निर्जरा और मोक्ष तत्व।

१ जीव के १४ भेद–सूक्ष्म एकेन्द्रिय, बादर एकेन्द्रिय, बेन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चार इन्द्रिय असंज्ञी पंचेन्द्रिय, संज्ञी पंचेन्द्रिय इनके अपर्याप्त-अपर्याप्त के भेद से ७×२=१४ भेद हुए।

विशेषार्थ–जो दूसरों से रुके वा दूसरों को रोके वह सूक्ष्म है। जो नजर आवे वह स्थूल है। मन–अर्थात् विचार करनेवाले को संज्ञी और बिना मन वाले को असंज्ञी कहते हैं।

२ अजीव के १४ भेद–धर्मास्तिकाय के तीन भेद स्कंध, देश और प्रदेश। अधर्मास्तिकाय के तीन भेद स्कंध, देश, और प्रदेश। आकाशास्तिकाय के ३ भेद-स्कंध, देश और प्रदेश। पुद्गलास्तिकाय के ४ भेद-स्कंध, देश, प्रदेश और परमाणु। काल द्रव्य का एक भेद कुल १४ भेद अजीव के हुए।

विशेषार्थ–मिले हुए अनेक परमाणुओं के समूह को स्कंध कहते हैं। स्कंध से कुछ कम भाग को देश कहते हैं। देश से लगा हुआ अति सूक्ष्म भाग प्रदेश कहलाता है। जिसका दूसरा हिस्सा न हो सके ऐसा स्वतंत्र हिस्सा अणु कहलाता है।

अजीव–जिसमें ज्ञान-जानने की शक्ति न हो।

३ पुण्य के ९ भेद—(१) अन्न पुण्य०–करुणा से अन्न देना। २ पान पु०–पानी पिलाना ३ लयन पु०—ठहरने को जगह—स्थान आदि देना ४ शयन पु०—शय्या, पाटला आदि देना ५ वस्त्र पु०-वस्त्र देना। ६ मन पु०–शुभ भाव रखना। ७ वचन पु०—मुख से शुभ वचन बोलना। ८ काय पु०—शरीर से शुभ

काम करना। ९ नमस्कार पु० सत्पुरुषों को नमस्कार करना।

जिससे सुख मिलता है वह पुण्य है।

४ पाप

पाप के १८ भेद—१ प्राणातिपात—जीव हिंसा करना। २ मृषावाद—झूठ बोलना। ३ अदत्ता दान—चोरी करना। ४ मैथुन—कुशील का सेवन करना। ५ परिग्रह—धन आदि में इच्छा रखना। ६ क्रोध—गुस्सा करना। ७ मान-घमंड करना। ८ माया-छल-कपट करना। ९ लोभ-लालच करना। १० राग-मोह करना। ११ द्वेष-ईर्षा करना। १२ कलह—आपस में झगड़ा-लड़ाई करना। १३ अभ्याख्यान-झूठा दोष लगाना। १४ पैशुन्य-चुगली करना। १५ परपरिवाद-दूसरों की बुराई करना। १६ रति अरति—बुरे कार्यों से प्रेम, और अच्छे कार्यों से द्वेष करना। १७ मायामृषावाद—कपट सहित झूठ बोलना। १८ मिथ्यादर्शन-शल्य—कुदेव, कुगुरु कुधर्म पर श्रद्धा रखना। (जिससे दुख हो वह पाप-तत्त्व है।)

५ आस्रव के २० भेद—

१ मिथ्यात्व-उल्टा विश्वास करना अव्रत-त्याग,

२ अजीव के १४ भेद-धर्मास्तिकाय के तीन भेद स्कंध, देश और प्रदेश। अधर्मास्तिकाय के तीन भेद स्कंध, देश, और प्रदेश। आकाशास्तिकाय के ३ भेद-स्कंध, देश और प्रदेश। पुद्गलास्तिकाय के ४ भेद-स्कंध, देश, प्रदेश और परमाणु। काल द्रव्य का एक भेद कुल १४ भेद अजीव के हुए।

विशेषार्थ-मिले हुए अनेक परमाणुओं के समूह को स्कंध कहते हैं। स्कंध से कुछ कम भाग को देश कहते हैं। देश से लगा हुआ अति सूक्ष्म भाग प्रदेश कहलाता है। जिसका दूसरा हिस्सा न हो सके ऐसा स्वतंत्र हिस्सा अणु कहलाता है।

अजीव-जिसमें ज्ञान-जानने की शक्ति न हो।

३ पुण्य के ९ भेद—(१) अन्न पुण्य०—करुणा से अन्न देना। २ पान पु०—पानी पिलाना ३ लयन पु०—ठहरने को जगह—स्थान आदि देना ४ शयन पु०—शय्या, पाटला आदि देना ५ वस्त्र पु०-वस्त्र देना। ६ मन पु०—शुभ भाव रखना। ७ वचन पु०—मुख से शुभ बचन बोलना। ८ काय पु०—शरीर से शुभ

काम करना। ९ नमस्कार पु० सत्पुरुषों को नमस्कार करना।

जिससे सुख मिलता है वह पुण्य है।

४ पाप

पाप के १८ भेद—१ प्राणातिपात—जीव हिंसा करना। २ मृषावाद—झूठ बोलना। ३ अदत्ता दान—चोरी करना। ४ मैथुन—कुशील का सेवन करना। ५ परिग्रह—धन आदि में इच्छा रखना। ६ क्रोध—गुस्सा करना। ७ मान-घमंड करना। ८ माया-छल-कपट करना। ९ लोभ-लालच करना। १० राग-मोह करना। ११ द्वेष-ईर्षा करना। १२ कलह—आपस में झगड़ा-लड़ाई करना। १३ अभ्याख्यान-झूठा दोष लगाना। १४ पैशुन्य-चुगली करना। १५ परपरिवाद-दूसरों की बुराई करना। १६ रति अरति—बुरे कार्यों से प्रेम, और अच्छे कार्यों से द्वेष करना। १७ मायामृषावाद—कपट सहित झूठ बोलना। १८ मिथ्यादर्शन-शल्य—कुदेव, कुगुरु कुधर्म पर श्रद्धा रखना। (जिससे दुख हो वह पाप-तत्त्व है।)

५ आस्रव के २० भेद—

१ मिथ्यात्व-उलटा विश्वास करना अव्रत-त्याग

काय के व्यापार का त्याग करना।

पहले बांधे हुए कर्मों का एक देश निर्जरा है। निर्जरा के दो भेद हैं- देकर कर्म परमाणुओं का खिरना

२ बिना फल दिये कर्मों का होना, अविपाक है।

८ बंध के ४ भेद—

कर्मों का जीवों के साथ जो है उसे बंध कहते हैं। प्रकृ कर्मों का स्वभाव। २ स्थिति के ठहरने की मर्यादा। ३ आठ कर्मों का शुभ और अशुभ ४ प्रदेश बंध-कर्म परमाणुओं बंध-दूध और पानी कर्म पुद्गलों का

६ मोक्ष

वह सम्यग्दर्शन, सम्यक् सम्यक् तप से प्राप्त होता

तत्त्वों के कितने भेद हैं ? संवर व पाप के भेद कहो ? मोक्ष किन कारणों से प्राप्त होती है ? ये किस के भेद हैं ? दो इन्द्रिय, परमाणु, स्कंध, वस्त्र, मान, क्रोध, कलह, मृषावाद, प्रमाद, मन वश न करना, वैयावृत्त, ध्यान, अनुभाग । तत्त्वों का संक्षिप्त हाल कहो ?

१५ वे बोले आत्मा आठ—

१ द्रव्य आत्मा शरीर, कुटुम्ब धन आदि को जो अपना मानता है उसे द्रव्य आत्म कहते हैं ।

२ कषाय आत्मा-क्रोध, मान माया, लोभ के अन्दर रहने वाले को कषाय आत्मा कहते हैं ।

३ योग आत्मा-मन, बचन और काया से क्रिया करने वाले को योग आत्मा कहते हैं ।

४ उपयोग आत्मा पाँच , ज्ञान तीन अज्ञान, ४ दर्शन १२ उपयोग में वर्त्ताव करने वाले को उपयोग आत्मा कहते हैं ।

५ ज्ञान आत्मा-ज्ञान में रमण करने वाले को ज्ञान आत्मा कहते हैं ।

६ दर्शन आत्मा-दर्शन में रमण करने वाले को दर्शन आत्मा कहते हैं ।

७ चरित्र आत्मा-चरित्र में रमण करने वाले

को चरित्र आत्मा कहते हैं।

८ वीर्य आत्मा·वीर्य में आत्मिक शक्ति विशेष वर्ताव करने वाले को वीर्य आत्मा कहते हैं

जीव को आत्मा कहते हैं। वह ज्ञान आदि में तल्लीन रहते हैं।

१६ वें बोले दण्डक, २४—

१ सात नारकियों का एक दण्डक, भुवनपतियों के १० दण्डक—असुरकुमार, नागकुमार, सुवर्णकुमार, अग्निकुमार, वायुकुमार, विद्युत्कुमार द्वीप कुमार, उदधि कुमार, दिशा कुमार, वायु कुमार, स्तनित कुमार।

दो इन्द्रिय, तीन, चार इन्द्रिय का ५ स्थावरों का—पृथ्वीकाय जल काय अग्नि काय वायु काय और वनस्पति काय।

१ मनुष्य का, १ व्यंतर देवता का, १ ज्योतिषी देवता का, १ वैमानिक देवता का, १ पंचेन्द्रिय तिर्यंचका, कुल २४ दंडक हुए।

जिसमें जीव दुख पावे, भटके वह दण्डक हैं

१७ वें बोले लेश्या छै—

१ कृष्ण, २ नील, ३ कापोत, ४ तेज, ५ पद्म ६ शुक्ल लेश्या।

(१) कृष्ण लेश्या—क्रूर, क्रोधी, ईर्ष्यालु, निर्दयी, द्वेषी और धर्म रहित होता है।

(२) नील लेश्या वाला—आलसी, मन्द बुद्धि, स्त्री लुब्धक, ठग, डरपोक, घमंडी और लड़ाकू होता है।

(३) कापोत लेश्या—शोकाकुल, सदा क्रोधित रहने वाला, निंदक, युद्ध-प्रिय जीव कपोत लेश्यी है।

(४) तेजो लेश्या—विद्यावान्, दयालु, कार्य-अकार्य की पहचान करने वाला, लाभ और हानि में सम रहने वाला, जीव तेजो लेश्या वाला है।

(५) पद्म लेश्या—क्षमावान्, शीलवान्, त्यागी, देव, गुरु की भक्ति करने वाला, शुद्ध मन वाला और सदा प्रसन्न रहने वाला पद्म लेश्यी है।

(६) शुक्ल लेश्या—राग-द्वेष, शोक और पर निंदा से रहित धर्म और शुक्ल ध्यान करने वाला जीव शुक्ल लेश्यी है।

प्रश्नावली—

दण्डक, लेश्या, आत्मा किसको कहते हैं? उनके भेद कहो? १० वां, १२, १६, २४, वां किस का दण्डक है? मनुष्य, तिर्यंच, व्यन्तर नारकी के कितने दण्डक हैं?

असुर कुमारों के नाम लो? कापोत, शुक्ल,

पद्म; के क्या लक्षण हैं ? आत्माओं के नाम लो ?

लेश्या का उदाहरण—

कृष्ण आदि छहों लेश्या वाले छै राहगीर बन के बीच में मार्ग को भूलकर फलों से संयुक्त आम्र वृक्ष को देखकर अपने २ मन में इस प्रकार विचार करते हैं। और तदनुसार बचन भी बोलते हैं—

(१) कृष्ण लेश्या वाला विचार कर कहता है कि "मैं इस वृक्ष का जड़ से उखाड़कर इसके फलों को खाऊँगा।"

(२) तेजो लेश्या वाला विचार कर कहता है कि "मैं इस वृक्ष को तने से काट कर इसके फल को खाऊँगा।

(३) कापोत लेश्या वाला विचारता है और कहता है कि "मैं इस वृक्ष की बड़ी २ पत्ती डालि-को काटकर फलों को खाऊँगा।

(४) नील लेश्या वाला विचारता है और कहता है कि "मैं इस वृक्ष के छोटी २ डालियाँ काट कर फलों को खाऊँगा।

(५) पद्म लेश्या वाला विचार कर कहता है कि-"मैं इस वृक्ष के फलों को तोड़कर खाऊँगा।

(६) शुक्ल लेश्या वाला विचारता और कहता

है कि "मैं इस वृक्ष के स्वयं टूटे हुए फलों को खाऊँगा।

हे सज्जनो! इन छहों पुरुषों की विचार धारा को देखकर स्वयं विचार करें।

१८ वें बोले दृष्टि तीन १ सम्यक् दृष्टि २. मिथ्या दृष्टि ३. मिश्र दृष्टि।

विशेषार्थ—१ जैसा का तैसा श्रद्धान करना सम्यग्दृष्टि है। २. झूठा श्रद्धान करना मिथ्यादृष्टि है। झूठा और सच्चा मिला हुआ विश्वास करना मिश्रदृष्टि है।

१६ वें बोले ध्यान चार—आर्त्त, रौद्र, धर्म और शुक्ल ध्यान।

(१) आर्त्तध्यान-अनिष्ट वस्तु का संयोग, इष्ट वस्तु का वियोग होने पर चिंतवन करना।

(२) रौद्रध्यान-हिंसा आदि बुरे कार्यों में आनन्द मानना।

(३) धर्मध्यान-वीतराग की आज्ञा मानना, कर्म फल का विचार करना लोक स्वरूप का विचार करना।

(४) शुक्लध्यान- तीर्थंकर आदि महापुरुषों के ध्यान को शुक्ल ध्यान कहते हैं?

प्रश्नावली—

दृष्टि कितनी हैं? इनके लक्षण कहो ? ध्यान किसे कहते हैं? आर्त और धर्म ध्यान का क्या अर्थ है? शुक्ल और रौद्र से क्या समझते हो? क्या तुम्हारे में भी कोई ध्यान होता है?

२० वें बोले-षट् द्रव्य के तीस भेद-छः द्रव्यें हैं-धर्म, अधर्म, आकाश, जीव, पुद्गल और काल

विशेषार्थ—(१) धर्मास्तिकाय—जो जीव और पुद्गलों के चलने में सहकारी हो (२) अधर्मा०—जो गमन करते हुए जीव पुद्गलों की स्थिति में सहायक हो। (३) आकाश—जो अवकाश दे। (४) चेतना वाला जीव है। (५) जड़ पुद्गल है। (६) वर्तनशील काल द्रव्य हैं। इन के ३० भेद निम्न प्रकार से हैं—

इन सब द्रव्यों में पुद्गल द्रव्यरूपी—स्पर्श, रस, गंध, वर्ण वाला है। बाकी द्रव्ये अरूपी—वर्णादि रहित हैं। ये आदि-शुरू अनंत-अंत रहित हैं। दृष्टान्त में उदाहरण दिये गये हैं जैसे धर्म द्रव्य का उदाहरण पानी में मछली है। जैसे मछली स्वयं चल सकती है पर बिना पानी की सहायतासे नहीं चल सकती है, उसी प्रकार जीव और पुद्गल की भी स्थिति है।

	नाम से	द्रव्य से	क्षेत्र से	काल से	भाव से	गुण से	उदाहरण
१	धर्मद्रव्य स्तिकाय	एक द्रव्य	लोकप्रमाण	आदि अंत रहित	अरूपी	चलन गुण	पानी में मछली का दृष्टान्त
२	अधर्मद्रव्य	एक द्रव्य	लोकप्रमाण	„	„	स्थिर गुण	थके पंथी को वृक्ष की छाया का दृष्टान्त
३	आकाशद्रव्य	„	लोकालोक प्रमाण	„	„	अवकाश गुण	भीत में खूंटी का दृष्टान्त
४	जीवद्रव्य	अनंत जीव द्रव्य	लोकप्रमाण	„	„	उपयोगगुण	चन्द्रमा की कला
५	पुद्गलद्रव्य	अनंतद्रव्य	„	„	रूपी	सड़नामिलना आदि	बादल का
६	कालद्रव्य	अनंतद्रव्यों पर रहे	ढाई द्वीप प्रमाण	„	अरूपी	वर्तन गुण	कपड़ा कची का उदाहरण

२१ वें बोले राशि दो—जीव राशि और अजीव राशि।

(१) जिस में चेतना वाले–गाय, भैंस, स्त्री, पुरुष, कुत्ता आदि जीव राशि में हैं।

(२) जिसमें अचेतना–कागज, पेंसिल, आदि हो वह अजीव राशि है।

२२ वें बोले श्रावक के १२ व्रत

(१) हलते चलते जीवों को नहीं मारना, स्थावरों की मर्यादा करना। (२) स्थूल झूठ नहीं बोलना। (३) स्थूल चोरी नहीं करना। (४) परस्त्री का त्याग और घर की स्त्री की मर्यादा करना। (५) परिग्रह का प्रमाण करना। (६) चारों दिशा को मर्यादा करना, (७) २६ बोल की मर्यादा करना १५ कर्मदान का त्यागना। (८) बिना मतलब से चीजों को खराब न करना। (९) सामायिक करना। (१०) देशावगासिक प्रोषध करना। (११) प्रतिपूर्ण प्रोषध करना। (१२) १४ प्रकार का अचित्त—शुद्ध आहार देना। व्रत-नियम पूर्वक चलना।

प्रश्नावली—

राशि कितनी हैं ? उनके उदाहरण दो ? ७, ९,

१२, ३, ४वें व्रत के अर्थ क्या हैं? व्रत किसे कहते हैं?

२३ वें बोले पांच महाव्रत--

(१) अहिंसा-मन, वचन, काया से जीव-हिंसा नहीं करना, दूसरों से न कराना, न अनुमोदना करना।

(२) सत्य-मन, वचन, काया से झूठ न बोलना, न बोलने वाले की प्रशंसा करना।

(३) अचौर्य- चोरी न करना, न कराना, न करने वाले की अनुमोदना करना, मन, वचन, काया से।

(४) ब्रह्मचर्य-मैथुन सेवना नहीं, सेवाना, सेवने वाले की प्रशंसा नहीं करना, मन, वचन, काया से।

(५) परिग्रह प्रमाण--परिग्रह न रखाना, अन्य से रखना नहीं, रखने वाले की मन, वचन काया से प्रशंसा नहीं करना।

महाव्रत--हिंसादि कार्यों का सर्वथा त्यागना

प्रश्नावली ?

महाव्रत कितने हैं? उनके लक्षण कहो? ३, ५, २, व्रत का नाम कहो?

२४ वें बोले भांगा ४६--

अंक १-११ का भांगा हुए नौ एक करण एक योग से कहना। १ करूँ नहीं मन से, २ करूँ नहीं वचन से, ३ करूँ नहीं काय से, ४ कराऊँ नहीं मन से, ५ कराऊँ नहीं वचन से, ६ कराऊँ नहीं काय से ७ अनुमोदूं नहीं मन से, ८ वचन से नहीं अनु मोदूं ९ काय से नहीं अनुमोदूं।

अंक १-१२ एक करण दो योग से नौ भांगा हुए। १ मन, वचन से नहीं करूँ, २ मन, काया से नहीं करूँ, वचन, काया से नहीं करूँ, ४ मन, वचन से नहीं कराऊँ, ५ मन, काया से नहीं कराऊँ, ६ वचन काया से नहीं कराऊँ, ७ मन, वचन से नहीं अनुमोदूं, ८ मन, काया से नहीं अनुमोदूँ, ९ वचन, काया से नहीं अनुमोदूँ।

अंक-१-१३ का, एक करण तीन योग द्वारा तीन भांगा हुए। १ मन, वचन और काया से नहीं करूँ, २ मन, वचन, और काया से नहीं कराऊँ, ३ मन, वचन और काया से नहीं अनुमोदूँ

अंक २-२१ का, दो करण एक योग द्वारा भांगा ९ हुए-१ मन से नहीं करूँ न कराऊँ।

२ वचन से नहीं करूँ और न कराऊँ । ३ काय से न करूँ और न कराउँ । ४ मन से न करूँ और न अनुमोदू । ५ वचन से नहीं करूँ और न अनुमोदूँ । ६ वचन काय से न करूँ और न अनुमोदूँ । ७ मन से न करूँ और न अनुमोदूँ । ८ वचन से न कराऊँ और न अनुमोदूँ । ९ काय से न कराऊँ और न अनुमोदूँ

अंक २-२२ का, दो करण दो योग से ९ भाँगा हुए—१ मन, वचन से न करूँ और न कराऊँ । २ मन, काय से न करूँ और न कराऊँ ३ वचन काय से न करूँ और न कराऊँ । ४ मन वचन से न करूँ और न अनुमोदूँ । ५ मन, काय से न करूँ और न अनुमोदूँ । ६ वचन काय से न करूँ और न अनुमोदूँ । ७ मन, वचन से न कराऊँ और न अनुमोदूँ । मन, काय से न कराऊँ और न अनुमोदूँ । ९ वचन, काय से न कराऊँ और न अनुमोदूँ ।

अंक २-३ का—दो करण तीन योग से तीन भाँगा हुए—१ मन, वचन और काय से न करूँ और न कराऊँ, २ मन, वचन और काय से न करूँ और न अनुमोदूँ, ३ मन, वचन और काय से न कराऊँ और न अनुमोदूँ ।

अंक ३-१ का तीन करण एक योग से तीन भाँगा हुए। १ मन से न करूँ, न कराऊँ और न अनुमोदूँ। २ वचन से न करूँ न कराऊँ और न अनमोदूँ ३ काय से न करूँ, न कराऊँ और न अनुमोदूँ।

अंक ३-२ का, तीन करण दो योग से ३ भाँगा हुए। मन व वचन से न करूँ न कराऊँ और न अनुमोदूँ। २ मन, काय से न करूँ न कराऊँ और न अनुमोदूँ। ३ वचन और कया से न करूँ न कराऊँ और न अनुमोदूं।

अंक ३-३ का—तीन करण, ३ योग से १ भाँगा हुआ--मन, वचन और काय से न करूँ न कराऊँ और न अनुमोदूँ

विभाग रूप रचना को भाँगा कहते हैं।

इन भाँगों का तात्पर्य यह है कि "मैं सावद्य (सदोष व्यापार) योग को मन, वचन, काय से नहीं करूँगा, न अन्य से कराऊँगा और न करते हुए को अच्छा ही जानूँगा" अर्थात् सदोष व्यापार से दूर होने की प्रतिज्ञा की गई है।

प्रश्नावली--

इनको कंठस्थ करा अध्यापक महोदय स्वयं

प्रश्न करलें, इस का विषय समझाने का है। वही क्रम अंक डालकर दिखलाया है। प्रथम जो १-१ से मतलब १ करण और १ योग से है। मन, वचन और काय ये तीन योग सेहैं। स्वयं न करना (कृत) दूसरों से न कराना (कारित) अनुमोदना न करना ये तीन करण हैं।

२५ वे बोले चारित्र ५-१ सामायिक २ छेदोपस्थापना ३ परिहार विशुद्धि ४ सूक्ष्म सांपराय ५ यथाख्यात।

विशेषार्थ--१ सदोष व्यापार का त्यागकर निर्दोष व्यापार का सेवन करना। जिससे ज्ञान आदि गुणों की प्राप्ति हो वह सामायिक है।

२ किसी दोष आदि के लगाने से व्रत वगैरह को छोड़कर फिर धारण करना छेदोपस्थापनीय चारित्र कहते हैं।

३ सिद्धान्तानुसार चारित्र में विशेष शुद्धि करना परिहार विशुद्धि चारित्र है।

४ दशवें गुणास्थान में जो चारित्र होता है वह सूक्ष्म संपराय है।

५ क्रोध, मान, माया और लोभ के सर्वथा क्षय होने पर जो चारित्र होता है वह यथाख्यात है।

चारित्र—अशुभ क्रियाओं से दूर होना और शुभ में प्रवृत्ति करना।

प्रश्नावली –

चारित्र किसको कहते हैं? वे कितने हैं? उनका लक्षण कहो? ४, ५, ३ सरे चारित्र का स्वरूप कहो।

॥ इति समाप्तोऽयं ग्रन्थः ॥

जीतमल लूणिया द्वारा सस्ता-साहित्य प्रेस, अजमेर में मुद्रित।

निवेदन

गौरक्षा नाम की छोटीसी पुस्तक को आज पाठकों के समक्ष रखते हुए हमें अत्यन्त हर्ष होता है। हर्ष इसलिये नहीं होता कि मैं अपनी कृति को प्रसिद्ध करता हूं किन्तु इसलिये कि मुझ जैसे क्षुद्र सेवक को गौ सेवा करने का अपूर्व अवसर मिला। यह मैं अपने लिये बड़ा सौभाग्य समझता हूँ, गौ सेवा के लाभ के साथ जो जो बातें मुझे अपने अनुभव से आवश्यक मालूम हुई उनका भी इसमें समावेश कर दिया गया है। आशा है कि पाठक इससें अवश्य लाभ उठावेंगे। गौरक्षा का प्रश्न भारत के लिये महत्त्व-पूर्ण ही नहीं किन्तु वहुत ही आवश्यकीय एवं विचारणीय प्रश्न हैं। भारत के इतिहास से पता लगता है कि जब तक भारतवर्ष गौ धन से धनी था तब तक ही यहां सुख, समृद्धि, शान्ति का साम्राज्य था गौ धन के ह्रास से ही आज यहां इतनी अशान्ति दारिद्रता का साम्राज्य छाया हुआ है। इस पुस्तक को शुद्ध करने में प्रसिद्ध गौ हितैषी पं० गंगाप्रसादजी अग्नि होत्री, कविराज करणीदानजी साहब क्षेमपुर ठाकुर, भारत धर्म के सम्पादक पं० गोविन्द शास्त्रीजी दुगवेकर, पं० विद्वत्वर

चारित्र—अशुभ क्रियायों से दूर होना और शुभ में प्रवृत्ति करना।

प्रश्नावली –

चारित्र किसको कहते हैं? वे कितने हैं? उनका लक्षण कहो? ४, ५, ३ सरे चारित्र का स्वरूप कहो।

॥ इति समाप्तोऽयं ग्रन्थः ॥

जीतमल लूणिया द्वारा सस्ता-साहित्य प्रेस, अजमेर में मुद्रित।

निवेदन

गौरक्षा नाम की छोटीसी पुस्तक को आज पाठकों के समक्ष रखते हुए हमें अत्यन्त हर्ष होता है। हर्ष इसलिये नहीं होता कि मै अपनी कृति को प्रसिद्ध करता हूं किन्तु इसलिये कि मुझ जैसे क्षुद्र सेवक को गौ सेवा करने का अपूर्व अवसर मिला। यह मैं अपने लिये बड़ा सौभाग्य समझता हूँ, गौ सेवा के लाभ के साथ जो जो बातें मुझे अपने अनुभव से आवश्यक मालूम हुई उनका भी इसमें समावेश कर दिया गया है। आशा है कि पाठक इससे अवश्य लाभ उठावेंगे। गौरक्षा का प्रश्न भारत के लिये महत्त्व-पूर्ण ही नहीं किन्तु बहुत ही आवश्यकीय एवं विचारणीय प्रश्न हैं। भारत के इतिहास से पता लगता है कि जब तक भारतवर्ष गौ धन से धनी था तब तक ही यहां सुख, समृद्धि, शान्ति का साम्राज्य था गौ धन के ह्रास से ही आज यहा इतनी अशान्ति दारिद्रता का साम्राज्य छाया हुआ है। इस पुस्तक को शुद्ध करने में प्रसिद्ध गौ हितैषी प० गंगाप्रसादजी अग्नि होत्री, कविराज करणीदानजी साहब क्षेमपुर ठाकुर, भारत धर्म के सम्पादक पं० गोविन्द शास्त्रीजी दुगवेकर, प० विद्वत्वर

त्रिलोकनाथजी शर्मा इन सज्जनों ने इस पुस्तक को आद्योपान्त पढ़कर जो जो त्रुटियां निकाली हैं उनके लिये मैं इन सज्जनों का आभारी हूँ।

अन्त में पाठकों से मेरी यही प्रार्थना है कि गौरक्षा के प्रश्न को यथा शीघ्र अपने घर का प्रश्न बना लेवें। और तन, मन और धन द्वारा इसकी सेवा में उद्यत होजायें तभी कुछ भारत का कल्याण हो सकता है।

गौ सेवक—

रत्नलाल महता.

सम्मतियां

गो सेवत मंगल दिशि दस हूं

जिन गोभक्त सज्जनों के हृदय में गोवंश के लिये पूज्य भाव और भक्ति है वे इस छोटीसी पुस्तक में जब पढेंगे कि श्रीयुत् महता रत्नलालजी ने भगीरथ प्रयत्न कर ६२२६=)॥। एकत्र किये और उनकी सहायता से ३७० गौओं की प्राण रक्षा की तब वे लोग, गोभक्ति गौरवात्, निःसन्देह गद्गद होकर श्रीयुत् महताजी को बहुत धन्यवाद देंगे। और साथ ही उन उदार धनवान गो भक्तों को भी साधुवाद देवेंगे कि जिन्होंने श्री महताजी को इस काम में उदारता पूर्वक आर्थिक सहायता दी है।

भारतवर्ष कृषि प्रधान देश है। इस देश की कृषि की सफलता गोवंश पर ही अवलम्बित है। कृषि ही समूचे भारत के समस्त वाणिज्य व्यवसाय का मूलाधार है और कृषि का मूलाधार गोवंश है। तात्पर्य्य—गोवंश है तो कृषि है और कृषि है तो भारत का अस्तित्व और उत्कर्ष है। खेद है कि इस पारस्परिक घने सम्बन्ध की ओर वर्तमान दूरदर्शी भारत नेताओं का ध्यान बहुत कम जा रहा है। गो भक्त लोग

गो रक्षा की पुकार जब तब लगाया करते हैं, परन्तु उनका ध्यान गो रक्षा की उस परिपाटि की ओर तनिक भी नहीं जाता जिससे गो वंश की सच्ची रक्षा की जा सकती है और जिसकी सहायता से गो वंश समूचे भारत के लिये उपयोगी और लाभ दायक बनाया जा सकता है। ऋग्वेद काल के भारतवासी आर्यों ने गो रक्षा का अनुग्रह इसलिये किया है कि उचित परिपालन से गो वश प्रसन्न किया जाय। इस बात को वर्तमान गौ भक्त सर्वथा भूल गये हैं। वे केवल धर्म के नाम पर थोथी गोरक्षा को ही गोरक्षा मान कर उसके पीछे रुपया भी खर्च करते है और गो वंश के प्राणियों को भी खाते जाते हैं। यह प्रणाली ठीक नहीं है।

अब धनवान गो भक्तों को चाहिये कि वे अपने किसान भाइयों में उस सस्ते गो साहित्य का उचित उठ प्रचार किया करें कि जिसकी सहायता से उन्हें गो परिपालन के सब नियम मालूम होते रहें जिनके अनुसार गो परिपालन करने से गो वंश के प्राणियों के लिये चारा दाना की कभी कमी नहीं हो सकती। साथ ही वह इतना लाभदायक हो सकता है कि उसके पालन के लिये बहुत लोग इच्छुक और लालायित हो उठते हैं।

जिन धनवान गो भक्तों ने श्री महताजी को चुरू की गौओं की प्राण रक्षा करने में आर्थिक सहायता दी है वे और अनन्य गो भक्त, आशा है कि मेरे इस निवेदन पर ध्यान देकर भारत की भलाई करने वाली ठोस गो रक्षा का उपाय अब अवश्य करेंगे। ठोस गो रक्षा का एकमात्र उपाय गोपालन की शिक्षा का प्रचार ही है।

३-६-१६३१ ई } गंगाप्रसाद अग्निहोत्री,
जबलपुर.

(२)

संसार में एक भारतवर्ष ही ऐसा देश है जो केवल कृषि पर अवलम्बित है, और कृषि की मूल आधार स्वरूप गो जाति है। यद्यपि पाश्चात्यों द्वारा आविष्कृत यन्त्रों से पृथ्वी के कई भूभागों में कृषि कार्य चलाया जाता है परन्तु धरती को उर्वरा बनाये रखने के लिये जो उत्तम खाद होती है उसके लिये उन्हें भी गो वंश पर अवलम्बित रहना पड़ता है। यन्त्रों के साधन भारतवर्ष के लिये उपयुक्त नहीं है। कितने ही कृषि के विशेषज्ञों ने इस पर विचार किया और प्रयोग कर देखे, किन्तु वे इसी निर्णय पर अन्त मे पहुंचे कि भारत की कृषि गो जाति की सहायता विना सफल नही हो सकती। उन्होंने परीक्षा करके सिद्ध किया है कि भारत की सब कृषि भूमि छोटे २ टुकडों में बटी हुई होने से यन्त्रो द्वारा वह जोती बोई नही जा सकती। इसके अतिरिक्त विभिन्न गुण धर्मों की सम्मिश्रित भूमि सर्वत्र रहने से सबका समानरूप से जोतना बोना भी सम्भव नहीं है। गो जाति विना यहां का कृषि कार्य चल नहीं सकता। अन्ततः भारत की जीवनाधार कृषि के विचार से भी गो रक्षा करना अनिवार्य हो जाता है।

गो पालन से घी, दूध की प्रचुरता का होना और उनसे देशवासियों के सुख स्वास्थ्य का बढना भी स्वाभाविक है।

गोजाति का इस देश में कैसा हाल हो रहा है, और उससे देश की दुर्बलता कैसी, वढ रही है, इसको अंकों से पुस्तिका में लेखक ने सिद्ध किया है। धार्मिक विचार से भी गोरक्षा का महत्व कम नहीं है और दया मूलक धर्म में तो गो-रक्षा का प्रथम स्थान है, यह भी लेखक ने प्राचीन श्रावक आनन्दजी, कामदेवजी आदि के उदाहरणों से सिद्ध किया है। इसी को वे ऋद्धि-सिद्धि मानते थे। व्यवहारिक और व्यवसायिक दृष्टि से भी लेखक ने गो-रक्षा का महत्व भली भांति विशद कर दिखाया है। पुराणों में भी महर्षि याज्ञवल्क्यादि के गो संग्रह के उदाहरण पाये जाते हैं और न्यूनाधिक गौएँ रखने से नंद, उपनन्द आदि उपाधियां मिलती थीं। बुद्ध और मुसलमानों के शासनकाल तक यहां का गो वंश समृद्ध था। परन्तु देश के दुर्भाग्य से इधर ५० वर्षों से गौओं का इतना सत्यानाश हुआ है और नित उठ होता जाता है कि न 'भूतो न भवष्यति'। यदि इस समय भी हम न चेते, तो गो-जाति के साथ ही साथ हम भी नाम शेष होजावेंगे, क्योंकि हमारा आधार टूट जाने से हमारा अस्तित्व ही नहीं रह सकता।

उदयपुर के सुप्रसिद्ध गो हितैषी, स्वदेशप्रेमी और उत्साही कार्यकर्ता श्रीमान महता रत्नलालजी ने इस पुस्तिका को लिखकर देशवासियों की आंखें खोलने का प्रशंसनीय प्रयत्न

किया है। उन्होंने स्वयं अपने उदाहरण से लोगों को दिखा दिया है कि, गो-रक्षा किस प्रकार की जा सकती है? इस पुस्तिका में गो-रक्षा सम्बन्धी प्राय. सब विषय उन्होंने सन्निवेशित कर दिये है। हमें आशा है कि, इससे गो-प्रेमी सज्जनों को अवश्य लाभ पहुंचेगा और श्रीमान् महताजी के प्रयत्न सफल होंगे। ईश्वर उन्हें दीर्घायु करें।

गोविन्द शास्त्री—
दुगवेकर,
अगडर सेक्रेटरी, श्री भारत धर्म-महा मण्डल, काशी.
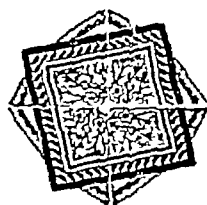
(३)

आर्या

एतत्पुस्तक माद्योपान्तं संवीक्षितं मया सम्यक् ।
गो-सेवाया भावः, फलं क्रमश्चेह सर्वतो भाति ॥ १ ॥

अनुष्टुप्

धर्म-प्राणस्वरूपो यः, कोठारीजी महोदयः ।
तत्समुद्योगतो मेद,-पाटेश्वर सहायतः ॥ २ ॥
गो-सङ्कट-प्रतीकारो,-नैष चित्राय धीमताम् ।
यद्दिलीपान्वयायस्य जन्म-सिद्धं गवावनम् ॥ ३ ॥

स्वागता

रत्नलाल महता-महनीयं, कर्म चित्रयति कस्य न चेतः ?
ब्रह्मचर्य-परिरक्षण-पूर्वं, यः परार्थकृतजीवनदानः ॥ ४ ॥

भावार्थ—मैने इस पुस्तक को आद्योपान्त अच्छी तरह देखा. गो सेवा का भाव, फल और तरीका इसमे अच्छे ढंग से बतलाये गये हैं। (वर्तमान समय में) धर्म के प्राणस्वरूप श्रीमान् कोठारीजी श्री बलवंतसिंहजी के उत्तम प्रबन्ध से, मेवाड़-पति श्री ५ मान् महाराणाजी साहब की सहायता पाकर, यदि

गायों का संकट (जैसा कि इस पुस्तक में प्रदर्शित किया जा चुका है) दूर हुआ तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं क्योंकि गायों का पालक (सम्राट) दिलीप की संतान का जन्म सिद्ध कर्त्तव्य है ।

उदयपुर जैन-शिक्षण-संस्था के संचालक इस पुस्तक के लेखक श्रीयुक्त रत्नलालजी महता का तो सराहनीय कर्त्तव्य मात्र, ऐसा कौन मनुष्य होगा जिसे आश्चर्य-चकित नहीं करता हो ? जिन्होंने ब्रह्मचर्य-रक्षापूर्वक अपना शेष जीवन ही पराये उपकार में लगा दिया है ।

पं० त्रिलोकनाथ मिश्र,

व्या सा. आचार्य, व्या का मी. त सा तीर्थ,
मी क. रत्न, महोपदेशक विद्याविभूषण ।
प्रधान संचालक, मिडिल इंगलिश स्कूल बलुआ,
गोसपुर, पो० प्रतापगंज, भागलपुर, मिथिला

❀ गाय ❀

दान्तों तले तृण दाब कर, हैं दीन गायें कह रहीं।
हम पशु तथा तुम हो मनुज, पर योग्य क्या तुमको यही?
हमने तुम्हें मां की तरह, है दूध पीने को दिया।
देकर कसाई को हमें, तुमने हमारा वध किया॥१॥

क्या वश हमारा है भला, हम दीन हैं बलहीन हैं।
मारो कि पालो कुछ करो तुम, हम सदैव अधीन हैं॥
प्रभु के यहां से भी कदाचित्, आज हम असहाय हैं।
इससे अधिक अब क्या कहें, हा-हम तुम्हारी गाय हैं॥२॥

बच्चे हमारे भूख से, रहते समक्ष अधीर हैं।
करके न उनका सोच कुछ, देती तुम्हें हम क्षीर हैं॥
चर कर विपिन में घास, फिर आती तुम्हारे पास हैं।
होकर बड़े वे वत्स भी, बनते तुम्हारे दास हैं॥३॥

जारी रहा यदि क्रम यहां, योंहीं हमारे नाश का।
तो अस्त समझो सूर्य्य, भारत भाग्य के आकाश का॥
जो तनिक हरियाली रही, वह भी न रहने पाएगी।
यह स्वर्ण भारत भूमि बस, मरघट मही बन जाएगी॥४॥

(भारत भारती)

मेरी थली प्रान्त की यात्रा.

महान् पवित्रात्मा, गच्छाधिपति पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज के दर्शनों के लिये मैं थली (मारवाड़) के ग्राम चुरू (बीकानेर जिले) गया था। पूज्य श्री सचमुच भारत के गौरव स्वरूप है। आप संसार के कल्याणकारी हैं। आपके उपदेशों का एक एक शब्द परमोत्तम ज्ञान-सार से भरा रहता है। सारे कष्टों को झेलते हुए आप थली में केवल ससार के कल्याण के लिये पधारे हैं। आपके उपदेशों के फल स्वरूप थली प्रान्त मे बहुतसी जीव-हिंसा होने से बची है और बहुत से दया धर्म विमुख मनुष्य दया प्रेमी होगये है। मैंने आगे इसी का विस्तृत विवरण किया है। आशा है कि पाठक गण इससे लाभ उठावेंगे।

चुरू में अकाल

चुरू शहर के दयालु धर्मवान् सज्जनों से मिलने पर ज्ञात हुआ कि यहा के एक महाजन ने जोकि दया धर्म की बिलकुल परवाह नहीं करते. चार बछडे कसाई को बेच दिये हैं। और उनको बीकानेर निवासी दयालु धर्मी भैरूदानजी गोलेछा ने

छुड़ा लिया है। इसकी खबर 'अर्जुन' इत्यादि अखबारों में भी निकल चुकी है। दूसरी बात जो मुझे उन्होंने बतलाई, वह यह थी कि यहा पर टीड्डीदल तथा अवर्षा के कारण अकाल का प्रकोप था। घास की कमी के कारण गायें भूखों मर रही थी, और उनका कोई रक्षक नहीं था। केवल दया धर्मी अग्रवाल, महेश्वरी, ब्राह्मणों और सुनारों वगैरह की ओर से पींजरापोल में गायों की कुछ रक्षा अवश्य होती थी किन्तु वहा पर अधिक गायें रखने तथा उनको घास डालने का सुभीता न था।

इसके अतिरिक्त उन्होंने मुझको यह भी बतलाया कि इस शहर में 'तेरह पन्थी' लक्षाधीक्ष बसते हैं परन्तु **कोठारी** सज्जनों के सिवा सब लोग गायों को घास खिलाने व रक्षा करने में पाप समझते हैं। यद्यपि गच्छाधिपति पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज साहिब यहा पर विराजते हैं और दयादान का उपदेश फरमाते हैं परन्तु उन लोगों को उनके धर्म गुरू उपदेश सुनने को नहीं आने देते। यदि ऐसे महात्मा के पास यहा के ओसवाल जाकर उपदेश सुनें तो वे भी गौरक्षा करने लग जांय। परन्तु वे लोग आते ही नहीं है। यहा की गायों को देखते है तो बहुतसी तो भूखों मरती है और बहुतसी राज्य क फाटक में बन्द हैं। हम इन जीवों का दुःख जाकर

श्री पूज्यजी से कहते हैं। यदि उनकी कृपा से गायें बच जावे तो हमारा बडा उपकार हो।

ऐसी बातें सुनकर मुझे बडा दुख हुआ। मैं गायों की चिन्ता में पड गया और सोचने लगा कि मुझको क्या करना चाहिये ?

पूज्य श्री की अमृत वाणी

आज भारतवर्ष गरीब हो गया है। पूर्व काल के शास्त्रों में लेख मिलता है कि उस जमाने में जिसके पास जितनी सुनैया (मोहरों) का व्यापार होता था वह अपने पास उतनी ही गायों रखता था। जिन दिनों में भारत के अन्दर गायों का ऐसा मान होता था उन दिनों में यह वैभवशाली बना था। इसमें कौनसी बड़ी बात है ? गाय ऋद्धि-सिद्धि देने वाली मानी गई हैं। जहा ऋद्धि-सिद्धि देने वाली वस्तु हो वहा वैभव की क्या कमी ? उपासक दशांग सूत्र में दश श्रावकों की गायों का वर्णन है।

भाइयों ! अपने शास्त्रों में गायों को बहुत उच्च स्थान दिया गया है। इतना ही नहीं, वेदों और पुराणों में भी इसी कार का उच्च स्थान दिया गया है।

अहिंसा-प्रधान भारतवर्ष में गायों की रक्षा नहीं होती देख कर हमें बड़ा आश्चर्य और दुःख होता है। यद्यपि यहां के सब धर्मों का मूल अहिंसा ही है। ब्राह्मण लोग गायत्री का जाप गौमुखी के अन्दर हाथ डालकर करते हैं परन्तु इसका मर्म समझने वाले कितने होंगे?

गौ ऋद्धि सिद्धि देनेवाली है, इसीसे वैदिक ऋषियों ने भी ऋग्वेद के अन्दर ईश्वर से प्रार्थना की हैः—

गौर्मे माता वृषभः पिता मे, दिवा शर्म जगती मे प्रतिष्ठा।

अर्थात् जिन सात्विक भोज्यान्नों और गव्य पदार्थों की सहायता से मैं संसार सुख भोग कर अपने को कल्याण का अधिकारी बनाता हूं—वे गायों और बैलों की सहायता से ही मिल सकते हैं। गौ मेरी मां है और बैल पिता। उन्हीं से मेरी प्रतिष्ठा हो—अर्थात् मुझको बलवान और मेधावी बनने के लिये वे मुझे प्रचुर संख्या में मिलते रहें। क्या श्री कृष्ण महाराज कोई भोले मनुष्य थे? "नहीं"। उन्होंने गौएँ चराई थीं या नहीं? "चराई" मित्रो! इसका मर्म कौन समझेगा! एक कवि ने तो यहां तक कहा है कि गो-वंश की रक्षा के लिये ही श्री कृष्णजी ने अवतार धारण किया था। हाथ में लकड़ी लेकर श्री कृष्ण का जंगल में जाना, इसमें कितना तत्त्व भरा हुआ है?

आज गायों की रक्षा के लिये पिंजरा पोलें खोली जाती हैं, परन्तु चन्दा उघा २ कर कहा तक काम चलेगा? गौ-रक्षा का जो उपाय श्री कृष्णजी ने बतलाया वही ऊंडी (मजबूत) जड़ वाला और ठोस उपाय है ऐसा सभी विद्वान् मानते हैं। आज आप पर अज्ञान का राज्य है इसीसे ऋद्धि-सिद्धि देने वाली भी आपको भार रूप मालूम हो रही है।

कई लोग तर्क करते हैं कि किसी जमाने में गौ ऋद्धि-सिद्धि देने वाली रही होगी, परन्तु आजकल के मंहगाई के जमाने में शायद ही हो। इसका उत्तर गौ रक्षा के रहस्य को जानने वाले बन्धु देते है और कहते हैं कि जो भाई गो-पालन की इच्छा रखते हैं, वे यदि शान्ति के साथ गौ की आमद खर्च का हिसाब भली भाति लगालें तो उन्हें मालूम हो जावेगा कि आज के जमाने में भी गौ ऋद्धि सिद्धि की दाता है या नहीं? सच बात तो यह है कि आजकल के लोग शास्त्र विहित गौ परिपालन की रीति भूल गये हे इसी कारण वे दुखी हो रहे हैं। वे हिसाब लगाते हुए कहते है कि आंज एक अच्छी गाय १००) में आती है। आप इन १००) को गाय के खाते में लिख लीजिये। गाय प्रायः १० महीने दूध दिया करती है। इस समय तक के लिये अधिक से अधिक खर्चा २००) गाय के नाम और लिख लीजिये। कुल ३००) गाय के खाते में गये।

यह तो हुआ खर्च का हिसाब। अब आमदनी का हिसाब लगाइये। दुधारू गाय जिसको कि आपने १००) मे खरीदी है अन्दाजन सुबह और शाम आठ सेर दूध देनेवाली होगी। अच्छा दूध बाजार में चार सेर मिलता है। इस हिसाब से दो रुपये रोज से दश महीने में आपको कितनी आमदनी हुई? जोड़िये। ६००) हुए। खर्च तो हुए ३००) और आमदनी हुई ६००)। बतलाइये ऐसा व्यापार कोई दूसरा है, जिसके कि एक के दो होते हैं। यहा किसी को यह शंका हो सकती कि आमदनी का हिसाब तो आज के गो रक्षक बतलाते हैं, पर यह बात तभी तक की हुई जब तक वह दूध देती रहे! बाद में हानि हो सकती है। इसका उत्तर वे 'नहीं' में देते है। और कहते हैं कि जो गौ १००) में खरीदी गई थी वह दूसरे साल पालक के घर में मुफ्त मे रही और उसके साथ उसका बछड़ा भी मुफ्त में रहा। गर्भावस्था में करीब दस महीने गाय दूध नहीं देती अतएव उस समय उसकी खुराक भी कम होती है। केवल १००) में पालक को बछड़ा सहित गौ १२५) का माल मिला। इसके अतिरिक्त कण्डे (छाणे) और गौ-मूत्र के लाभ अलग। इस प्रकार हिसाब लगाने से विना दूध देने वाली गौ भी खर्च के बदले ज्यादा लाभदायक ही है, हानिकारक नहीं।

सम्भव है इस कथन में कुछ अतिशयोक्ति हो, परन्तु यह तो कहा जा सकता है कि गौ थोडा खर्च लेकर ज्यादा लाभ देने वाली होती है। तात्पर्य्य "गोषु दत्तं न नश्यति" अर्थात् गौ के परिपालन में जो धन खर्च किया जाता है वह नष्ट नहीं होता।

गौ रक्षा के लिये दो शब्द

महानुभावो! आप दूर देशान्तरों से यहां चूरू शहर में पूज्य श्री के दर्शनार्थ पधारे हैं। पूज्य श्री का गोरक्षा के सम्बन्ध में उपदेश कितना हृदय-ग्राही है। थली प्रान्त में लक्ष्मी-पतियों के होते हुए भी हजारों गायें भूखों मर रही हैं। यह कितने आश्चर्य की बात है! घास न होने के कारण गायें सस्ती विकती है जिससे कसाई लोग ५) रुपये फी गाय महसूल देकर उन्हें ले जावेंगे। और फिर इन गायों का वध होगा।

मैंने गौवध के भीषण आंकडे ट्रेक्ट में पढे व संग्रह किये हैं जिनको आपकी सेवा में उपस्थित करता हूं आप इन आंकडे को पढ और सुनकर देश के भावी कल्याण के भावों से अथवा गरीबों की भलाई एवं गो-रक्षा के भावों से दरख्वास्त करें तो मैं इन

गायों के महसूल, छुडाने के लिये दयालु बीकानेर नरेश से प्रार्थना करू। और इन गायो को कष्ट से छुडाने के लिये गो-भक्त, ब्राह्मण प्रतिपालक, हिन्दूपति, मेवाड़नाथ के चरणों में उदयपुर खबर पहुचाऊं। मुझको आशा है कि श्रीमान् कोठारीजी साहिब बलवन्तसिंहजी जो गो-रक्षा के कट्टर हिमायती हैं, वे यहा की गायों का सब दुःख श्रीमानों के चरणारविन्दों मे मालूम कर अवश्य अच्छी सहायता प्रदान कराने की कोशिश करेंगे।

अब इन गायों की रक्षा के प्रश्न पर उदासीन रहने का समय नहीं है। यदि ऐसे महत्त्व पूर्ण कल्याणकारी मार्ग में आप अपना द्रव्य का सदुपयोग न करेंगे तो फिर आपको अपनी लक्ष्मी का सदुपयोग करने का कौनसा अवसर मिलेगा। इस समय गोरक्षा के लिये सहायता देने से आपको आत्मिक शान्ति मिलेगी। गोपालन में कितना लाभ है और गोपालन न होने में कितनी हानि है? इन सब बातों को आपकी सेवा में निवेदन करता हुआ आशा करता हूं कि आप अपने इस नूतन जीवन में गोवंश की जितनी सेवा कर सकें उतनी उदारता पूर्वक सहर्ष करें।

भारतवर्ष जैसे कृषि-प्रधान देश में यह कम चिन्ता की बात नहीं है कि यहां केवल चौदह करोड़ पचास लाख गायें

बैल तथा दूध देने वाले पशु हैं। इनमें से भी रक्षा का पूर्ण प्रबंध न होने के कारण प्रतिवर्ष एक करोड़ गायों का वध होता है। हमारा कथन है कि भारतवर्ष में थोडी संख्या में ऐसे हिन्दू मिलेंगे कि जो गोवध के पाप से मुक्त हों। क्योंकि कपडे के कारण मिलों में चर्बी, फौज के लिये सूखा मांस, चमडे वगैरह व्यापार में गो-हत्या के पाप के भागी हो ही जाते हैं। जिसका पश्चाताप अनेक प्रकार धर्म ध्यान, तपश्चर्या करके करते हैं तथापि गौ-श्राप के भागी हैं क्योंकि इसका पूरा विचार देश में न होने के कारण हजारों गायें प्रति दिन मरती हुई तो आपने सुनी हैं। परन्तु इस समय चूरू में गायों की रक्षा करने के लिये विचार होना नितान्त आवश्यक है।

अब मैं गौ-रक्षा होने में लाभ, व न होने में जो हानिया होरहीं है वह, तथा गौ-वध के आकड़े सुना कर अपना भाषण समाप्त करूंगा। तहसीलदार साहिब व कोठारीजी साहिब चूरू ने हालही में पूज्य श्री से दया धर्म में श्रद्धा रखने का उपदेश लिया है। अतः आशा है कि वे सज्जन भी इस बैठी हुई सभा में विचार कर इन गौओं का रक्षा का प्रबंध सोचेंगे, और इनकी रक्षा होने के लाभ तथा रक्षा न होने की हानियों को अपने विवेक रूपी तराजू में तोलेंगे, तो सब हाल भली भाँति विदित हो जावेगा।

कुछ अमृत झड़ियाँ

१. भारतवर्ष एक कृषी प्रधान देश है। गाय ही इस देश की माता है। उसीका दूध-घी हम खाते हैं और उसके दूध से तरह २ की मिठाइयाँ और पकवान बनाते हैं। यदि गाय न हो तो हमको उत्तमोत्तम पदार्थ खाने को ही न मिले।

२. गाय के बच्चे बैलों ही से खेती होती है। भारत जैसे गर्म देश में घोड़ों तथा अन्य पशुओं से खेती नहीं हो सकती। उसी बैल को गाडी में जोतकर हम सवारी भी करते हैं। यदि हमारे देश में गायों की रक्षा न की गई तो हमारा खाना-पीना, खेती-बारी सब चौपट हो जायगी। गाय ही एक ऐसा जीव है कि जिसका मल मूत्र तक भी अत्यन्त लाभदायक माना जाता है। बड़े २ वैद्यों, डाक्टरों और हकीमों से दरियाफ्त करने पर मालूम हो सकता है कि गो-मूत्र और गोबर में कितने गुण विद्यमान हैं, यह आजमाई हुई बात हैं कि कैसी ही तिल्ली या कैसा ही पुराना बुखार क्यों न हो, बराबर जल के साथ ताजा गो-मूत्र का पान करने से निःसन्देह मिट जाता है।

३. गायों की रक्षा करना सचमुच अपनी ही रक्षा करना

है। साथ ही एक यह भी कारण है कि दया ही से इस लोक में सुख तथा शांति और परलोक में परमानंद प्राप्त होता है।

४. हम जिसके ऋणी हों, उसका ऋण चुकाना हमारा परम कर्तव्य है। गाय के हम बहुत अधिक ऋणी हैं और यह ऋण केवल उसकी रक्षा करके ही चुकाया जा सकता है। यदि हम ऐसा नहीं कर सकते तो हमारा जैसा कृतघ्न दूसरा नहीं होगा।

५. गाय और माँ बराबर हैं; इसी से इसको गो-माता कहते हैं। हमारा शरीर उसी के दूध, घी तथा उसके पुत्र-बैल द्वारा उत्पन्न किये हुए अन्न से पुष्ट होता एवं पलता है।

६. वे मनुष्य राक्षस हैं, जो गो-रक्षा के विरुद्ध प्रचार करते हैं, जिनके मत के अनुसार गाय की रक्षा के लिये कुछ करना, रुपया देना इत्यादि पाप है।

७. ऐसा उपयोगी पशु और कौन होगा जो मरने पर भी हमारे क़ाम आता है।

कृषि-गोरक्षा

गोरक्षां कृषि वाणिज्यं कुर्य्यात् वैश्यो यथा विधि।

भारत कृषिप्रधान देश है। यहा फी सैंकडा ८० लोग कृषि पर जीविका चलाते हैं। कृषि का ज्ञान जितना बढ़ेगा उतना ही इस देश का कल्याण होगा। कृषि के लिये सब से अधिक गौ-रक्षा का प्रयोजन होने से इस लेख में कृषि पर विचार न कर केवल गौ-रक्षा के लिये 'काऊ प्रोटेक्शन लीग' ने जो उपाय स्थिर किये हैं उन्हींका उल्लेख कर दिया जाता है। आशा है कि सर्व साधारण इन नीचे लिखे हुए उपायों से लाभ उठावेंगे।

१. अपने अपने घर कम से कम एक एक गौ का पालन अवश्य कीजिये, और दूसरों से कराईये।

२. अपने गांव में ऐसा प्रबन्ध कीजिये कि कोई किसी बेजान पहचान आदमी के हाथ गौ न बेचें और मेले या हाट में बिकने के लिये न भेजें बहुत से गाव वालों को यह पता नहीं रहता कि जो गाय या बैल को बेचते हैं उनकी क्या दुर्गति होती है। किस तरह कसाई के हाथ पड़कर उनका प्राणान्त होता है। स्वयं कसाई ही माथे मे चन्दन लगा, गले में फूलों

की माला डाल या और वेष बनाकर गाय बैल खरीद कर ले जाते हैं। इसलिये गांववालों को चाहिये कि गाय बैल बेचें ही नहीं।

३. जहां गौओं के हाट मेले लगते हों वहां से वे हमेशा के लिये उठवा दीजिये।

४. आप जिस स्थान में रहते हैं उस स्थान के सब लोगों को कहिये कि वे गो-वध बन्द कराने के लिये म्युनिसिपैलिटी कौंसिल और सरकार के पास प्रार्थनापत्र भेजें। जैसे सी० पी० गवर्नमेन्ट ने अपने कसाईखानों के सम्बन्ध में ता० ३१ मई सन् १९२२ ई० को कई एक नियम बनाये हैं जिनमें से छट्ठे नियम के अनुसार (१) सब प्रकार की गायें नहीं मारी जासकेंगी (२) जो भेड़, बकरी तथा भैंस गर्भवती होगी या दूध देती होगी वह भी न मारी जासकेगी तथा (३) ९ वर्ष से कम उम्र का बैल, भैंसा और भैंस भी नहीं मारी जा सकेगी, वैसे ही चेष्टा करके अन्य प्रान्तीय सरकारों से भी नियम बनवावें।

५. गोचर भूमि की वृद्धि के लिये सरकार, कौंसिल, म्युनिसिपैलिटी, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड तथा राजा-महाराजाओं और

जमींदारों से प्रार्थना कीजिये। उन लोगों से यह भी आग्रह कीजिये कि वे जनता में सस्ते गो साहित्य का प्रचार करें।

६. डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, म्युनिसिपैलिटी, राजा, महाराजा, जमींदार या जो कोई हों उनसे कहकर अच्छे अच्छे साड और गौ चिकित्सक रखाने की कोशिश कीजिये।

७. दरिद्रता से पीड़ित होकर बहुत से लोग गौए बेच देते हैं उनके लिये गौशाला बना लीजिये।

८. देशी रजवाड़ों से अपील करके अपने यहा की गौओं का बाहर भेजा जाना एकदम बन्द करवादे।

९. हिसार, रोहतक, मुलतान और कंकरोज आदि पजाब के स्थानों में उपदेशक भेजकर वहा गौओं का बेचा जाना बंद करादें क्योंकि यहीं से ज्यादातर गौएं उन स्थानों में जाती हैं जहा फूंके से उनका दूध निकाला जाता है और छः महीने में वे कसाई खाने में भेज दीजाती हैं।

१०. सरकारी कसाईखानों में गौ-वध बहुत बडी संख्या में किया जाता है इसलिये इन कसाईखानों को उठवा देने के लिये सरकार पर पूरा दबाव डालें तथा म्युनिसिपैलिटी डिस्ट्रिक्ट बोर्ड

वएं कौंसिलो और समाचार पत्रों में इसके लिये आन्दोलन करें। आदोलकों को आर्थिक सहायता देवें।

११. इस काम में हिन्दू मुसलमान इत्यादि कोई भेदभाव न रक्खें, सब मिलकर काम करें क्योंकि गो-वंश नाश से भारत का ही नाश है।

१२. इन सब बातों का प्रचार अपने स्थान में करें। और दूसरे स्थानों में कराने के लिये उपदेशक भेजें।

१३. अपने अपने स्थान में इन कामों के लिये एक एक गोरक्षिणी सभा स्थापित करें और उसकी सूचना हमें भी देदें।

ऊपर जिस सस्ते गौ साहित्य का उल्लेख किया है वह 'श्रीयुत् पंडित गंगाप्रसादजी अग्निहोत्री जबलपुर मध्यप्रदेश' से मिलता है। लिखे पढ़े किसानों में उसका प्रचार करने से गो-वंश का परिपालन ऐसे ढंग से किया जा सकता है कि जिससे गो-वंश की उपयोगिता बढ़ती है। गो-वंश की उपयोगिता को बढ़ाना ही गो-वध रोकने का राजमार्ग है।

गो-धन की रक्षा करो

गो ब्राह्मण परिभाने परित्रातं जगद्भवेत्

भगवान् महावीर स्वामी ने अहिंसा धर्म का झण्डा इस भारत भूमि में फहराया था। उस समय इस देश में लाखों व्रतधारी श्रावक व करोडों उनके अनुयायी मनुष्य थे। और उस समय यह देव दुर्लभ भूमि घी दूध का उद्भव-स्थान बनी हुई थी। तत्कालीन भारत में गायें कितनी थीं इसका अनुमान नीचे की संक्षिप्त तालिका से सहज ही हो सकता है जो कि उपासक दशाग सूत्र से उद्धृत की जाती है।

क्रमाङ्क	नाम	गौ-सख्या
१	श्रावक आनन्दजी	४००००
२	श्रावक कामदेवजी	६००००
३	श्रावक चुल्लनिपिताजी	८००००
४	श्रावक सुरादेवजी	६००००
५	श्रावक चूलशतकजी	६००००
६	श्रावक कुण्डकोलिकजी	६००००
७	श्रावक सद्दालपुत्रजी	१००००

क्रमाङ्क	नाम	गौ-संख्या
८	श्रावक महाशतकजी	८००००
९	श्रावक नन्दिनीपिताजी	४००००
१०	श्रावक सालिहीपिताजी	४००००

यहा कहने की आवश्यकता नहीं कि जब दश श्रावको के पास ५३०००० गायें थीं तो भारत के अन्य लाखों करोड़ों मनुष्यों के पास कितनी गायें होंगी ? भगवान् महावीर के निर्वाण काल के पीछे गो-रक्षा के प्रति मनुष्यों की ज्यों २ उदासीनता होती गई त्यों २ दूध दही और घृत आदि पौष्टिक गव्य पदार्थों की दिन २ कमी होती गई और होती जाती है। साथ ही सात्विक भोज्यान्नों के पौष्टिक तत्वों की कमी होती गई।

आर्य्य-कला का वहिष्कार करके भारतियों ने आसुरी-कला को अपनाया, और द्वीपान्तर के अपवित्र चटकीले वस्त्रों को पसन्द किया, और कल्प की चर्बी के लिये भारतीय गायों को कसाई लोग खरीद-खरीद कर मिलों के हवाले करने लगे तब ही से दूध, दही और घृत के फाके और लाले पड़ने लगे। और लोग चर्बी मिला हुआ घृत खाने लगे हैं। उपासक दशाग सूत्र में भगवान महावीर ने दश श्रावकों के गो-धन का वर्णन किया उसके मुकाबले में भारत की तेंतीस करोड़ जनता में आज

एकभी ऐसा मनुष्य नहीं है कि जिसके पास इतनी गौएँ हों। गौ-धन की वृद्धि करना तो दूर रहा परन्तु गौओं को कसाईखाने में बेचने से भी नहीं शरमाते। हाय स्वार्थपरते! तुझ पर वज्र पात हो! भारत के दयालु सज्जनों! अब तो आप विलासिता को छोड़िये, और भारत की प्राण स्वरूपा गो माता, जो रोज लाखों की संख्या मे कसाइयों की छुरी के घाट उतारी जाती है, उनका उद्धार कीजिये। उनके वध होने का, दुधारू पशुओं का, चारा चरनेवाले पशुओं का नकशा व अन्य देशों में गोचर भूमि डेयरी आदि आवश्यक उपयोगिता पाठकों की जानकारी के लिये सग्रह करके देता हू। भारतवर्ष कृषि प्रधान होने से, तथा भारतवासियों के शरीर पुष्टि के साधन घृत, दूध, दही आदि गव्य पदार्थ ही होने के कारण अत्यन्त आवश्यक है कि गोरक्षा, गोपालन और गो पोषण आदि विषयों पर अधिक ध्यान दिया जावे, और घर घर में गाय रखी जावे और उनका उचित रूप से परिपालन किया जाय। अभी गो पालन बहुत बुरे ढंग से किया जाता है। इसीलिये गोवंश के प्राणी बहुत बडी संख्या में पतित और विनाश हो जाते हैं। यह धर्म कार्य का प्रधान स्वरूप हो जावेगा तो न गायें भूखों मरेंगी और न गायें कटेंगी। पौष्टिक चारा दाना ही गोरक्षा का प्रधान साधन है।

कालचक्र के परिवर्तन से हम अपनी असावधानता, और दुर्बलता के कारण गौरक्षा का वास्तविक कर्तव्य भूल गये। इस विषय पर ध्यान देने में श्री गोपाल का उपदेश हम भूल गये। जिसका परिणाम यह हुआ कि हम लोग दुर्बल, आलसी और वीर्य हीन हो गये। इतना ही नहीं, गौ का दूध शुद्ध रुप और पर्य्याप्त मात्रा में प्रति दिन नहीं मिलने से रोग, शोक ने हमें घेर लिया जिससे हम लोग अल्पायु होने लग गये। यह प्रत्यक्ष है कि दिनों दिन हमारी सन्तान क्षीण, शक्ति और वीर्य हीन होती जाती है। और दूध बिना हमारा भविष्य दुखदाई दिखलाई दे रहा है। ऐसी नाजुक अवस्था में हम तन, मन और धन गौ सेवा में अर्पण कर देश सेवा मे गो रक्षा को पहिला स्थान देकर उद्यमी बनें।

भगवान महावीर के श्रावकों ने जैसा लक्ष्य गो सेवा का रक्खा और सारे भूमण्डल में अहिंसा की ध्वनि फैलाई वैसे हम भी गौ रक्षा तथा जीव रक्षा के परोपकारी काम करेंगे तो अत्यन्त लाभ होगा। कहना नहीं होगा कि गो वंश की तथा विद्वानों की रक्षा से ही संसार भर की रक्षा होती है।

गो-वंश के ह्रास के कारण

भारतवर्ष में गौ-जाति की अवनति का कारण देशांतरों में बहुत अधिक चमडे की रफतनी है। सन् १९०३-४ ई० में ३२,००,००,००० रुपयों का चमडा भारतवर्ष से बाहिर गया। इतिहासों से पता लगता है कि सिकन्दर आजम जब भारत वर्ष से स्वदेश लौटा था तब वह अपने साथ २००००० गायें भारतवर्ष से ग्रीक लेगया था। इससे यह बात भली भाति सिद्ध होती है कि उस समय और उससे पहले भारतवर्ष की भूमि गौजाति से परिपूर्ण थी।

आईने-अकबरी से जाना जाता है कि अकबर के समय में २॥) रु० मन घी और ॥=) मन दूध बिकता था। अब यहां एक सेर घी का दाम २॥) रुपया है। यदि यही दशा रही तो भारतवर्ष में कुछ दिन बाद दूध और घी का मिलना कठिन हो जायगा। अब अमेरिका, स्वीटजरलेण्ड, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड से जमा हुआ दूध तथा मक्खन भारतवर्ष में आता है। यही जमा हुआ दूध पीकर आजकल भारतवर्ष में धनवानों के बच्चे पलते हैं। घी के अभाव के कारण अच्छे कार्य प्रायः लोप हो गये हैं। घृत के बदले घृणित पशुओं की चर्बी काम में

लाई जाती है। वह विष तुल्य है, गो-जाति के ह्रास के कारणों में से कुछ निम्नलिखित हैं:—

(१) गोवध और गो परिपालन का अज्ञान।

(२) गोचर भूमि की कमी और उसकी खेती का अज्ञान।

(३) उत्कृष्ट साडों की और उनके परिपालन की उपेक्षा।

(४) चमड़े का व्यवसाय बढ़ जाना।

(५) भारत में गोपालन और गौचिकित्सा के लिये विद्यालयों का अभाव।

(६) गौचिकित्सालय तथा औषधालय का अभाव।

(७) गौ चिकित्सको का अभाव।

(८) गोपालन शिक्षा तथा गौचिकित्सा के सम्बन्धी पुस्तकों या ग्रन्थों का अभाव।

(९) दूध के लालच से अधिक दूध निकालना और बच्चों के लिये दूध न छोड़ना, जिससे वे मर जाँय अथवा बच्चों को दूध न देने पावें। इससे बेच डालना।

(१०) कहीं कहीं फूका देकर दूध निकालना, जिससे गायों की गर्भधारणशक्ति नष्ट हो जाती है।

(११) गाय के खाद्यपदार्थों का अभाव।

(१२) शिक्षित लोगों की गोपालन से घृणा और अशिक्षितों द्वारा गौपालन होना।

समस्त ग्रेट ब्रिटेन में ७,७५,००,००० एकड़ भूमि में से ४६,००,००० एकड़ भूमि पर नाना प्रकार की फसल, घास और कृषि होती है। उसमें से पहाड़ तथा बस्ती को छोड़ कर २,३०,००,००० एकड़ भूमि स्थायी गोचर और घास की भूमि है। इङ्गलैण्ड की भूमि अधिक मूल्यवान है तिस पर भी आधी भूमि स्थायी गौचर भूमि है। परन्तु हमारे भारतवर्ष में स्थायी गौचर भूमि है ही नहीं। यही गोचर भूमि का न होना गौजाति की विशेष हानि का कारण है।

गाय से जो नर बच्चा पैदा होता है, वह बड़ा होने पर बैल हो जाता है। उस बैल से खेती का काम लिया जाता है। यदि भारतवर्ष में बैल न हो तो अकेली खेती क्या सैंकड़ों तरह के काम कठिन हो जायेंगे। बैलों के द्वारा माल एक स्थान से दूसरे स्थान में पहुंचाया जाता है, हल

जुतवाया और कोल्हू चलाया जाता है। जहां रेल नहीं है, वहां सवारी का काम भी लिया जाता है।

भारतवर्ष में पूर्वकाल में एक-एक गाय का २० सेर से अधिक दूध होता था। आईन-ए-अकबरी से भी यही बात सिद्ध होती है कि अकबर के समय में अर्थात आज से प्रायः ३२५ वर्ष पहले एक-एक गाय के आधमन और इससे अधिक दूध होता था। विलायती गायों के इस समय भी २५ सेर से ३० सेर तक दूध होता है।

पहले दूध अधिक और अब कम होने का कारण क्या है? इसका उत्तर केवल यही है कि पहले गवायुर्वेद के अनुसार गो-पालन ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य स्वयं करते थे, परन्तु अब इसका भार प्रायः निरक्षर और अज्ञान शूद्रों के हाथ में है, जिससे गौ जाति की यह हीन दशा होगई है।

दूध एक ऐसी वस्तु है जिसके बिना मनुष्य का जीवन धारण करना कठिन है, क्योंकि जिस समय बच्चा उत्पन्न होता है, उसी समय (रुई द्वारा) उसे दूध पिलाया जाता है। बिना दूध और गाय के संसार में कोई देश जीवित नहीं रह सकता है गाय का दूध ही एक ऐसी वस्तु है जिसको

खा-पीकर मनुष्य और कोई वस्तु न खाकर भी संसार यात्रा निर्वाह कर सकता है।

इसका कारण यह है कि मनुष्य की जीवनी शक्ति को दृढ़ बनाने तथा मनुष्य के शरीर को पुष्ट करने के लिए माड़ (लसीला तरल पदार्थ) मीठा, नमक और घृत (चिकना तरल पदार्थ) आदि जिन पदार्थों की आवश्यकता होती है, वे सभी गाय के दूध में एक ही साथ संमिश्रित पाये जाते हैं। साथ ही विशुद्ध दूध का पृथक्करण करके देखा गया है, कि उसमें कोई भी ऐसा पदार्थ नहीं है जिससे मनुष्य की कुछ भी हानि हो।

गाय के दूध के सिवाय और किसी भी पदार्थ में ये चारों पदार्थ ऐसे उपयुक्त परिमाण में नहीं पाये जाते। इसीसे मनुष्य और कोई चीज न खाकर यदि केवल दूध पीये, तो केवल जीवन ही नहीं धारण कर सकता, बल्कि हृष्ट-पुष्ट भी रह सकता है।

दुग्धशाला (डेयरी) की आवश्यक्ता

भारतवर्ष में दूध, घी और मक्खन इत्यादि की जो दशा इस समय हो रही है उससे यह सन्देह होता है कि कुछ दिन पीछे दूध और घृत का अभाव होना सम्भव है। दूध के बिना जीवन यात्रा कठिन ही नहीं वरन् असम्भव है। दूध के अभाव के कारण ही धनवानों के बालकों को जमा हुआ दूध (जो विदेशों से आता है) दिया जाता है और उसीसे उनका पालन होता है। जमाया हुआ और अधिक दिनों का बासा दूध कितना हानिकारक हो सकता है, यह सभी लोग भली भांति समझ सकते हैं। ताजे दूध के समान व किसी दूसरी वस्तु अथवा खाद्य पदार्थ की तुलना नहीं हो सकती। जब ऐसी दशा है, तब भारतवर्ष में ऐसी चेष्टा क्यों नहीं की जाय, जिससे सर्व साधारण को सुभीते से शुद्ध दूध, दही, मक्खन और घृत इत्यादि मिल सकें? इसका कारण यही प्रतीत होता है कि अब भारतवासी तथा सामान्य मनुष्यों को गाय के परिपालन में सामर्थ्य नहीं हैं। इसका सुगम उपाय यही हो सकता है कि जो लोग सामर्थ्य रखते हैं, वे अकेले

नहीं तो कुछ लोग मिलकर समवाय समिति (Co-operative society) स्थापन करके भारतवर्ष भर में डेयरियाँ खोलें, जिससे अपने लाभ के साथ-साथ जन साधारण को भी लाभ और सुभीता हो।

डेयरी उस स्थान को कहते हैं, जहाँ घी, दूध इत्यादि शुद्धतापूर्वक अधिक मात्रा मे पैदा किया जाता है। डेयरी-फारमिङ्ग (Dairy farming) से अभिप्राय है, गाय अथवा भैंस रखकर दूध, घी, मक्खन इत्यादि का उत्पादन और विक्रय करना। भारतवर्ष, डेयरी करने के लिये दूसरे देशों की अपेक्षा, बहुत ही उत्तम है, क्योंकि यहां भूमि, चारा मजदूरी और दूध देनेवाले पशु अर्थात् गाय, भैंस आदि दूसरे देशों की अपेक्षा सस्ते हैं। इसके सिवाय यहां की गाय का दूध यूरोप, अमेरिका, आष्ट्रेलिया इत्यादि देशों की गायों से अच्छा होता है। भारतवर्ष मे दूध, और घी का दाम भी दूसरे देशों की अपेक्षा अधिक मिलता है। दूसरे देशों की गाय के २५ सेर से ४० सेर तक दूध में एक सेर मक्खन निकलता है परन्तु भारतवर्प की गाय के १२ सेर से २४ सेर तक दूध में १ सेर मक्खन निकलता है। तिसपर भी इङ्गलैंड में १ सेर मक्खन का दाम १॥) से १॥।) तक है और अमेरिका में ॥।) से १।) तक है। परन्तु उसी १ सेर

मक्खन का दाम भारतवर्ष के बड़े शहरों में २) से २॥) तक है। यूरोप में दूध का भाव -)॥ से =)॥ सेर तक और अमेरिका में -)। से =) तक है, पर भारतवर्ष में =) से ||=) तक का भाव बड़े नगरों में है। छोटे छोटे गाँवों में, जहां दूध के ग्राहक कम हैं वहां -)। से =) तक का भाव है। यहां घी अथवा मक्खन बनाने में यूरोप और अमेरिका की अपेक्षा व्यय बहुत कम पड़ता है जो कि ऊपर दिखलाया गया है, दाम अधिक आता है। इसी कारण यहां डेयरी खोलने से दूसरे देशों की अपेक्षा लाभ भी अधिक हो सकता है। परन्तु यह लाभ तभी हो सकता है जब यह काम बड़े प्रमाण में वैज्ञानिक ढङ्ग पर चलाया जायगा। जिन भारतीय धनवानों ने कपड़ों की मिलों में रुपया लगा रक्खा है उन्हें चाहिये कि वे लोग अपनी मिलों को लाभदायक और चिरञ्जीवी बनाने के लिये दुग्धालयों के व्यवसाय में भी धन लगा कर उसका संचालन करें। और उस व्यवसाय द्वारा भारत को एकबार पुनः गवाढ्य और धनाढ्य बनावें।

अन्य देशों की गोचरभूमि

डेनमार्क में कृषि-सम्बन्धी व्यवसायों में सब से अधिक लाभदायक गाय ही समझी जाती है।

डेनमार्क में पहली डेयरी सन् १८८२ ई० में खुली थी। और सन् १६१२ ई० में ११६० डेयरियां इस प्रकार की हो गयी थीं कि जिनमें १२८२२५४ गायें थीं।

डेनमार्क में कृषि सम्बन्धी कारबार और बाहिरी व्यवसाय और डेयरी के काम में सब से अधिक लाभ है। कुलमाल जो सन् १६१२ ई० में डेनमार्क में बिका उसका दाम ३७२१००००० क्रौंस था। जिसमें ६७ सैंकड़ा डेयरी का माल था। मक्खन क्रीम और दूध जो डेनमार्क से बाहर गया उसका मूल्य ११८८८००० पौंड अर्थात् १७,८३,२०,०००) होता है, अर्थात् ४१ सैंकड़ा कुल माल का होता है जो देश से बाहर गया।

डेनमार्क में भैंस नहीं है और केवल गाय का दूध मक्खन बनाने के काम में आता है। डेनमार्क में दूध देने वाले पशुओं का परिपालन शास्त्रविहित रीति से किया

जाता है। और दूध ही के कारवार ने डेनमार्क की कृषि को लाभदायक बनाया है। १६ वीं शताब्दी तक डेनमार्क के किसान गेहूं की कृषि में लगे हुए थे और पशुओं की ओर उनका जरा भी ध्यान नहीं था। इसका परिणाम यह हुआ कि फसल कम होने लगी। वही फसल अच्छी होती थी, जहां घॉस दी जाती थी (Paras 93 and 94 of the report of the Irish Deputation of 1903) किसानों का मुख्य उद्देश्य डेनमार्क में दूध और दूध से बनी हुई वस्तुओं का तैयार करना है। यहां तक कि दूसरी कृषि सम्बन्धी वस्तुओं से मक्खन बनाया जाता है।

ग्रेट-ब्रिटेन और आयरलैण्ड की कुल भूमि ७,७५,००,००० एकड़ है जिसमें ४,६०,००,००० एकड़ में फसल होती, खाली रहती या घास होती है। २३,००० एकड़ भूमि गोचर-भूमि के लिये छोड़दी गई है। (*Vide* cattle, Sheep Deer, Page 13 Macdonald)।

जर्मनी की सन् १८६३ और १६०० ई० की रिपोर्टों से जाना जाता है कि उस देश में ६१ सैंकड़ा भूमि उर्वरा और ६ सैंकड़ा ऊसर है, ६,५१,६६,५३० एकड़ भूमि पर खेती हुई थी। २१,३६,७०० एकड़ भूमि पर घास और गोचर भूमि थी।

यूनाइटेड-स्टेस् अमेरिका के केवल स्टेकसास प्रान्त में ४०,००,००० गायें और उनके बच्चे हैं, जिनके लिये ४०,६६० एकड़ भूमि पर भिन्न भिन्न स्थानों में डेयरी फार्म स्थापित हैं। (*Vide* Macdonald cattle sheep Deer, Pages 194 and 195)।

अमेरिका, आष्ट्रेलिया, हालैण्ड, न्यूर्जीलैण्ड इत्यादि देशों में गोचरभूमि की व्यवस्था ग्रेट-ब्रिटेन के अनुसार ही है।

न्यूजीलैण्ड में कुल भूमि ६,७०,४०,६४० एकड है, जिसमें २,८०,००,००० एकड़ पर कृषि होती है। और २,७२,००,००० एकड गोचर भूमि है। (*Vide* standard cyclopedea of Modern Agirculture, Page—88 Volume—9)।

उपर्युक्त विवरण से विदित होता है कि प्रायः सभी देशों में गोचरभूमि का खास प्रबंध है, परन्तु हमारे भारत-वर्ष में गोचर भूमि का पूरा अभाव है। इसी कारण से गोजाति तथा कृषि की दशा इस देश में शोचनीय हो रही है। यदि इस देश में गोचर भूमि का प्रबंध होजाय और गो पालन की ओर लोग पूर्ववत ध्यान देने लगें तो भारत-वर्ष फिर पहिले की सी उन्नत अवस्था पर पहुंच सकता है।

उक्त देशों में गोचर भूमि (Pasture land) उसी को कहते हैं जिसमें पशुओं के लिये चारे की खेती की जाती है अर्थात् वे खेत प्रति वर्ष जोते जाते हैं, उन्हें खाद दिया जाता है उनमें चारे के बीज बोये जाते हैं, तथा सींचे भी जाते है, उन खेतों में खड़ी फसलें पशुओं को चराई जाती, और उनके पक जाने पर वे सूखाकर रखली जाती हैं। क्योंकि वे बहुत पौष्टिक, सुस्वादु और रसीली होती हैं।

गो-रक्षा की आवश्यकता और उपयोगिता

गाय पालन से प्रथम मनुष्य के स्वास्थ्य को बढाने वाला ताजा और विशुद्ध दूध प्राप्त होता है। दूध से ही मक्खन तथा घी बनाया जाता है। जो लोग दूध नहीं पीते, वे मक्खन या घी का व्यवहार अवश्य करते हैं। यदि दूध विशुद्ध नहीं है तो उससे बना हुवा मक्खन या घी कदापि शुद्ध, नहीं हो सकता। अशुद्ध तथा मिश्रित दूध और घी सदा स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। जिन गौओं को दूषित दाना चारा दिया जाता है उनका दूध स्वास्थ्य कर नहीं होता।

द्वितीय लाभ यह है कि घर में गाय होने से शुद्ध दूध सस्ता पड़ता है। क्योंकि जितना दूध गाय देती है, उससे आधा अथवा तीन चौथाई से अधिक व्यय उसके रखने और खिलाने में नहीं होता। जितना अधिक दूध देने वाली गाय होगी। उतना ही उसके पालने में (उसकी आय से) व्यय कम होगा।

तीसरा लाभ गाय का बच्चा है। यदि वह नर हुवा तो दूध बन्द होने पर बहुत अच्छे दामों में बिक सकता है। और मादा हुई तो कुछ दिनों बाद गाय होजाती है।

चौथा लाभ गोबर है। गोबर से इन्धन का काम लिया जाता है, इसके कण्डे और ओपले बनाये जाते हैं, जो लकड़ी की जगह जलाने का काम देते हैं। गोबर का खाद बहुत अच्छा होता है, क्योंकि इससे खेतों की उपज बहुत बढ़ जाती है। गोबर से दुर्गन्ध भी दूर होती है। जिन स्थानों पर फिनाइल नहीं मिलता; वहां गोबर से, विषाक्त तथा दुर्गन्धित स्थान को परिष्कृत करने के लिये फिनायल की की एवज में काम लिया जा सकता है। बल्कि साइन्स की दृष्टि से देखने से पता चलता है कि फिनायल की सफाई से गोबर की सफाई कहीं विशेष उपयोगी है। गो-वंश के

गोवर और मूत से खाद का काम लेना जितना लाभदायक है, उतना ही हानि कारक उसे कंडे बनाकर जलाना है।

गाय के दूध बिना मनुष्य का काम नहीं चल सकता। बच्चे के पैदा होते ही उसको दूध की आवश्यकता पड़ती है। उसको दूध उसी समय से पिलाया जाता है। और जन्म से मरण पर्यन्त मनुष्य दूध का व्यवहार करता रहता है। जब मनुष्य बीमार होता है और उसका खाना पीना बन्द हो जाता है उस समय भी बल बनाए रखने के लिये डाक्टर, वैद्य, हकीम आदि सब ही शुद्ध दूध की राय देते हैं। दूध से मक्खन, मक्खन से घी बनाया जाता है। दही, मट्ठा, मावा इत्यादि भी दूध ही से बनते हैं। दूध से सैकड़ों तरह के अति उत्तम खाद्य पदार्थ भी बनाए जाते हैं। यह बात किसी से छिपी नहीं है।

भारत के हाल के दुधारु पशुओं की संख्या का नकशा.

	बैल	गायें	बछड़े-बछड़ी	भैंसा	भैंस	पाडे-पाडी बच्चे	कुल जोड़
ब्रिटिश-भारत (सन् १९२३-१९२४,)	४९४१४९२८	३७२१९३७०	३०८५५६०५	५४२७५९२	१३५३५४५५	१००४५२८२	१४६४९८२३२
देशी राज्य (सन् १९२२-१९२३)	१०५१८६२०	९७८८६६५	५६०५४००	११०९२५९	४०२५३२५	१९०३१४२	३२९५०४११
जोड़	५९९३३५४८	४७००८०३५	३६४६१००५	६५३६८५१	१७५६०७८०	११९४८४२४	१७९४४८६४३

चारा चरनेवाले पशुओं की संख्या का नकशा

समस्त भारत में गौवंश की संख्या १४,३४,०२,५८८। समस्त भारत के भैंसा व भैंस की संख्या ३,६०,४६,०५५ है।

	भेड़	बकरा बकरी	घोड़ा-घोड़ी	ऊँट	खच्चर	गधे	कुल जोड़
ब्रिटिश-भारत (सन् १९२३-१९२४)	२२३३९६६१	२६०१७४०८	१६७१४६४	४३९१५८	७५५१८	१३७६४२०	५१९२२६२९
देशी राज्य (सन् १९२२-१९२३)	११९९६३०३	८३९८६१५	४९२७६२	१२१७०४	५१६८	३५४६३१	२०५७२४८३
जोड़	३३५३८२६४	३४४१६०२३	२१६४२२६	५६०८६२	८०६८६	१४३४३५१	७२४९५४१२

गाय के दूध मूत्र आदि से रोग नाश

गाय के दूध और घी में चीनी मिला कर पीने से बदन में ताकत आती है और बल व पुरूषार्थ बढता है।

जिस मनुष्य की आख में जलन रहती हो, यदि वह कपडे की कई तह करके उसको गाय के दूध यें तर करके आखों पर रक्खे और उपर से फिटकिरी पीस कर पट्टी पर बुरक दे तो चार छः दिन में नैत्र जलन कम हो जाती है।

गाय का दुध ओटा कर गरम-गरम पीने सें हिचकी आराम हो जाती है। गाय के दूध को गर्म करके उस में मिश्री और काली मिर्च पीस कर मिलाने और पीने से जुकाम में बहुत लाभ होते देखा गया है।

गाय के दूध से बादाम की खीर पका कर ३-४ दिन सेवन करने से आधे शीशी (आधे सिर का दर्द) आराम हो जाता है।

अगर खून की गर्मी से सिर में दर्द हो तो गाय के दूध में रुई का मोटा फाहा भिगो कर सिर पर रखने से फायदा होता है किन्तु संध्या समय सिर धोकर मक्खन मलना जरूरी है।

अगर किसी तरह भोजन के साथ कांच का सफूफ (चूरा) खाने में आजाय तो गाय का दूध पीने से बहुत लाभ होता है।

गाय के दूध में सोंठ घिस कर गाढा गाढा लेप करने से अत्यन्त प्रबल सिर दर्द भी आराम हो जाता है। गाय के गोबर से चोका देने से हानिकारक सूक्ष्म कीट (जर्म) नहीं रहते।

गो मूत्र पिलाने से खुजली रोग का नाश होता है।

इसका दूध अनेक रोगों को नाश करने वाला है। इसका दूध परम सतोगुणी है इसी से बडे २ महात्मा इसको पीकर योगाभ्यास करके देव पद को प्राप्त होते हैं।

गो पालने की रीतियां

जो महानुभाव गोपालन करना चाहते हों वे निम्न लिखित गोपालन के नियमों को ध्यान में रखे—

(१) जहा पूरा प्रकाश रहता हो, वहा गायें रक्खी जावें। स्थान साफ रखना चाहिये अर्थात् वहा पर कूड़ा कचरा न हो, जिससे पिस्सू आदि जन्तु उनको न सतावें।

(२) बड़ी गायों को अलग व छोटी गायों को अलग रखें। दोनों तरह की गायों को शामिल नहीं रखें।

(३) गायों को प्रति दिन शुद्ध स्वच्छ जल यथा समय पिलाना चाहिये। जिन गायों को समय पर पानी नहीं पिलाया जाता वे नालियों में मैला पानी पी लेती हैं जिससे दूध खराब व कम देने लगती हैं।

(४) गायों को समय पर पेट भर शुद्ध और पौष्टिक दाना व चारा देना चाहिये। भूसा खिलाने से दूध कम हो जाता है। इसलिये पेटभर अच्छा घास व दाना खिलाना चाहिये। पेट भर खाना नहीं मिलने से गायें मैला खा लेती हैं जिससे दूध विष तुल्य हो जाता है।

(५) लगभग सब हिन्दू और जैन गायों को माता कह कर पुकारते हैं परन्तु जब तक वे दूध देती हैं तब तक तो पूरा घास दाना देते हैं और पीठ पर हाथ फेरते हैं तथा प्रेम दर्शाते हैं जिससे वे पूरा दूध देती हैं। और जब कभी उनकी प्रकृति के विरुद्ध उनके पेट में घास दाना पहुंचता है और

दूध कम देती हैं तब माता का लिहाज न कर पूरा दाना घास ही नहीं देते यही नहीं किन्तु और ऊपर से गालियों की बौछार भी किया करते हैं। और कोई २ तो यहा तक निर्दयता कर बैठते है कि उन पर लकडियों से प्रचंड प्रहार भी करते हैं, जिसका फल उलटा होता है। यानी शनैः २ दूध कम होता है। इसलिये गाय को न तो मारना चाहिये और न उन पर वृथा क्रोध ही करना चाहिये। कारण कि गाय कमजोर होने से दूसरी दफा वियाने पर (बच्चा उत्पन्न करने पर) कम दूध देती हैं। गायों की अच्छी हिफाजत करने पर २५ सेर तक दूध बढा देती हैं। ऐसा प्रमाण "किसानों की कामधेनु" से मिलता है।

(६) दूध देने वाली गाय को चरने के लिये २–३ मील से दूर नहीं भेजना चाहिये। और घर पर बन्धी हुई भी न रखना चाहिये।

(७) यदि गाय दुहने के स्थान पर गोवर, मूत्र और कूड़ा कचरा पड़ा हुआ हो तो वहा गाय नहीं दुहना

चाहिये क्योंकि वारीक जन्तु दूध में पड़ जाने से दूध खराब हो जाता है।

(८) दूध दुहकर कपड़े से ढाक लेना चाहिये और गाय का दूध सबके सामने नहीं दुहना चाहिये। जितनी गाय प्रसन्न रहती है उतना ही दूध ज्यादा देती है। यह बात हमेशा ध्यान में रखना चाहिये।

(९) गाय को लम्बे डाकरे व लम्बी घास नहीं खिलाना चाहिये। अच्छा घास खिलाने से दूध बढ़ता है।

तात्पर्य्य गौ का उत्तम रीति से पालन करने से वह प्रसन्न होती है और प्रसन्न होने पर अकेले उत्तम दूध ही अधिक नहीं देती किन्तु मनुष्यों की सब आवश्यकताओं को पूरा करती है।

❀ गो-रक्षा दृश्य ❀

(अदालती कार्रवाई)

अदालत तहसील चुरू

हम नीचे दस्तखत करने वाले, पूज्य श्री महाराज जवाहिर-लालजी के दर्शनों के लिये मेवाड़, मारवाड़, गुजरात तथा

काठियावाड़ से यहा आए हुए हैं। हम लोगों का मुख्य धर्म अहिंसा है। यहां पर जो गौवें फाटक में रक्खी जाती है और जिस कदर चार छ. आना फी गाय नीलाम की जाती है और इस पर भी इस प्रान्त में घास की बहुत कमी दिखलाई पड़ती है जिससे इन गायों का सुख से निर्वाह होना हम लोगों को बहुत कठिन माल्रूम होता है। इन सब बातों को मद्दे नजर रखकर और गो-रक्षा अपना मुख्य कर्तव्य समझ कर हम लोग यह अर्ज करना अपना फर्ज समझते है कि मेवाड और मारवाड़ में घास और जल बहुत इफ़रात से है और हम लोग इन गायों को अपने खर्च से वहा ले जाकर इनकी रक्षा करना चाहते है, और अर्ज करते है कि जिस कीमत पर दूसरों को नीलाम की जाती है उसी कीमत पर हम लोगों को दी जावें लेकिन शर्त यह है कि हम लोग सुनते हैं कि यहा से जो गौ बाहिर जाती है उस पर राज्य की तरफ से महसूल लिया जाता है। हम लोग करीब ५०० गायें लेजाना चाहते है जो हमारे निःस्वार्थ भाव से सिर्फ गो रक्षा के लिये लेजाना है। इस हालत में अगर श्रीमान् महसूल मुआफ फरमा देवें तो हम लोग उपरोक्त गायें ले जाने को तैयार है। सुनते है कि श्रीमान् महाराजाधिराज नरेन्द्र शिरोमणि श्री बीकानेर नरेश बहुत उदारचित्त एवं गोभक्त है। इसलिये हम लोग यह दरख्वास्त

पेश करके आशा करते हैं कि इस पर उचित विचार करके हम लोगों को बहुत जल्द हुक्म सादिर फरमावेंगे।

नोट—हम लोग यहां से जल्दी ही अपने वतन को जाने वाले हैं इसलिये हुक्म बहुत जल्दी सादिर फरमाया जावे ता० ३० सितम्बर सन् १९२९ ईस्वी

द० वरधभाण, रतलाम. हीरालाल, खाचरोद सरदारमल ओवर-सियर, उदयपुर. अमृतलाल जौहरी, बम्बई रत्नलाल महता, सञ्चालक जैन शिक्षण संस्था—उदयपुर. श्रीचन्द अव्वाणी, ब्यावर

रिपोर्ट तहसील चुरु व महकमा निजामत रेनी हुक्म राजगढ़

दरख्वास्त साहूकारान उदयपुर दरबार इसके कि फाटक की गायें उनको कीमत वेसी पर दी जावे मगर जकात नेसार मुआफ होना चाहिये।

जनाब आली

चंद साहूकारान रियासत उदयपुर पूज्य महाराज श्री जवाहिरलालजी के दर्शनार्थ चुरू आए हुए हैं। वे फाटक की गायें खरीद करके मेवाड में लेजाना चाहते हैं। उनकी ख्वाहिश

गायों से व्यापार करने की नहीं है बल्कि वहा पर घास-पानी ज्यादा है। इसलिये धर्मार्थ लेजाना चाहते है। मैंने उनको समझाया था कि वे **कम नुजक मजूर रवाना** व चराई फी नग अदा करें मगर वे नीलाम की बोली पर ही खरीदना चाहते हैं। इलाका तहसील हाजा मे वारिश की कमी है जिससे पैदावार घास बिलकुल नहीं है, इसलिये खरीददार नहीं हैं। ये लोग इस शर्त पर गाये लेजाना चाहते हैं कि उनको जकात नेसार न लगना चाहिये, जिसकी मुआफी श्रीजी साहिब बहादुर दाम इकबालहु की गवर्नमेण्ट के अख्तियार में है सो रिपोर्ट हाजा मय दरख्वास्त महकमह बाला होकर अर्ज है कि मुनासिब हुक्म से जल्द इतला बख्शाई जावे।

ता० १-१०-२६ ईस्वी- दरख्वास्त नं० ११६५.

आइ जज सदर

सहवन आया। तहसील चुरू में वापस हो तारीख ४ अक्टूबर सन् १६२६ ईस्वी नं० ६३६.

तहसील चुरू

ये कागजात जरिये रिपोर्ट ता० १-१०-२६ ईस्वी के वास्ते हुक्म मुनासिब महकमे बाला निजामत रेनी मुकाम राजगढ़

भेजे गये थे, जो अदालत साहब रिस्ट्रेक्ट मे मालूम नहीं किस तरह चले गये जो आज की डाक से अदालत मोसूफ से आज की डाक से सादिर हुए लिहाजा असल कागजात बदस्त महता रत्नलालजी महकमह बाला निजामत रेनी मुकाम राजगढ में पेश होकर गुजारिश हो कि मुताबिक रिपोर्ट सरिश्ते हाजा ता० १ अक्टूबर १६२६ मंजूर फरमाया जावे।

निजामत रेनी

रिपोर्ट तहसीलदार साहिब चुरू मुफस्सिल व मुनासिब है। कमी बारिश की वजह से चारे की पैदावार नहीं हुई इसलिये फाटक के मवेशियान के खरीददार नहीं मिलते और जिन गरीब रिआया के पास चारा नहीं है उन्होंने भी अपनी गायों को आवारा छोड़ दिया है। अक्सर जो मवेशी फाटक की नहीं बिकती थीं वे गोशाला में भेज दी जाती थीं मगर चारे की कमी की वजह से गोशाला भी अब नहीं लेती सायलान मोआज़िज व खास राज्य उदयपुर के है। ये लोग अपने खर्चे से ५०० गायें या जितनी लेजा सकें लेजाने की इजाजत चाहते हैं और जो ५) फी मवेशी नेसार महसूल लगता है उसकी मुआफी चाहते हैं। मेरी राय में यह महसूल मुआफ फरमाया जाना मुनासिब है। नीलाम में ये लोग मवेशी फाटक से खरीद

लेवेंगे आयन्दा ये राजगढ़ पारेनी के फाटक की मवेशियान खरीदने का भी इरादा करते हैं जिनके भी खरीददार नहीं है। अर्ज़ ऐसी व ख़ास इन सायलान के लिये जनरल मंजूरी बाबत मुआफी महसूल नेसार फरमाई जाकर इत्तिला दी जावे। यह रिपोर्ट मैं दस्ती रत्नलालजी महता के साथ भेजता हूं।

ता० ११-१०-१६२६ ईस्वी. नं० ७६२६.

उदयपुर में गो-रक्षार्थ उत्साह

बीकानेर-तहसील से ऊपर मुआफिक लिखा पढी जारी रख कर हमने एक कागज उदयपुर श्रीमान् कोठारीजी साहिब बलवन्तसिंहजी की सेवा में भेजा। उसमें हमने पूरा व्यौरा लिख भेजा। श्रीमान् कोठारीजी साहिब ने वह कागज उनके कुंवर साहिब श्री गिरधारीसिंहजी साहिब के साथ श्री बड़े हजूर श्री जी हजूर स्वर्गीय महाराणा साहिब फतेसिंहजी बहादुर की सेवा में मालूम करने के लिये भेजा। उन्होंने तुरन्त ही उसको हिन्दू वा सूर्य्य के चरणारविन्दों में नजर करके और मारवाड़ के थली प्रान्त की गायों की दुर्दशा मालूम की। उस पर कुंवर साहिब को हुक्म मिला कि वे किसी को भेज इसकी जांच करें सो

गौ-भक्त श्रीमान् कोठारीजी साहेब बलवन्तसिंहजी भूतपूर्व प्रधान उदयपुर.

उन्होंने (श्री मेघराजजी खिमेसरा व ठाकुर देवीसिंहजी व धाबाई को) गायों को देखने के लिये **धाबाई वगैरा** को चुरू भेजा। सब देख चुकने के बाद घास के लिये लिखा गया तो श्रीमान् कोठारीजी साहिब ने उदयपुर से एक डिब्बा घास उन गायों के लिये चुरू भेजा और गायों को जल्दी छुड़ाने की कार्रवाई करने के लिये पत्र लिखा।

इसके पश्चात् हम तहसील के कागजात लेकर बीकानेर गये। वहा हम कौन्सिल रेवेन्यू ऑफिसर व कस्टमज़ हाकिम के पास गये तो उन महानुभावों ने बड़ी सहानुभूति के साथ उन कागजों पर लिखा पढी करके उनको महकमह खास में भेजा।

हम महकमा खास के प्रत्येक अफसर से मिले और जनाब प्राइम मिनिस्टर साहिब सर मन्नूभाई से मुलाकात की। आपने हम से बात-चीत करने में बड़ी दिलचस्पी ली। और श्रीमान् महाराजाधिराज नरेन्द्र बीकानेर से प्रार्थना करके ३०००) रुपये मुआफ करा कर फाटक से गायें लेजाने की आज्ञा कस्टम व तहसील राजगढ को देदी जिनकी नकलें पाठकों की जानकारी के लिये दी हैं।

सफलता

हुक्म डिपार्टमेण्ट राज्य श्री बीकानेर

नं० ४०१८६२ सायर चुरू

जो कि महता रत्नलालजी साहब उदयपुर ५०० गौ चुरू से इलाके गैर में नेसार करना चाहते हैं जिनकी नेसार जकात ब हुक्म साहिब प्राइम मिनिस्टर मुआफ फरमाई गई है लिहाजा जरिये हाज़ा तुमको लिखा जाता है कि महता रत्नलालजी को ५०० गाये चुरू से बिला अदाय नेसार जकात लेजाने दीजावे। ता० १६-१०-१६२६ ईस्वी.

हुक्म महकमा कस्टम्ज राज्य श्री बीकानेर

नं० ४०१५०० सूबा सायर राजगढ़

जो कि महता रत्नलालजी साहब उदयपुर १०० गायें राजगढ से इलाके गैर मे नेसार करना चाहते है जिनकी नेसार जकात व हुक्म साहिब प्राइम मिनिस्टर मुआफ फरमाई गई है लिहाजा जरिये हाजा तुमको लिखा जाता है कि महता रत्नलालजी को १०० गायें राजगढ से बिला अदाय नेसार जकात लेजाने दी जावें। ता० २६-१०-२६ ई

गो-रक्षा का अपूर्व दृश्य

श्रीमान् बीकानेर नरेश का गायें ले जाने का हुक्म पाकर हम लोग तहसील चूरू में पहुंचे। हुक्म को वहां देकर ३०९ गायें छुडालीं। अब इन दुबली पतली अधमरी भूखी गायों का समूह उस कैदखाने से निकाल कर बाज़ार होता हुआ सेठ सीपाणीजी के नोहरे मे लाया गया। गायें प्रसन्नता से रमा रही थीं और हम संतोष से सांस ले रहे थे। आज हमको दो महीने की दौड धूप का फल मिला था। इस जीव रक्षा मे कितना आनन्द है। इसको हिंसक तथा हिंसा से प्रेम रखने वाले प्राणी कैसे जान सकते हैं ?

इस अपूर्व दृश्य को देखने के लिये हजारों मनुष्य इकट्ठे हो रहे थे। सबके मुह से येही शब्द निकल रहे थे कि आज पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज के उपदेशों का फल है। आज इतने जीवों की रक्षा होकर सच्चा पुण्य हुआ है। बहुत से मनुष्य लक्षाधीश दया-दान विमुख व्यक्तियों को लानत दे रहे थे और कह रहे थे कि यदि गायों की रक्षा करना तथा मरते को बचाना इनके धर्म में होता तो आज थली प्रान्त की इतनी गायों की रक्षा हो जाती। कोई कह रहे थे कि चूरू-

शहर के कोठारीजी मूलचन्दजी, महालचन्दजी, चम्पालालजी, मदनचन्दजी इत्यादि को धन्यवाद है कि जो पहिले गायों की रक्षा करना पाप समझते थे परन्तु आज पूज्य श्री के उपदेश से उन्होंने अपनी मिथ्या टेक छोड़ दी है और अब गायों की रक्षा कर रहे हैं।

कई गायों की हड्डिया निकल रहीं थीं। भूख और दुर्बलता के कारण उनसे चला नहीं जाता था। उनकी यह दशा देख कर बहुत से दयालु पुरूषों की आखों से अश्रुपात हो रहा था। परन्तु कुछ अद्भुत खोपड़ी वाले पुरुष कह रहे थे कि इन लोगों ने इनको छुड़ा तो लिया है परन्तु इनको घास पानी डालने में कितना पाप लगेगा। अफसोस! ऐसे मनुष्यों की 'हठधर्मी को'। वे लोग हमारे इस पुण्य कर्म को देख कर दुखी हो रहे थे परन्तु उनको जवाब देने वाले भी मौजूद थे। चूरू के कुछ ब्राह्मण, अग्रवाल तथा सुनार आदि दया प्रेमी व्यक्ति उनको जवाब देकर लज्जित करने में नहीं चूकते थे।

इस प्रकार गायों को उस नोहरे में रक्खा गया और घास पानी डालने लगे। इस दृश्य को देखने के लिये बहुत से आदमी वहां पर एकत्रित होने लगे और बहुत से आदमी अपनी गायों को मुफ्त ही में दे गये।

जब लोगों ने सुना कि कोंठारीजी साहिब महालचंदजी जो पहिले तेरहपन्थी थे परन्तु अब गायों को खाना-पीना दे रहे है और इसीसे वे इस 'रक्षा-समिति' के प्रेसिडेण्ट चुने गये हैं, तो बहुत से आदमी उनके इस पुण्य कर्म को देखने के लिये पहुंचने लगे। हमारे तेरह पथी भाइयों नें भी हमें दो गाये रक्षा के लिये दीं इसके लिये हम उनके कृतज्ञ हैं।

इसी तरह आठ दस दिन तक अच्छा खाना पीना मिलने पर वे गायें कुछ २ स्वस्थ हो गईं और चलने फिरने योग्य हो गईं तब हमने उनके लिये उदयपुर श्रीमान् कोठारीजी साहिब को लिखा कि मारवाड खुश्की के रास्ते लाने में खर्चा कम होगा मगर गायें दुबली व बहुत दिनों की भूखी होनें से तकलीफ से पहुंचेगी उसके उत्तर मे श्रीमान् का हुक्म रेल में लाने का आया जिसमे लिखा कि गायों को किसी तरह की तकलीफ न हो और आराम से मेवाड में पहुंच जावे। श्रीमान् की इस तरह आज्ञा देने के हाल को पढने से पाठकों को ज्ञात होगा कि श्रीमान् कोठारीजी साहिब का गायों के प्रति कितना अगाध प्रेम है ? इस कृपा का धन्यवाद हम श्रीमानों को किस जबान से धन्यवाद दे सकें। आप ही का कृपा से गायें आराम के साथ मेवाड भूमि में पहुचाई गईं जिसका वर्णन आगे दिया गया है।

'वह जलूस'

यद्यपि रेल के रास्ते लाने में खर्चा बहुत लगता था मगर गायों की हालत नाजुक थी इसलिये उनके स्वास्थ के लिहाज से रल के रास्ते ही लाना उचित मालूम हुआ। अतः इन गायों को लेजाने के लिये हमने स्पेशल के ५० डिब्बे चुरू स्टेशन पर मंगवाये और उनकी हिफाजत के लिये आदमी नौकर रख दिये। डिब्बों में खूब घास दाना व पानी का प्रबन्ध किया गया। इसके अतिरिक्त पत्र देने पर अजमेर व मांडल स्टेशन पर घास पानी का प्रबन्ध किया गया।

जब गायों की स्पेशल रवाना हुई तो दर्शकगण की भीड़ गद्गद हो उठी। स्टेशन-स्टेशन पर दर्शकगण उन गायों को देखकर आनन्दित होते थे। माहली स्टेशन तक प्रत्येक स्टेशन के लोग क्या हिन्दू क्या मुसलमान सभी ने गायों का दर्शन किया और उनको पानी पिलाया। इस प्रकार माहोली स्टेशन पर गोएँ आ पहुची।

माहोली स्टेशन पर

स्टेशन माहोली पर गायें उतारी गई। वहा पर श्रीमान् कोठारीजी साहिब बलवन्तसिंहजी व कुंवर साहिब गिरधारीसिंहजी

ने गायों के उतारने व घास का पूरा प्रबन्ध कर रखा था। डिब्बों से गायें सावधानी के साथ उतारी गईं और मेवराजजी साहिब खिमेसरा ने गिना कर उनको कपासन निवासी नायब हाकिम साहब मोतीलालजी भंडारी के सुपर्द की। उन्होंने गायों के आराम का खूब प्रबंध कर दिया। चुरू मे जो लोग गायों के साथ आए थे उन्होंने गायों का यह स्वागत व मेवाड़ के घास पानी की चर्चा चुरू जाकर की जिससे सब लोग धन्यवाद देने लगे।

हिन्दवा सूर्य्य का गोरक्षा से प्रेम

श्री स्वर्गीय मेवाड़ाधीश की सेवा में श्रीमान् कोठारीजी साहिब बलवन्तसिंहजी ने मालूम की कि थली प्रान्त की गायें माहोली आगई हैं। इस पर श्रीमानों ने और स्वयं ४ नाहर मगरे पधार कर माहोली से सब गायों को नाहर मगरे मंगवाने का हुक्म बक्षा। महलों के चौक में मगवा कर गायों के बीच पैदल पधार कर प्रत्येक गाय का निरीक्षण किया। यहा यह प्रकट करना भी अतिशयोक्ति रूप में न होगा कि श्रीकृष्ण महाराज ने जिस प्रकार गोकुल में जाकर जिस प्रेम-दृष्टि से

उनको देखा उसी प्रकार 'आर्य-कुल-कमल-दिवाकर' हिन्दवा सूर्य्य महाराणा साहिब फतहसिंहजी बहादुर ने अपनी प्रेम-भरी दृष्टि से उन गायों को देखा। उस समय के देखने वाले कहते हैं कि निःसन्देह दयालु महाराणा साहिब को देखकर वे मूक पशु उस समय अपनी मौन वाणी में गर्दन हिलाते हुवे जय जयकार करते हुवे जान पडते थे।

श्रीमानो ने गायों को देखकर फरमाया कि इनमें से १०० गायें तो ऐसे ब्राह्मणों को दी जावे कि जो इनकी देख भाल भली भाति कर सकें। शेष गाये वापस माहोली भेज दी गई।

इन गायों को देखकर यहा के निवासियों ने बडा आनन्द मनाया। बात दरअसल यह है कि मेवाड़ के राजा तथा प्रजा सब ही गो-भक्त है। हमारे यहां गायों के लाठी पत्थर तक मारने की आज्ञा नही है। मेवाड़ निवासी गायों को ही अपनी सम्पत्ति मानते है। गायों के हिंसक महसूल चुका कर किसी गाय को मेवाड़ के बाहिर नहीं लेजा सकते।

मेंद पाटेश्वर महाराणा साहिब गो-रक्षक ही नहीं, किन्तु जीव मात्र के रक्षक है। मेवाड़ में राज्य से गाय, बैल, बकरी, कबूतर, मोर, बन्दर, मछलिया इत्यादि जीवों को नहीं मारने के हुक्म जारी हैं। हजारों कबूतरों व पक्षियों को महलों में दाना

मिलता है। यहा तक कि इन जीवों के रहने का स्थान भी खास **महलों में है। महलों में व और भी किसी जगह आपके सामने आये हुवे जीव को कोई सता नहीं सक्ता था। महलों में मधु मक्खियें व बर्रें (टांटिये) छत्ता लगा देते हैं तो उनको भी नहीं मारने देते।** हाथी, घोड़े, बैल वगैरह पशुओं को आप स्वय पधार कर निरीक्षण करते रहते हैं। यदि उनको किसी प्रकार की तकलीफ मालूम होजावे तो सबसे पहिले उनके आराम का प्रबन्ध करते हैं।

श्रीमान् की जब सवारी निकलती तो पहिले रास्ते में छोटे बड़े यहा तक कि कीडे मकोड़े पडे हों तो सबको बचाकर चलने का हुक्म होता है और इसका पूरा प्रबन्ध पहले से ही रहता है। रात में रोशनी पर कपडे की खोरियें पहिनाई जाती हैं।

श्रीमान् की आज्ञा है कि प्राणी-मात्र मेरे राज्य में सुखी रहें। इस राज्य में वर्ष में कई 'अगते' रक्खे जाते है जिनमें कसाई, कलाल, कन्दोई, भड़भुंज्ये, तेली वगैरह अपना २ व्यापार बन्द रखते हैं।

इस प्रकार मर्य्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्रजी की गद्दी की मर्य्यादा का पालन पूर्णरूप से करते हैं। ऐसे प्रतापी, दयालु नरेश महाराणा साहब के गुणों का वर्णन करना शक्ति से बाहिर है।

* श्रीएकलिंगजी * श्रीरामजी *

श्रीमान् श्री वैकुंठवासी श्री श्री बड़ा हजूर बीकानेर की तरफ सूं अकाल पीड़ित गायां मेवाड़ में मंगाई जिण विषय की कविता निम्न प्रकार है:—

कविता

❀ मनहर ❀

विक्रम के संवत उनीस औ छियासी माहि-
तृण दुरभिच्छ भयो जांगल विदेस में।
कामदुघा भारत की सरवस्व माता रूप-
सुरभी मरन लागी भूख के क्लेश में॥
सनातन धर्म के सु-रच्छक दयालू फता-
गोकुल बचायो धन्य मंगा निजदेस में।
गोकुल उबारि कृष्ण कहाये गोपाल तवे-
मानौ अवतार वही गौपालक वेस में॥१॥

रचियता—

दधिवाडिया करनीदान.

———

इश्तिहार अज़पेशगाह राज्य श्री महकमा खास श्री दरबार राज्य मेवाड़ महकमा कार्तिक सुदी १३ सं० १९८३ ता० १७-११-१९२६ ई.

नं० ७३४१

छाप

दस्तखत प्राइम मिनिस्टर.

व सिलसिले इन्तजाम फरोख्तगी मवेशियान जरिए हाजा हरखास व आम को आगाह किया जाता है कि इलाके मेवाड़ में से गायों की निकासी तो कतई बन्द ही है, और मुल्तानी मकराणी बालदिये, कसाई व सासी वगैरा बिना जाने लोगों को दीगर मवेशी भी बेचने की मुमानिअत कीगई है। इसलिये मुन्दर्जा सदर कोमों के लोग मेवाड इलाके में मवेशी खरीदने के लिए नहीं आवें। उनको मवेशी नहीं बेची जावेंगी, और उन्हें नुकसान उठाकर जेरबार होना पडेगा।

गो-वंश पालक

जन्म से जीवन लीला संवरण पर्य्यन्त जिन्होंने गो-वंश, गो-भक्त और गो-सेवकों का प्रतिपालन किया, और बीकानेर

से लाई हुई भूखों मरती गायों को अपनी रियासत में स्थान दिया, और जिन्होंने इनमें से १०० गायें ब्राह्मणों को दान में दी उन स्वर्गीय प्रातः स्मरणीय हिन्दवां सूर्य्य, आर्य्य-कुल कमल-दिवाकर महाराणा साहिब श्री १००८ श्री फतहसिंहजी बहादुर के चरणों में मेरी श्रद्धाञ्जलि अर्पण है।

गो-ब्राह्मण-प्रतिपालक पिता श्री के उत्तराधिकारी सुपुत्र गो-ब्राह्मण-प्रतिपालक, मेवाड़ाधिपति, दयालु महाराणा श्री भूपालसिंहजी बहादुर जिन्होंने क्षुधार्त्त बीकानेर रियासत से आई हुई गायों की रक्षा के लिये ४०००) रुपये प्रदान किये और गायों के प्रति अगाध प्रेम होने से गोशाला में दूर देशों की अच्छी नसल की गायों को मंगाकर उनको हर प्रकार का आराम पहुचाने के प्रबन्ध के अलावा मेवाड़ की गायों व बैलों को आराम पहुचाने का सदा ध्यान रहता है। अतएव ऐसे दयालु नरेश के पद पङ्कज में श्रद्धाञ्जली भेंट है।

आवश्यक सूचना

चूरू से मेवाड में गायें लाई गई जिनमें से १०० गायें तो आर्य्य-कुल-कमल दिवाकर मेद पाटेश्वर श्री बड़े हजूर ने ब्राह्मणों को दीं, और जिन सज्जनों ने चन्दा जमा

कराया उन्होंने जीव रक्षा के निमित्त ली और बाकी गायें रहीं उनको श्रीमान् कोठारीजी साहिब बलवन्तसिंहजी ने गरीब लोगों को प्रदान कीं। तथा बीमारी से जो गायें मरीं उनकी खालों के १०१) रु० जमा हुवे। क्योंकि इस वर्ष पशुओं में बीमारी का प्रकोप होने से कुछ गायें मर गईं थीं। अब कोई गायें या बछडे बाकी नहीं हैं।

सहायता प्रदान करने वाले सज्जनों की शुभ नामावली

४०००) श्रीमान्-श्री-बडे हजूर दाम इकबाल हू (स्वर्गीय महाराणा साहिब) रियासत मेवाड़ ने मारफत-कोठारीजी साहिब बलवन्त-सिंहजी के अता फरमाये सिक्का कलदार

८७२।।।) उदयपुर के सज्जनों ने गायें खरीदने व रक्षा के लिये रुपये दिये जिनकी नामावली

१००) श्रीमान् महाराजा साहिब करजाली श्री लछमणसिंहजी साहिब

५१) श्रीमान् कोठारीजी साहिब बलवन्तसिंहजी

१५०) श्रीयुत् खेमपुर ठाकुर साहिब करणीदानजी दधवाड़िया

२५) श्रीयुत् कन्हैयालालजी चौधरी (कलदार)

२५) ,, पारखजी किशनदासजी (कलदार)

२५) ,, मुनीमजी केवलचन्दजी

२५) हस्ते लालाजी साहिब केशरीलालजी

२५) विना नाम ,, ,, (कलदार)

२५) श्रीयुत् कीरतसिंहजी बाठेल
२५) „ बाबू रामचरणलालजी
२०) „ अम्बालालजी खेमलीवाला
२५) „ कन्हैयालालजी जड़िया (कलदार)
२०) „ रङ्गलालजी बरसावत (कलदार)
२०) „ नाथूलालजी डूंगरवाल
१६॥)॥ जोशण भाणी बाई १३) कलदार, ६॥)॥ उदयपुरी
१०) श्रीयुत् चम्पालालजी वरड़िया
१५) „ कल्याणमलजी सिंगवी
१५) „ केशुलालजी ताकड़िया
१३॥-) „ धनराजजी चपड़ालिया
१०) „ जवारमलजी सिंगवी
१०) „ सेसमलजी जीतमलजी बायेल
१०) „ नंदलालजी सिंगटवाड़िया
१०।-) „ खूबीलालजी वरड़िया
१२) „ उरजणलालजी स्वरूपरिया
७) „ उदयलालजी चेलावत की माता व स्त्री
५) „ देवीलालजी वरड़िया
५) „ महताजी साहिब जोधसिंहजी की पत्नी
५) „ चाँद बाई
५) श्रीयुत् रङ्गलालजी स्वरूपरिया
५) „ चुन्नीलालजी भादव्या
५) „ कन्हैयालालजी सेठ (गोगुन्दावाला)
११) „ हगामीलालजी खाम्या

५) श्रीयुत् मोतीलालजी डींगड़

२) लखारया चपा

२) सूरज बाई पोखरया

२=) लुहार इन्द्रजी

२) कानजी की माता (बीकानेर वाला)

१) उदयलालजी सा० चेलावत के रसोई बनाने वाली ब्राह्मणी

२) श्रीयुत् अम्बालालजी कोठारी

१०१) खालें बेचाव खाते जमा गायें बीमारी से मरगई जिनके आये

४।=)।।। वत्ती खाते जमा कल्दार ११६) बटाए जिनकी वत्ती के

६।।)।।। बाल्टियें नीलाम कीगई जिनके आये सो जमा

८७२।।।)

२१६१।) चुरू में चन्दा मडा सो जमा

२०१) श्रीयुत् सेठ साहिब ताराचन्दजी गेलड़ा मद्रास निवासी हस्ते खुद के १०१), माताजी के ५०), धर्म-पत्नी २५), बाई सोहन २५)

५१) श्रीयुत् अमरचन्दजी वर्द्धभानजी साहिब रतलाम

५६) ,, अमृतलालजी रायचन्दजी ,, जौहरी बंबई

५१) ,, लालचन्दजी स्वरूपचन्दजी खाचरोद

२५) श्रीमती चम्पाबाई जौहरी बंबई

११) श्रीयुत् माणकलालजी जफ्सी बंबई

५) श्रीमती पारुबाई बम्बई

१४) श्रीयुत् रूपचन्दजी ११), चम्पालालजी ३) खाचरोद

२५) ,, डालचन्दजी मालू की धर्म पत्नी

३०१) ,, वदनमलजी साहिब वांठिया भैरूदानजी साहिब गोलेछा बीकानेर वालों ने फाटक में से गायें छुड़ाने तावे दिये।

५१) ,, मानमलजी सूराणा नयाशहर (ब्यावर)

५१) ,, खेमचन्दजी पुगलिया

२००) ,, खेमराजजी नयाशहर

२२०) , ताराचन्दजी गेलड़ा मद्रास की मारफत

२००) , भैरूदानजी गोलेछा के हस्ते

२२९।) ,, तनसुखदासजी हीरावत देशनोक

५००) ,, विजयराजजी चांदमलजी १००), फतहचन्दजी ४००) बीकानेर

२१६१।)

१७८८८)।।। बीकानेर में चन्दा हुआ जो भैरूदानजी साहिब सेठिया ने महालचन्दजी साहिब कोठारी के पास भेजे सो जमा

६००) श्रीयुत् उदयचन्दजी डागा की धर्म-पत्नी

३६७।) धर्म ध्यान करने वाली बाइयों की ओर से

१००) श्रीयुत् चुन्नीलालजी चौथमलजी कोठारी

११) ,, मगनमलजी कोठारी

१५) ,, फूलचन्दजी पुंगलिया की वहू

२५) ,, हीरालालजी मुकीम की बहिन

२५) ,, लाभचंदजी तातेड़ की वहू

१००) श्रीयुत् अभयराजजी खजांची की बहू
१००) ,, हजारीमलजी मंगलचंदजी मारू
५०) ,, जेठमलजी सेठिया की धर्म-पत्नी
२००) ,, शिखरचंदजी घेवरचंदजी रामपुरिया
२) ,, छगनलालजी नाएटा की बहू
७) ,, मुन्नीलालजी दसाणी की बहू
१) छगनीबाई मालण
६६) एक जैनी गाया ३३ बाबत हस्ते भेरूंदानजी साहिब सेठिया
२५) श्रीयुत् माणकचंदजी सेठिया
६) ,, रावतमलजी बोथरा की बहू
३) ,, छगनलालजी कोठेद
३१) ,, नेमीचंदजी सुखलेचा
५०) ,, फकीरचंदजी पेमचंदजी
३॥≡)॥। ,, हुंडावण का

१७८८≡)॥।

१००) श्रीयुत् श्रीचंदजी अग्वाणी नयाशहर
१७६) फलोदी से चन्दा होकर आया सो जमा
६७॥≡) चुरू रेलवे में महसूल ज्याद. लेलिया जिसकी कारंवाई करने पर उन्होंने जरिये मनीऑर्डर रुपये भेजे सो जमा

६२२६=)॥।

हिसाब मतु खर्च

१८१|||=)|| चुरू में गायों के घास व रुपयों के प्रबंध के लिये श्रीमान् कोठारीजी साहिब वलवन्तसिंहजी की सेवा में निवेदन किया गया तो वहां से इन्तजाम हुआ जिसमें खर्च—

११=) नोट भेजा व तार देने में खर्च हुए

१७०|||)|| घास की गाठें ७१||ऽ२ उदयपुर से चुरू भेजी जिनकी कीमत के जंगलात वालों को ८१|||)|| व रेल किराया ८६)

———————

१८१|||=)||

५३०६|=) उदयपुर से श्रीमान् कोठारीजी साहिब वलवन्तसिंहजी ने मेघराजजी साहिब खिमेसरा, ठाकुर देवीसिंहजी धाभाई वगैरह को चुरू भेजे जो गायें खरीद कर लाये जिसमें खर्च हुवे—

३७१) गायें नग ३०६ चुरू की कचहरी फाटक से छुडाई जिसके जमा कराये ३०१) व चुरू शहर से गायें ली ७०)

२६≡) गायों के पानी पिलाने के लिये बाल्टियें २० १४||=), रस्से ११|=), ताला ≡) वगैरा खरीद में

२६०|||-)| फाटक में से गायें व शहर की गायों को कार्तिक वदी २ से कार्तिक वदी १० तक घास पाला नकाई का

२||=) गायों के लिये उदयपुर तार दिलाने वगैरा में

४६४८॥≤)॥। रेल महसूल, गायें डिब्बे में भराई नौकरों को तनख्वाह वगैरा में खर्च

३७॥।-) गायें चुरु से स्टेशन चुरु लेजाकर चुरु के आदमी रखे सो डिब्बों में चढ़ाई का महनताना व स्टेशन वालों को इनाम

५८।≤)॥। उदयपुर से गायें लेने के लिये आये सो आने जाने का रेल किराया व भोजन खर्च

४४००) स्टेशन पर ५० डिब्बों के महसूल के फी डिब्बा ८८) से

१५२।≡) गायों के लिये आदमी नौकर रखे वे चुरु से माहोली (मेवाड़) स्टेशन तक आये जिनको तनख्वाह व पीछे जाने का रेल महसूल दिया

———

४६४८॥≡)॥।

———

५३०६।=)

१००॥।=)। रतनलाल महता हस्ते खर्च हुवे

३८।≡)॥ गायों के इन्तजाम के लिये चन्दा व हुक्म अह-कामात हासिल करने के लिये बीकानेर, राजगढ़ रतनगढ़, सरदार शहर, जोधपुर और फलोदी में भ्रमण किया जिसमें खर्च के साथ सिर्फ नौकर

के रेल महसूल १६।=)।, भोजन खर्च ३॥।=)॥,
तनख्वाह के दिये १५=)।।।

५६।=)।।। कार्तिक वदी १० गायें जाने से बाकी रहीं जिनको
मगसर वदी ४ तक घास नकाया जिसमें खर्च हुवे

३) गायें चराने व इकट्ठी करने के लिये आदमी
नौकर रखे जिनको दिये

१००॥।=)।

४६४≡) चुरु से स्टेशन माहोली गायें आईं जिनके घास दाणा पानी
वगैरा के लिये आषाढ़ तक श्रीमान् कोठारीजी साहिब
बलवन्तसिंहजी ने इन्तजाम किया जिसमें खर्च का लगा

६७६।।।-)। चुरु में गायें इकट्ठी कराई गई जिनके खर्चे का इन्तजाम
कोठारीजी साहिब महालचंदजी ने किया और उन गायों को
नयाशहर के खेमराजजी लेगये जिसमें खर्च हुवे

५४६।।।=)॥ घास पालो चुरु में खरीद कर गायों को डलाया

४२।)।।। गायों की सम्भाल पर आदमी रखे जिनकी
तनख्वाह के दिये

३८८॥=) नयाशहर निवासी खेमराजजी सा० गायें डिब्बों
में लेगये सो उनके हस्ते खर्च हुए

६७६।।।-)।

२४४।।।=) श्रीमान् कोठारीजी साहिब बलवन्तसिंहजी की मार्फत अमरिया
वगैरा जानवरों के रहने के लिये मकान बनवाने तावे जीव
दया के लिये खर्च हुए

१४५)||| गोरक्षा के लिये भ्रमण कर महसूल मुआफ कराने में व चन्दा वगैरा के लिये जाने आने में गोरक्षा की पुस्तकें छपाने भेजने में ३१३)||| खर्च हुए जिस मदे १५८) इस शुभ काम में रतलाल ने दिये बाद बाकी सरे ।

७४५६-)|||

१७७०-) श्री पोते रहे जो चुरू महालचन्दजी साहिब कोठारी की दूकान पर जमा हैं जिसके लिये स० हाल में मुकाम बीकानेर पूज्य श्री हुक्मीचदजी महाराज के हितेच्छु श्रावक मंडल की कमेटी हुई जिसमें यह तजवीज ते पाई कि १७७०-) कोठारीजी साहिब महालचंदजी की दुकान पर जमा रहें और ये रुपये जीव दया के काम में कमेटी की राय से खर्च होवें। जब तक रुपये खर्च न होवें, तब तक व्याज उपजा कर चुरू कोठारीजी साहिब जमा याधे और रुपये रतनलाल महता खाते दुकान पर जमा हैं सो नामे मांड मंडल कमेटी का जमा करें। व्याज उपजे जिसकी इत्तला मंडल कमेटी में भेज दी जावे। यदि किसी कारण से व्याज न उपजे तो मडल कमेटी रतलाम लिख देवे ताकि व्याज उपजाने बाबत कमेटी मुनासिब कार्रवाई करेगी।

६२२६=)|||

नोट—हिसाब की जाच की भँवरलालजी बाफणा

इसके बाबत कोई सज्जन कच्चा हिसाब देखना चाहे तो वह श्रीमान् कोठारीजी साहिब की हवेली और चुरू कोठारीजी साहिब महालचदजी की दुकान पर देख लेवें।

'धन्यवाद'

बीकानेर गवर्नमेण्ट ने जो महसूल की मुआफी फरमाई और कार्यकर्ताओं ने सहानुभूति दिखलाई, तथा जिन जिन महानुभावों ने सहायता की और चूरू शहर के कोठारी सज्जनों ने जीव-रक्षा मे धर्म समझ कर पूज्य श्री का चातुर्मास कराकर मरती हुई गायों की रक्षार्थ घोषणा की उन सब महानुभावों को सहर्ष कोटिशः धन्यवाद देता हूँ। बड़े हर्ष का विषय है कि भूख से पीडित गायों की सहायता के लिये चूरू में पूज्य श्री के दर्शनार्थ पधारे हुए सज्जनों से गायों की सहायता के लिये चन्दा बाबत अपील की, और उदयपुर गायों की रक्षा बाबत अर्ज लिखी गई तथा बीकानेर, फलोदी जाकर सहायता बाबत कोशिश की तो सभी महानुभावों ने यथाशक्ति सहायता प्रदान की जिनकी शुभ नामावली 'जमाबन्दी रकम' की सूची से विदित होगी। रकम जो खर्च हुए बाद पोते रही जिसके लिये बीकानेर में 'मंडल' की कमेटी ने जो ठहराव किया वह हिसाब में दर्ज है। इस दान का कितना बडा महत्त्व है जिसका सब हाल रिपोर्ट पढने से पाठकगण को मालूम होगा कि पारस मणि के स्पर्श से लोहा भी सोना बन जाता है, उसी प्रकार गायों के प्रति प्रेम प्रदर्शित कर दान देने से

सैंकड़ों गायों को अभयदान मिला। इसलिये उन सब दानी महानुभावों को सहर्ष धन्यवाद देता हूँ कि जिन्होंने इस शुभ कार्य में सहायता प्रदान कर गौओं की रक्षा की है।

आशा है कि जो तजवीज 'मंडल' की कमेटी ने तै की है उससे सब महानुभाव सहमत हो कर आइन्दा जीव-रक्षा के कार्य में हर समय सहायता प्रदान कर अनुगृहीत करेंगे।

जिन महानुभावों ने सहायता प्रदान की उन सज्जनों को ऊपर धन्यवाद दिया जा चुका है, परन्तु इसके अतिरिक्त निम्न लिखित सज्जनों को धन्यवाद देना भी पूर्ण आवश्यक है।

नया शहर निवासी खेमराजजी साहिब चूरू जाकर बाकी गायें लाये अतः आपको सहर्ष धन्यवाद दिया जाता है। मेघराजजी साहिब खिमसेरा तथा दूसरे सज्जनों ने भी इस काम में दिलचस्पी ली इसलिये आप सबको सहर्ष धन्यवाद देता हूँ।

'अन्तिम निवेदन'

सब दया प्रेमी महानुभावों की सेवा में निवेदन है कि जो अनाथ-रक्षा, गायें, बकरे अमरिया ताने कोई शुभ कार्य

में सहायता प्रदान करना चाहें वे "वर्द्धमानजी साहिब प्रेसिडेण्ट रतलाम मंडल" के पास भेज देवें। वे रुपये शुभ काम में खर्च किये जायंगे और हर साल हिसाब की रिपोर्ट प्रकाशित की जावेगी और वह दानी महानुभावों के पास भेज दी जावेगी। विशेष जानकारी के लिये जैन शिक्षण संस्था उदयपुर मेवाड़ पेरोकार जीवदया के नाम से पत्र व्यवहार करें।

निवेदक—

रत्नलाल महता,

संचालक-जैन शिक्षण संस्था, उदयपुर मेवाड़.

जैन शिक्षण संस्था
का
संक्षिप्त विवरण

श्री जैन श्वेताम्बर साधुमार्गी शिक्षण संस्था उदयपुर में निम्न लिखित विभाग है। (१) श्री जैन ज्ञान पाठशाला, (२) सार्वजनिक पाठशाला, (३) श्री जैन कन्या पाठशाला, (४) श्री जैन ब्रह्मचर्य्याश्रम, (५) श्री महावीर पुस्तकालय।

१. श्री जैन ज्ञान पाठशाला में विद्यार्थियों को विद्वान सदाचारी, धर्म प्रेमी, बलवान बनाने की चेष्टा की जाती है। धार्मिक परीक्षा में श्री हुकमीचंदजी महाराज के हितेच्छु

गौ-सेवक रत्नलाल महता उदयपुर

श्रावक मंडल के कोर्स के अनुसार धार्मिक शिक्षा दी जाती है। और वहां परीक्षा देकर प्रमाण पत्र प्राप्त करते हैं प्राकृत की खास तौर पर शिक्षा दी जाती है। संस्कृत में व्याकरण की प्रथमा, साहित्य की प्रथमा-मध्यमा तक की पढाई कराई जाती है। अंग्रेजी में मेट्रिक तक की योग्यता करा दी जाती है। इसके अतिरिक्त मुनीमात (हिसाब परीक्षा) का कोर्स भी रक्खा गया है और औद्योगिक शिक्षा भी दी जाती है।

२ सार्वजनिक पाठशाला में उच्च जाति के बालकों को धार्मिक शिक्षा के साथ २ व्यावहारिक शिक्षा दी जाती है।

३. श्री जैन कन्या पाठशाला में कन्याओं को धार्मिक शिक्षा के साथ गृहस्थोपयोगी व्यावहारिक शिक्षा, सीना, पिरोना आदि सिखलाया जाता है।

४. ब्रह्मचर्य्याश्रम में सशुक्ल, अर्द्ध-शुक्ल, नि:शुक्ल तीनों प्रकार के विद्यार्थी प्रविष्ट किये जाते हैं।

५ महावीर पुस्तकालय—जोकि पाठशाला के कर्मचारियों और अध्यापकों की सहायता से स्थापित किया गया है। इसमें धार्मिक और नैतिक उत्तम २ पुस्तकों का संग्रह है।

पूर्ण विवरण संस्था की रिपोर्ट के पढने से ज्ञात हो सकता है। इस संस्था का सारा काम दानवीर महानुभावों की सहायता से चलता है।

इसके अतिरिक्त मेरी ओर से निम्न लिखित संस्थाएँ है। जिनकी आय-व्यय आदि का सम्बन्ध मेरा निजी है। (१) जैन

रत्न हुनरशाला, (२) उत्तम साहित्य प्रकाशक मण्डल, (३) जैन धर्म पुस्तकालय।

१. श्री जैन-रत्न हुनरशाला में स्वदेशी हर किस्म के कपड़े बुनने का, बटन बनाने वगैरा का काम सिखलाया जाता है। जो माताएँ व बहिनें सूत कात २ कर देती हैं, उनको पूरा मिहनताना दिया जाता है। बेकार व्यक्तियों को थोड़े समय में ही काम सिखला कर उद्यमी बना दिया जाता है। हर किस्म के हाथ कते सूत से बिना चर्बी लगे हुए सुन्दर व मजबूत वस्त्र बनाए जाते हैं। इनकी बिक्री बंबई, मद्रास, मारवाड़, भूपाल, रतलाम, सैलाना, सरदारशहर, चुरू आदि स्थानों में भली भांति होती है। इसके अतिरिक्त हाल ही में उदयपुर में "भूपाल प्रदर्शिनी हुई जिसमें इस हुनरशाला के सामान को हिज हाइनेस महाराणा साहिब बहादुर तथा अन्य बड़े २ सज्जनों ने ५५५ तरह का कपड़ा निरीक्षण कर प्रसन्नता प्रकट की और इसके फल स्वरूप पहिली श्रेणी का प्रमाण-पत्र व सनातन धर्म महामंडल काशी से" शिल्प विशारद उपाधि आदि का मान-पत्र मिला है। हरएक महानुभाव को मेवाड़ में बने हुए स्वदेशी वस्त्र का प्रचार करना चाहिये। इसमें बना हुआ कपड़ा इतना मजबूत व सस्ता है कि एक साधारण मनुष्य १२) रुपया सालाना मे अपना काम चला सकता है। जो कोई सज्जन एक साल भर पहिनने का कपड़ा मंगवाना चाहें वह २) रुपये पेशगी के साथ पूरे पते सहित ऑर्डर भेजे, ताकि उसके पास बाकी रुपयों की वी० पी० से माल भेज दिया जावेगा। साल भर पहिनने का कपड़ा इस प्रकार होगा। कमीज २ का

कपड़ा ६ वार, कोट २ का कपड़ा ७ वार, धोती जोडा १, टोपी १, थैला १, रूमाल १, पछेवड़ी १, तोलिया १, आसन १, पगड़ी १.

नोट—धोती जोड़े का अर्ज ४२ से ४८ इञ्च तक और कोट और कमीज के कपड़े का अर्ज २७ से ३२ इञ्च तक है।

२. जैन उत्तम साहित्य प्रकाशक मंडल-इसमें बहुत उपयोगी पुस्तकें प्रकाशित होती हैं। इसके अतिरिक्त निम्न लिखित पुस्तकें यहां मिल सकती हैं:—

(क) गच्छाधिपति पूज्य श्री १००८ श्री जवाहिरलालजी महाराज साहिब के व्याख्यान संग्रह से पुस्तकें अहिंसा व्रत ।), सकडाल पुत्र की कथा =), धर्म व्याख्या, सत्यव्रत ≈), सत्य-मूर्ति हरिश्चन्द्र तारा ।).

(ख) उत्तम प्रकाशक मंडल से प्रकाशित पुस्तकें —

जैन-धर्म प्रवेशिका =), जैन-धर्म शिक्षावली पहिला भाग)॥, जैन-धर्म शिक्षावली दूसरा भाग =), वर-दान)॥, आत्म रत्न अनुपूर्वी -)॥ नित्य स्मरण -), जैन उत्तम स्मरण)॥।, उत्तम विचार)॥।, सुख शांति का उपाय =), कल्पवृक्ष -), शरीर सुधार)॥।, उत्तम कार्य के लिये चेतावनी (भेंट), मारवाड पंजाब भ्रमण (भेंट), संस्था की रिपोर्ट (भेंट), जैन-ज्ञान प्रकाश पहिला भाग =), दूसरा भाग ≡), मेरी भावना)।, जैन रत्न भजन संग्रह)॥ और भी पुस्तकें निकल रही हैं।

नोट—जो भाई अपने शहर व ग्रामों में धर्म ... स्थापित करना चाहें वे हमसे पुस्तकें मंगवावें, कारण हमारे यहां अन्य पुस्तकालयों से प्रकाशित हुई पुस्तकें मौजूद रहती हैं। इसलिये पुस्तकें मंगवा कर अवश्य ... उठावें। पुस्तकों की पूरी सूची जैन ज्ञान प्रकाश द्वितीय भ... में है।

२. जैन धर्म पुस्तकालय—इसमें जैन-अजैन साहित्य की पुस्तकों का अच्छी संख्या में संग्रह है।

निवेदक—

रतलाल महता,

सञ्चालक—

श्री जैन श्वे. साधुमार्गी शिक्षण संस्था,

उदयपुर, (मेवाड़),

जैन उत्तम साहित्य पु० नं० २२.

* वन्देवीरम् *

रत्न प्रभु प्रार्थना संग्रह

संग्रह कर्त्ता—

रत्नलाल महता

प्रकाशक—

जैन 'रत्न' उत्तम साहित्य प्रकाशक मण्डल,

उदयपुर (मेवाड़).

मुद्रक—

के. हमीरमल लूणियां,

दि डायमण्ड जुबिली प्रेस, अजमेर.

प्रथमावृत्ति १०००	वीर सम्वत् २४५८. विक्रम सम्वत् १९८९	मूल्य एक आना

दोशब्द

विषयी मनुष्य तीन बातों के लिए चिंता करते हुए मरते हैं। (१) इन्द्रियों के भोगों से मेरी तृप्ति नहीं हुई। (२) मन की बहुतसी आशाएँ अधूरी रह गईं। (३) परलोक के लिए कुछ भी पुण्य साथ नहीं लिया। इन तीनों रोगों की शान्ति के लिए यह भगवत् नाम की प्रार्थना अमोघ दवा है। यदि इसके एक समय पढने से चित्त को शान्ति मालूम हो तो हमेशा प्रार्थना करना चाहिए। ऐसा करते-करते जब अपने दुष्ट कार्यों से घृणा हो जावे तब मन में समझ लेना चाहिए कि अब मेरा रोग हटा है और मेरे हृदय में भगवान बसे हैं। अतः ज्ञानाग्नि के द्वारा उपरोक्त तीनों रोगों को नाश कर तीन रत्न ज्ञान, दर्शन, चारित्र को प्राप्त कर अन्तिम समय में साथ ले जाना चाहिए। जिससे परलोक में नरकादि के दारुण दुःख न उठाना पड़े। यदि कोई कमजोर मनुष्य प्रभु प्रार्थना करने लगे तो उसको भी अन्त में प्रभु-बल मिल ही जाता है। जो मन में कामना (फल की इच्छा) रख कर प्रार्थना करता है उसको अल्प फल मिलता है। पर निष्काम प्रार्थना करने वाला मनुष्य महा विदेह क्षेत्र में उत्पन्न होकर तीर्थंकर देव की प्राप्ति करता है। निष्काम

प्रार्थना ससारिक कार्यों से भी दूर हटाकर अक्षय, अमर, शाश्वत मोक्ष के सुखों को देती है। अतः निष्काम प्रार्थना करना ही श्रेष्ठ है।

अन्त में मैं सर्व महानुभावों से नम्र प्रार्थना करता हूं कि वे सुवह-शाम अवश्य भगवत प्रार्थना किया करें। यही उनके मनुष्य भव पाने का फल है। ऐसे तो पशु भी जन्मते मरते हैं। लेकिन मनुष्य और पशु में यही अन्तर है।

॥ इति शुभम् ॥

फाल्गुन कृष्णा १४ }

निवेदक—
रतलाल महता.

* वन्दे वीरम् *

रत्न प्रभु प्रार्थना संग्रह ।

मंगलाचरण

जो देवाणं वि देवो जं देवा पंजलि नमंसंति ।
तं देवदेवमहियं, सिरसा वंदे महावीरं ॥

अर्थ—जो देवों के भी देव हैं, जिनको असंख्य देव नमस्कार करते हैं, ऐसे देवाधिदेव सकल जीवों को सुख का मार्ग बताने वाले भगवान महावीर स्वामी को नमस्कार करता हूं ।

---

(१)

हे जगत् शिरोमणि ! आप भू-मंडल के रक्षक, करुणा-सागर हैं। आपने समस्त जीवों को आत्म तुल्य गिनकर उनको सुख का मार्ग दिखलाया है। संसारी जीवों को भव-बन्धन से छुड़ाने के लिए ग्रामानुग्राम विचर रक

उपदेश दिया है और मोह ग्रसित विषयी जीवों को तत्त्व ज्ञान करा उनका उद्धार किया है। अतः आपको नमस्कार हो।

---

(२)

हे जगत्तारक प्रभो! मैं आपके उपदेशित मार्ग का सब मानव बंधुओं को ज्ञान कराऊंगा। क्योंकि—आप तरण तारण जगत् रक्षा करने वाले हैं। मेरे सब जीव बंधु हैं, अतएव किसी जीव के साथ वैर-विरोध नहीं करूंगा, ईर्ष्या नहीं करूंगा, मत्सर भाव नहीं धरूंगा, दुःख नहीं दूंगा, अपराधी पर क्रोध नहीं करूंगा, मिथ्या-अभिमान नहीं करूंगा, लोभ-सागर में डूबने के मार्ग को ग्रहण नहीं करूंगा, किसी को छलकर नहीं ठगूंगा, किन्तु सब प्राणियों को मित्रवत् गिन सबसे मैत्री-भाव रक्खूंगा, दुःखी जीवों को उससे मुक्त करने के लिए उन पर करुणा करूंगा और सुखी बांधवों को देखकर प्रसन्न होऊंगा पर ईर्षा नहीं करूंगा। अतः हे नाथ! ऐसी विमल बुद्धि दीजिए।

---

(३)

हे दयामय! आपकी आज्ञानुसार चलने से मोक्ष की प्राप्ति होती है। इसमें जरा भी संशय नहीं है। आपके

बतलाए हुए मार्ग पर चलने से व आपका उपदेश ग्रहण करने से प्राणी मात्र को आनन्द-मंगल होता है। अतः हे प्रभो! ऐसी शक्ति प्रदान करो जिससे आपके उपदेशित मार्ग पर चल सकूं!

---

(४)

हे जगत् वत्सल प्रभो! आपने वत्सल भाव धर भव्य जीवों को सन्मार्ग दिखलाया है। सत्य का स्वरूप समझाया है, कर्त्तव्याकर्त्तव्य का बोध कराया है, जड़ और चैतन्य के लक्षण बतलाए हैं। अहो! जिस पुरुषार्थ के बल से मैंने भव-वृद्धि की, उसी पुरुषार्थ के बल से आपने केवल ज्ञान प्राप्त किया। देह की ममता तज, विषय-सुखों की लालसा त्याग, क्षणिक पदार्थों का मोह त्याग, देह को विनाशी समझ आप आत्म-ध्यान में मग्न हुए हैं, निज गुण में रम कर अपने शुद्ध स्वरूप को प्रगट किया है। अतएव हे पूज्य! ऐसी सद्बुद्धि दो जिससे मैं आपका अनुकरण कर निज-स्वरूप को पहचानूं!

---

(५)

हे जगतारण प्रभो! इस संसार में माता-पिता अपने पुत्र को यह समझ कर सुख देने का उपाय करते हैं कि

यह हमारी वृद्धावस्था में सेवा करेगा। अन्य सम्बन्धी वर्ग भी स्वार्थ से ही प्रेम करते हैं। लेकिन आपने तो बिना किसी स्वार्थ एवं प्रत्युपकार की इच्छा से जीवों को सुख का मार्ग दिखलाया है। जगत् का उद्धार करने के लिए कठिन परीषहों को सहन किया, दुर्जनों–द्वारा नाना कष्ट पाते हुए भी उनके कल्याण की इच्छा रख कर सदुपदेश दिया है। धन जैसे दशवें प्राण को बारह मास तक देकर गरीबों का दारिद्र नाश किया है। अतः आप जैसा कोई उपकारी नहीं हैं हे शरण्य! ऐसी बुद्धि दो जिससे हम भी आप जैसे उपकारी एवं निःस्वार्थी बने।

---

(६)

हे जगत्प्रभो! आप में अनन्त गुण हैं। उनकी गणना करने के लिए यदि सरस्वती जी भी पृथ्वी को कागज, स्वयं भूरमण समुद्र को दवात और सुमेरु पर्वत की कलम बनाकर लिखने बैठें तो वे भी पार नहीं पा सकतीं हैं, फिर मुझ जैसा अज्ञानी एवं साधन रहित उनका पार कैसे पा सकता है। अतः हे नाथ! ऐसी निर्मल मति दो जिससे आप जैसा गुणवान बनूं।

---

(७)

हे भगवन् ! जगत् में कीड़ी से लगाकर हाथी पर्यन्त सब जीव अपने ही सुख के लिए उपाय करते हैं। उसी तरह रंक से लेकर चक्रवर्ती पर्यन्त सब मनुष्य अपने को सुखी करने के लिए दूसरों को दुःख देते हैं। लेकिन आपने अपनी सर्व संपत्ति को जगत् के कल्याणार्थ व्यय की, परोपकार में ही अपना हित समझा। और मनुष्य से लेकर एकेन्द्रिय पर्यन्त सर्व जीवों को आत्म तुल्य समझ उनके सुख के उपाय किए हैं। अतएव हे नाथ ! आपकी सी परोपकार वृत्ति का मेरे में कब आविर्भाव होगा।

---

(८)

हे निष्कामी प्रभो ! इस जगत में जितने जीव दूसरों को सुख देने का यत्न करते हैं, वे उससे प्रत्युपकार की अपेक्षा रखते हैं लेकिन आपने निःस्वार्थ भाव से उपकार किया है। प्राप्त वैभव को त्याग दिया, संबंधियों से पृथक् हुए, संसार के सब सुखों को छोड़ केवल आत्मिक सुखों की अभिलाषा रखी। और धर्म पिपासु जीवों को आत्मिक सुख प्राप्त कराने के लिये उपदेशामृत बरसाया। इसलिये हे नाथ ! मेरे में ऐसी परोपकार बुद्धि का कब उदय होगा ?

हे दीनानाथ ! शीघ्र ही उदय करो जिससे मैं भी निष्कामी बन कर आत्म सुखों का उपभोग करूं।

---

(९)

हे कर्म विजेता प्रभो ! यदि कोई मेरा बुरा चिंतवन करे, कुवचन बोले, दुख देने की चेष्टा करे तो मैं उसको शत्रु मान, उससे बदला लेने का उपाय सोच दुखी करता हूं। लेकिन आप अपने कर्मों का ही दोष मानते हैं। क्योंकि—कर्मों का उदय होने से दुर्बुद्धि सूझती है, कुमार्ग में प्रवृत्ति होती है, दूसरों का बुरा करने के कुविचार होते हैं, जन्म-मरण के दुख उठाने पड़ते हैं। यही जानकर आपने दुष्टाष्ट कर्मों के नाश करने का विचार किया, प्रवृत्ति की। किन्तु मैंने उनको मित्र मान कर अहो रात्रि त्रिविध प्रकार के अधम कार्य किये। अतः हे नाथ ! मेरे हृदय में विराजिए जिससे मैं अधम कार्य का नाश कर शुभ कार्य करने की शक्ति प्राप्त कर सकूं ऐसी मेरी अन्तः करण की भावना है।

---

(१०)

हे अरिहन्त देव ! दारुण दुखदायी विषय वासनाओं को मैंने सुखकर माना है। आपने उनको दुःखदायी

ज्ञान छोड़ दिए हैं। इन विषय वासनाओं एवं जन्म जरा मरण के दुखों को करने वाली चौरासी लाख योनियों में भ्रमण किया। और इस असार संसार में पुण्य को छोड़ कर नर्क-तिर्यंच गति में भी दुःख उठाये हैं। उनका मैंने सत्कार किया है। लेकिन हे नाथ! अब ऐसी सद्बुद्धि दो जिससे विषय-कषाय से पीछे हट, आत्म स्वरूप में लीन होऊं।

---

(११)

हे दीनानाथ! समय के जाते देर नहीं लगती है, मेरी आयु भी पल पल घटती जा रही है, यम के दूत सिर पर खड़े हैं, काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ, रूपी चोर आत्म धन को चुराते जा रहे हैं। भव बंधनकारी प्रपंच दिन पर दिन बढ़ते जा रहे हैं फिर भी मुझे मरघट का ध्यान नहीं आता है, मन सांसारिक सुखों के लिए दौड़ा-दाड़ करता है, वह ममता रूपी जल में स्नान कर कर्त्तव्य विमुख बना देता है, ईर्षा, दंभ के गहरे कुए में उतारता है सतसंग, गुरु सेवा से दूर करता है, पुण्य के पवित्र मार्ग से दूर भगाता है। अतः हे प्रभो! मैं इन दोषों से शीघ्र दूर हो जाऊं ऐसी तीव्र बुद्धि प्रदान करो।

---

(१२)

हे तीर्थंकर प्रभो ! आपने आगम (शास्त्र) में फरमाया कि यह मानव देह फिर मिलने वाली नहीं है, इसका प्राप्त करना बड़ा दुर्लभ है। क्योंकि समय २ के बीतने से आयु घट रही है, धर्म नहीं करने से अमूल्य आयु व्यर्थ बीती जा रही है, एक दिन यह सुन्दर शरीर नाश हो जायगा, अंग प्रत्यंग शिथिल पड़ जायंगे, बाल सफेद हो जायंगे, दांत गिर जायंगे, शरीर थर थर कांपने लगेगा, और अशक्त हो जायगा। अर्थात् बुढ़ापा आजायगा। तब सब संबंधी दूर खड़े हो जायंगे. संसार में सब का व्यवहार स्वार्थमय है। यह भी है कि बाल्यावस्था तथा जवानी का गया समय वापिस नहीं आ सकता है। भविष्य में क्या होनेवाला है इसको कोई नहीं जान सकता है। इससे जिसने स्वपर का भेद न समझ आत्म गुणों की प्राप्ति नहीं की उसने इस मनुष्य देह को व्यर्थ ही पाई। क्योंकि परमार्थ शून्य जीवन पशु तुल्य है। भव सागर के दुख रात दिन सताते हैं, काम, क्रोध, आदि शत्रु आत्म गुणों को नाश करते हैं, माया तिर्यंच गति में लेजाती है, आशा तृष्णा रूपी खाई का पार नहीं है, ग्राम धन सब नाश हो जायगे, सुखदायी वस्तु दुःख देने वाली होगी, भोग,

रोग समान दीखेंगे, कुटुम्बी वर्ग के लिए हाय २ करके उपार्जन किए पाप स्वयं जीव को भोगने पड़ेंगे। ऐसे आप के उपदेश को मुझ पामर ने अनेक बार सुना पर इस संसार से वैराग्य के भाव पैदा नहीं हुए। न मैंने आप जैसे निःस्वार्थी सत्यवक्ता परमात्मा के कथन का सत्कार किया, न उसको आत्म कल्याणकारी जान कर श्रद्धान ही किया, न संसार से पार होने का उत्तम मार्ग ही जाना। अतः हे भगवान्! ऐसी बुद्धि दो जिससे मैं सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र को अंगीकार कर संसार सागर से पार हो जाऊं। यही मेरी विनती है।

---

(१३)

हे कृपासिंधो! आगम में अनेक जगह पढ़ा है कि पाप करने वाला अन्त में दुखी होता है। क्योंकि—बाजरे के आटे से गेहूं की रोटी नहीं बन सकती, बंबूल के पेड़ से आम का फल नहीं मिल सकता—जैसा बीज होगा वैसा ही पेड़ खड़ा होगा। सारांश यह कि—पाप से कभी सुख नहीं मिल सकता है। जो विष खाता है उसकी मृत्यु होती है, अमृत-पान करने वाला अमर होता है। अन्त में सब संपत्ति को छोड़कर मरना होगा। फिर क्यों उसके लिए पाप कमाता है। यह दुर्लभ देह व्यर्थ गई तो

फिर सीधा नर्क का रास्ता खुला है। अचानक मृत्यु के आने पर मन की बात मन में रह जाती है। यह अटल नियम है कि यह मानव-देह कच्चे घड़े के समान है, जिसने इसको धारण की उसको अवश्य छोड़नी पड़ेगी, कीड़ी, हाथी की आत्मा समान है, पर कर्मोदय से छोटा बड़ापन है। यह कुटुंबियों का संयोग भी देखते २ नष्ट हो जायगा, संसार में लेश मात्र भी सुख नहीं है, हां जो कुछ तन, मन, धन से किये सुकार्य-कुकार्य हैं वेही साथ जांयगे। ऐसा अमूल्य सद्ज्ञान कई जगह पढ़ा लेकिन उसका हृदय पर जरा भी प्रभाव नहीं पड़ा। अनेक स्तोत्र श्लोक, ग्रंथ, पद, लावनी, कंठस्थ करली पर उनका सार ग्रहण नहीं किया, केवल पंडित कहलाने को ही रटे, शुभ कार्य वड़े कहलाने के लिए किए, धार्मिक क्रियाएँ कीर्त्ति के लिए की, संसार में नाम फैलाने के लिये परोपकार के कार्य किए। इतने कार्य कर लेने पर भी अन्तःकरण को शान्ति नहीं मिली। अतः हे परमात्मन्! मैंने आपके फरमाए हुए उपदेश पर भी श्रद्धा नहीं की। इससे मेरे हृदय को ऐसा पवित्र कीजिए जिससे अन्तःकरण की मलिनता दूर हो जाय और शुद्ध हृदय में आपकी भक्ति का विकास हो।

(१४)

हे निरंजन प्रभो ! आपने भव्य जीवों के कल्याणार्थ आगम में बतलाया है कि—सदाचार. सत्य के समान संसार में और कोई श्रेष्ठ वस्तु नहीं है, धाम, जमीन, विषय, स्त्री-पुत्रादि छोड़ने पड़ेंगे इससे इनमें उत्तम समय न बिताओ, ममता छोड़ सब पदार्थों पर समता रखो. सदा सत्संग करो, प्रतिदिन दया-दान, प्रभु प्रार्थना करो, धर्मरूपी अमूल्य रत्न कांच समझ व्यर्थ न फेंक दो दुराचार को अग्नि समझ सदा दूर रहो, पर धन और पर स्त्री को विष के समान समझो, संसारिक झंझटों से परांमुख हो जाओ, देव, गुरु और धर्म की निष्काम भक्ति करो, इस प्रकार की अमूल्य देशना का मेरे पत्थर—हृदय पर कुछ भी असर नहीं हुआ। प्रभो ! आपकी एक ही देशना में असंख्य जीवों को सद्बोध हुआ, अनेक वैरागी बन गये पर मुझ जैसा अभागा कौन होगा, जिसने हजारों पुस्तकें पढ़ डाली पर कुछ न कर सका। इसी कारण से आत्मानंद को छोड़कर पुद्गल में आनन्द माना। अतः हे नाथ ! मेरी विपरीत मति को सुधार दो जिससे आपके उपदेश का असर हो और मोक्ष के मार्ग को ग्रहण करूं। ऐसी मेरी प्रार्थना है।

——

(१५)

हे वीतरागी प्रभो ! आज मेरा प्रोषध व्रत का दिन सफल हुआ, मेरे जीवन की शुभ घड़ी है, जिसमें मिथ्यास्वरूपी अन्धकार दूर हुआ और सम्यक्त्वरूपी सूर्य मेरे हृदय में प्रकाशित हुआ है। आज मेरे नेत्र सफल हुए कि आपके पवित्र आगमों का अवलोकन किया। मेरी जीभ भी सफल हुई क्योंकि उससे आपकी स्तुति वगैरह की। आज मेरा शरीर तीर्थरूपी जल में स्नान करने से पवित्र हो गया है, मेरे पूर्व संचित कर्म विनाश हुए इससे दुर्गति में जाने का लेशमात्र भी भय नहीं रहा। यह अपार संसार एक क्षुद्र कूप तुल्य मालूम पड़ता है, मोह रिपु का भय नहीं, आशारूपी पिशाचिनी पकड़ नहीं सकती, विषय-भोग सता नहीं सकते। यह सब पतित उधारन के ज्ञान का प्रताप है जिससे मुझे सम्यक्त्वरूप सूर्य मिल गया है। अतः हे नाथ ! यह सम्यक्त्वरूपी सूर्य सदा मेरे हृदय में प्रकाशित रहे और शीघ्र ही अक्षय सुख—आत्मानंद को प्राप्त करावे। यही मेरी अन्तिम प्रार्थना है। फाल्गुन कृष्ण १४।

रतनलाल महता.

आवश्यक सूचना

१. जैन शिक्षण संस्था—इस संस्था में बालक बालिकाओं को विद्वान, सदाचारी, धर्म-प्रेमी, बलवान बनाने की पूरी चेष्टा की जाती है। धार्मिक विषय के साथ संस्कृत, प्राकृत, अंग्रेजी, महाजनी, व्यापारिक शिक्षा आदि का ज्ञान भली भांति स्वल्प समय में कराया जाता है। इस पढ़ाई के साथ ही हुनरकला का भी ज्ञान कराया जाती है।

२. जैनरत्न हुनरशाला—इस हुनरशाला में स्वदेशी हर किस्म का कार्य सिखलाया जाता है। विधवा सधवा बहिनों से सूत कताकर उनको पूरा महिनताना दिया जाता है। बेकारों को थोड़े ही समय में उद्यमी बना दिया जाता है।

३. जैनरत्न साहित्य प्रकाशक मंडल—से नाना तरह की पुस्तकें तीर्थंकर, विरहमान, नवतत्त्व, लेश्या के चार्ट तैयार होंगे व २५ पुष्प व ज्ञान दर्पण तैयार हो गये हैं। जो भाई अपने शहर व ग्रामों में धर्म पुस्तकालय स्थापित करना चाहें वे हर किस्म की हर जगह की पुस्तकें हम से मंगाकर लाभ उठावें।

पता—

रत्नलाल महता,

संचालक-जैन ज्ञान पाशालठा; उदयपुर (मेवाड़)

वचनामृत

(१) एकाग्रह चित्त होकर प्रभु के गुणों का चिन्तवन करने का नाम ही वास्तविक स्तुति और प्रार्थना है। इसके द्वारा आत्मा धीरे २ उन्नत होती हुई परमात्मा अवस्था तक पहुंच जाती है चाहिये हृदय की सरलता।

(२) जिन्हें शान्ति प्राप्त करने की इच्छा हो उन्हें मनो विकारों को दूर करने का प्रयत्न करना चाहिये।

(३) जब तक पाशविक वृति मधुर जान पड़ती है तब तक मनुष्य आत्मोन्नति नहीं कर सकता।

(४) अच्छे विचारों, अच्छे कर्मों और अच्छे उद्योग में लगे रहना यह एक बहुत बड़ा सुख है।

(५) मन और शरीर को पवित्र रक्खो, विषय वासनाओं का त्याग करो, स्वार्थ बुद्धि को हटादो और उच्च तथा पवित्र जीवन व्यतीत करो।

(६) प्रातःकाल उठकर आत्म निरीक्षण करो, अपने भीतर गहरी नजर डालकर देखो और जो जो दोष

हैं उन्हें दूर करने का संकल्प करो तथा गुणों को बढ़ाने में यत्नशील बनो।

(७) उस मनुष्य के सुख और आनन्द की कोई सीमा नहीं, जिसने अपने हृदय को राग, द्वेश, काम क्रोधादि कषायों और कुत्सित् इच्छाओं से रहित कर लिया है और संसार को अनन्त दया और प्रेम से देखता हुआ प्राणी मात्र के लिये शान्ति का इच्छुक है।

(८) अपने मनको विशुद्ध बनाओ, जिससे जीवन सुन्दर उदार, सुखी और शान्त बन जावेगा।

(९) जब खुद के दोषों के लिये अपने आत्मा को देखो तो कड़ी और तीव्र दृष्टि से देखो, परन्तु जब दूसरों को देखो तो अनुकम्पा से देखो। जैसे दलदल भूमि से कीचड़ उछलता है, उसी प्रकार साधारण मनुष्यों के मुंह से गालियां और बलहने निकलते हैं, उन्हें आप मत निकालो।

(१०) बुद्धिमान मनुष्य वही है जो संकट उपस्थित होने पर न उनसे मुंह छिपाता है और न घबराता है बल्कि शान्ति के साथ स्थिर रहता है।

आवश्यक सूचना

यदि आप नित्य नियम में मन की प्रवृत्तियों को रोकना चाहते हैं और हमेशा ६ महिने की तपस्या के फल से ज्यादा लाभ लेना चाहते हैं तो प्रभू प्रार्थना व ज्ञान दर्पण नं० १, २, ३, ४, ५ नित्य नियम में अवश्य देखिये।

भवदीय—
रत्नलाल महता.

जैन उत्तम साहित्य पुष्प नं १७.

* कल्प-वृक्ष *

अर्थात्

नवकार मन्त्र

प्रेरक—

रतलाल महता

प्रकाशक—

जैन उत्तम साहित्य प्रकाशक मण्डल
उदयपुर (मेवाड़)

मुद्रक—

दि डायमण्ड जुबिली प्रेस, अजमेर

प्रथमावृत्ति } वीर संवत् २४५६. { मूल्य
२००० } वि० सं० १९८७ { -)

प्रस्तावना

जैन धर्म में 'नवकार मंत्र' की बड़ी बड़ाई की गई है। सच बात तो यह है कि वह बड़ाई भी उसकी बड़ाई को पूरा पूरा नहीं बता सकती। हमने इस पुस्तक में इस बात का प्रयत्न किया हैं कि हम उस महामंत्र को बिलकुल सीधी सादी बोली में संक्षेप में समझायें।

बहुत से लोग बिना समझें बूझे ही मंत्रों का जप करने लगते हैं इससे उनको मन इच्छित लाभ नहीं होता। आशा है कि सब लोग जैनी, सनातनी, आर्यसमाजी, तथा किसी भी मत के मनुष्य हमारी इस पुस्तक द्वारा नवकार मंत्र को समझेगे, और उससे लाभ उठायेंगे।

जिस प्रकार कल्पवृक्ष के नीचे जाकर आदमी जो कुछ चाहता है उसे पाता है उसी प्रकार नवकार मंत्र का जप करके मनुष्य अपनी मनचाही सफलता पा सकता है।

नवकार के कई अर्थ हैं। यह शब्द बड़ा ही गम्भीर है। अतः इसका ध्यान करने से वे सब अर्थ एक एक करके हमारे मन में घूम जाते हैं और केवल इसीसे मनुष्य सुखी और सफल मनोरथ होजाता है।

(१) **नवकार—नवीन करने वाला;** इससे मनुष्य की आत्मा शुद्ध बनती है, संसार के सारे मैल छूट जाते हैं ।

(२) **नवकार—नहीं करने वाला;** यानी आवागमन को नहीं करने वाला । इससे आत्मा मोक्ष को प्राप्त होती है ।

(३) **नवकार—नयोकाम;** अर्थात मोक्ष का काम; इससे संसारी कामों का मोह छूटता है ।

(४) **नवकार—बे काम;** संसार के काम न करना ही बेकारी कहलाती है, इससे एकान्त वास करके ध्यान होता है ।

(५) **नवकार—विकार रहित;** इससे पाप छूटते हैं । यह मंत्र मारण, उच्चाटन इत्यादि विकारों से रहित है ।

इस मंत्र की महिमा हम आगे लिखेंगे, यहां पर तो केवल इतना ही कहना है कि यदि विधि पूर्वक इस मंत्र का जप करने के बाद भी आपको सुख और मनचाही वस्तु न मिले तो आप हमें बतलाइए, हम उत्तर देंगे ।

आपका कल्याण चाहनेवाला
रतनलाल मेहता.

* सम्मति *

मैंने समालोचना की दृष्टि से इस पुस्तक को, आद्योपान्त पढ़ा; बाँच कर निश्चय हुआ कि रचयिता ने जो इसका नाम 'कल्पवृक्ष' रक्खा है वह यथार्थ है। क्योंकि इस में दर्शाये हुए सिद्धान्तों में से एक का भी यथावत् पालन करने वाला मनुष्य, उभयलोक में सुखी रह सकता है। मैं कह सकता हूँ कि इस पुस्तक के प्रत्येक सिद्धान्त पर, अच्छी तरह मनन करके जीवन भर उसको अमल में लाने वाले मनुष्य के लिये यह पुस्तक, कल्पवृक्ष से भी बढ़ चढ़ कर है। जिसकी परीक्षा इसके सिद्धान्तों को यथोक्त रीति से पालने वाले पाठक को स्वयं हो सकेगी। अतः इसके नामकरण में भी रचयिता की अत्युक्ति नहीं है।

लेखनशैली में उत्तम चमत्कार यह है कि छोटे, बड़े, पढे या अनपढ, सभी इससे भली-भाँति लाभ उठा सकते हैं। 'नवकार' मन्त्र की महिमा, अर्थ और उपयोगिता को बहुत ही सुगमता के साथ दिखलाया गया है। वास्तव में ऐसे समय, में "जब कि संसार विषयों से अन्ध होकर गड्ढे में गिरने को जा रहा है" इस प्रकार की पुस्तक, समाज को सावधान कर सुमार्ग पर लाने के लिये नितान्त आवश्यक है। आशा है—जैन, सनातनी, सिक्ख, आर्य-समाजी तथा मुसलमान सभी सम्प्रदाय के मनुष्य, इस पुस्तक का आदर कर अपनी २ आत्मा को अवश्य लाभ पहुँचावेंगे। विनीत—

पं० त्रिलोकनाथ मिश्र, व्या. आचार्य,

व्या. का. न्त. सा. तीर्थ, सा क रत्न, विद्यावाचस्पति मिथिला।

करत प्रात उठि नित्य जो, परमेष्ठिन का ध्यान ।
होकर निर्मल हृदय वह, पावत सुख की खान ॥१॥

इस कारण मैं भी उन्हें, वन्दों कर शिर नाय ।
जाकी किरपा दृष्टि से, सबको मिलत सहाय ॥२॥

करूं वुद्धि अनुसार मैं, कल्प-वृक्ष निर्माण ।
जिसको पढ़ के भक्त जन, लहैं सकल कल्याण ॥३॥

लो! हाथ फैलाओ!

ऐ संसार के दुखी मनुष्यो! ओ ग़रीबो, अनाथो तथा दीन लोगो! इधर देखो, इधर आओ! इस कल्प वृक्ष के नीचे खड़े होकर, एक ध्यान लगाकर, सच्चे दिल से, शुद्ध आत्मा से तुम जो कुछ भी माँगोगे वही मिलेगा। विश्वास रक्खो, हमारी बातें मानो; तुम्हारी मनचाही चीज़ तुम्हें मिलेगी, तुम केवल आँखें मूंद कर, शुद्ध सच्चे हृदय से माँगो तो सही, वह आई तुम्हारी इच्छित वस्तु लो! हाथ फैलाओ! गरीबों के लिए धन, बीमारों के लिए औषधि, दुखियों के लिए सुख, अनाथों के लिए स्वामी और असहायों के लिए सहायक नवकार मंत्र ही है।

जो कार्य डराने, धमकाने, मनाने, खुशामद करने और पैसा ख़र्च करने से नहीं होता वह नवकार मंत्र से होजाता है। इससे धन मिल सक्ता है, पुत्र तथा मित्र मिल सक्ते हैं, विद्या, बुद्धि, दान, और मान मिल सकते हैं। इस मंत्र के प्रभाव से तीनों प्रकार के दुःख (शारीरिक, मानसिक, भौतिक) दूर होकर परम आनन्द प्राप्त होता है। भला जब परमात्मा का दर्शन तक इस मंत्र के द्वारा होता

है तो फिर ऐसी कौनसी वस्तु है जो इसके बल से न मिल सकती हो ?

यह संसार की सबसे बड़ी शक्ति है। तुम इसे प्राप्त करो फिर देखो कि तुम क्या नहीं कर सक्ते। जिस समय तुम्हारी सम्पत्ति का नाश होगया हो, मित्र शत्रु बनगए हों और चारों ओर से विपत्ति के बादल उमड़ रहे हों, तुम्हारा कोई सहायक न दिखाई पड़ता हो, दुःखों के दूर करने का कोई उपाय न सूझता हो उस समय यदि तुम इस कल्प वृक्ष के नीचे आओ तो तुम्हे परम शान्ति मिलेगी। उस समय यदि तुम नवकार मंत्र का जप करोगे तो तुम्हारे सारे दुःख दूर हो जायेंगे और तुम्हारी सारी इच्छायें पूरी होंगी।

जिस मनुष्य का मन सदा घबराता रहता हो, बेचैनी छाई रहती हो, उदासी दिखाई पड़ती हो उसे इस मंत्र का जप करके देखना चाहिए। यदि उसका मन प्रफुल्लित होकर शान्त न होजाय तो वह हमें दोष दे। हम झूठे।

यदि कोई मनुष्य रोगी हो और बहुत सी दवा दारू करने पर भी रोग से उसका पिण्ड न छूटता हो तो ऐसी दशा में उसे नवकार मंत्र का विशेष रीति से ध्यान करना चाहिए।

नवकार मंत्र के द्वारा मन चाही वस्तु पाने वालों के लिए नीचे लिखी तैय्यारी करलेना ज़रूरी हैः—

(१) हृदय पवित्र रखना
(२) अन्तःकरण से भक्ति रखना
(३) अन्तःकरण से विश्वास रखना
(४) अन्तःकरण से त्याग करना अर्थात् संसारिक माया मोह को छोड़ना।
(५) अन्तःकरण से सदाचार का पालना
(६) ब्रह्मचर्य का पालना
(७) आत्मिक शक्ति को बढ़ाना
(८) अन्तःकरण की बुरी इच्छाओं को वश में करना

ऊपर लिखी पूरी तैय्यारी करनेवालों को नवकार मंत्र की सिद्धि जल्दी प्राप्त होती है। पुराने समय में बालकों को छोटी उम्र ही में गुरुमुख से मन्त्र जपने की दीक्षा दी जाती थी। और उस आयु में ही बालक इस मंत्र का जप शुरू कर देते थे। इसी कारण उस-समय के बालक वीर, धीर, तेजस्वी, निर्भय परम सुशील और बड़े धार्मिक हुआ करते थे।

पहिले समय में प्रत्येक माता पिता को यह इच्छा रहती थी कि उसकी सन्तान सुशील, सदाचारी, आज्ञाकारी,

विद्वान्, बुद्धिमान्, और धार्मिक बने। वे अपने बालकों को अच्छी शिक्षा देते थे। लेकिन आजकल की दशा देखिए। आजकल के माता पिता अपने लड़कों को धार्मिक शिक्षा तो बिलकुल ही नहीं देते, और लड़कों का मन भी इस तरफ़ नहीं लगता इससे उनकी स्मरण शक्ति कमज़ोर हो जाती है और उन्हें कुछ याद नहीं रहता।

यदि वे पढ़ने की कोशिश भी करते हैं तो बीमारी आ दबाती है और वे अपना स्वास्थ खो बैठते हैं। जो विद्यार्थी आजकल की विषैली पाठशालाओं में सर मारकर भी पास नहीं होते वे या तो हताश होकर बैठ रहते हैं या व्यर्थ में अपना समय गँवाते रहते हैं। पास होकर भी वे नौकरी की खोज में यहाँ वहाँ दूसरों की जूतियाँ झाड़ते फिरते हैं, और इसपर भी उन्हें योग्य स्थान नहीं मिलता। उनको दूसरे प्रकार की शिक्षा मिलती ही नहीं है इससे वे गुलामी के सिवाय और कोई धन्धा नहीं कर सकते।

धार्मिक शिक्षा न मिलने से सबसे बड़ी हानि यह होती है कि प्रायः बालकों का चरित्र बिगड़ जाता है। वे आचार भ्रष्ट हो जाते हैं। अतः माता पिताओं को चाहिए कि वे अपनी संतान को धार्मिक शिक्षा अवश्य दें तथा कुछ कला

कौशल भी सिखावें जिससे कि वे सदाचारी संयमी तथा सादगी पसंद बनें और साथ ही साथ स्वतन्त्र जीवन बिता सकें।

अतः ऐ विद्यार्थियो! यदि तुम अपनी दशा सुधारना चाहते हो और संसार में बड़े बन कर कुछ करजाने का हौसला रखते हो तो "नवकार" मंत्र को समझो और उसका जाप करो। इससे तुम्हारा आत्मिक बल बढ़ेगा, बुद्धि तीव्र होगी और तुम्हें प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी तथा तुम पूर्ण सुखी और आनन्दित रह सकोगे। साथ ही साथ इससे देश और संसार का भी भला होगा।

और ऐ धनीमानी लोगों! जो तुम जीजान से दिन रात धन बटोरने में लगे हो, हाय रुपया, हाय रुपया चिल्लाते हो, इसी से समझते हो कि तुम्हें सुख व संतोष मिलेगा और इसके लिए हज़ारों ग़रीबों को पीसते रहते हो, यह तुम्हारी बड़ी भारी भूल है। इससे तो तुम्हें सच्चा सुख नहीं मिलेगा। यह हाय हाय तो तुम्हारे जीवन भर लगी रहेगी। यदि तुम सच्चा सुख चाहते हो, यदि तुम ग़रीबों की आहों से बचना चाहते हो तो आओ "नवकार" मंत्र रूपी कल्पवृक्ष के नीचे आओ और शुद्ध अन्तःकरण से प्रभु का ध्यान करके सच्चे सुख की आशा से अपनी बँधी

हुई मुट्ठियों को फैला दो! विश्वास रक्खो कि ऐसा फल तुम्हारे हाथों पर आगिरेगा कि जिसके सामने तुम्हारी सारी सम्पत्ति तथा वैभव फीका लगेगा।

इसलिए आज हम पुकार-पुकार कर कह रहे हैं कि ऐ दुनियाँ के लोगो! ऐ अभागे प्राणियो! अज्ञान अन्धकार में इधर उधर मत भटको, केवल सच्चे हृदय से एक वार 'नवकार' मंत्र का ध्यान करो बस केवल एक वार! और लो! हाथ फैलाओ! वह ऋद्धि सिद्धि तुम्हारी ओर आरही हैं।

कल्प-वृक्ष का स्वरूप
या
(नवकार मन्त्र)

१. णमो अरिहंन्ताणं (अर्हतों को नमस्कार हो)
२. णमो सिद्धाणं (सिद्धों को नमस्कार हो)
३. णमो आयरियाणं (आचार्य्यों को नमस्कार हो)
४. णमो उवज्झायाणं (उपाध्यायों को नमस्कार हो)
५. णमो लोए सव्वसाहूण (लोक में सब साधुओं को नमस्कार हो)

यही वे पांच नमस्कार मंत्र हैं जिनके भीतर इतनी बड़ी ताकत (शक्ति) छिपी हुई है। इनके स्मरण करने

से पापों का नाश होता है और मनुष्य का कल्याण होता है। इसके यह मानी नहीं है कि मनुष्य नित्य खूब पाप किया करे और शाम को इन मन्त्रों द्वारा उन्हें मिटा दिया करे! ऐसा कभी नहीं हो सकता। आप पहिले हृदय पवित्र कीजिए और फिर अपने पुराने पापों के नाश के लिए 'नवकार' मंत्र का जप शुरू कर दीजिए। इनका अर्थ संक्षेप में यह है:—

६. एसोपंचणमोकारो — ए पंच नमस्कार मंत्र।
७. सव्वपावप्पणासणो — सब पापों के नाश करने वाले हैं।
८. मंगलाणं चसव्वेसिं — सबके लिए मंगलकारी है।
९. पढमंहवइ मंगलं — यह प्रथम मंगल है, और इसके पढ़ने से मंगल होता है।

(१) महाज्ञानी, जीवनमुक्त, आत्माओं को मेरा नमस्कार है।

(२) जिन्होंने ध्यान रूपी अग्नि से आठ प्रकार के कर्मों को जला दिया है या जो कर्म बन्धन से मुक्त हैं उन सिद्धों को मेरा नमस्कार है।

(३) जो मर्य्यादा पूर्वक जिन शासन के आचार का पालन करते हैं उन आचार्य्यों को मेरा नमस्कार है।

(४) जो खुद ज्ञानी होकर समीप में आए हुए शिष्य जनों को अध्ययन कराते हैं उन उपाध्यायों को मेरा नमस्कार है।

(५) जो सब प्रकार के ज्ञानों से परिपूर्ण तथा संयमों और तपके द्वारा मोक्ष का साधन करते हैं उन साधुओं को मेरा नमस्कार है।

इन मन्त्रों का अर्थ समझ कर विधिपूर्वक ध्यान करने से मनुष्य सिद्धिधाम को प्राप्त होजाता है। इनके जपने की विधि भी हमने आगे लिखी है उसे भलीभांति समझ कर ध्यान प्रारम्भ करना चाहिए तभी पूरी सफलता मिलती है। जिन्हें विश्वास न हो वे एकवार परीक्षा करके देखलें।

कल्प-वृक्ष के फल कैसे मिलें ?

एक मूर्ख और अभागी मनुष्य कल्पवृक्ष के नीचे जाकर भी हका बका होकर सोचता है कि इसके फल कैसे मिलें ? एक अन्धा आदमी सोने की पृथ्वी के ऊपर भी चलता हुआ भीख मांगता रहता है। उसे दिखाई नहीं देता कि उसके पैरों के नीचे ही अपार सम्पत्ति है।

इन सब बातों का कारण अज्ञान है। जब तक मनुष्य किसी बात को समझ नहीं लेता उसे उसका फल नहीं मिलता। इसीलिए यह आवश्यक है कि नवकार मंत्र के जपने की विधि को पहिले अच्छी तरह समझ ली जावे।

'नवकार' मंत्र का जप तीन प्रकार का है। उत्तम, मध्यम और कनिष्ट। उत्तम जप वह है कि मनुष्य पद्मासन लगाकर श्रीजिनेन्द्र भगवान के ध्यान में ऐसा लीन हो कि उसे तन, मन, धन की सुध ही न रहे, वह भूलजाय कि उसके चारों ओर क्या होरहा है, वह कहां बैठा है, क्याकर रहा है इत्यादि। इससे तत्काल फल मिलता है और जप करने वाले में अपार शक्ति आजाती है।

मध्यम जप वह है जिसमें मनुष्य किसी मुकर्रर किए हुए वक्त में ध्यान करे और उसके बाद उठकर अपने धंधे में लग जाय। इससे मनुष्य को शान्ति मिलती है और वह दुःखों तथा पापों से बचा रहता है।

तीसरे प्रकार का जप वह है जिसमें मनुष्य अस्थिर चित्त रहता है और बेगार सी टाल कर चल देता है। इससे मन इच्छित लाभ नहीं होता।

प्रातःकाल सूर्योदय से पहिले या रात्रि या संध्या को हृदय से शुद्ध होकर, सारी फिकरों को छोड़कर मनुष्य को चाहिए कि वह एक खुले, साफ पवित्र तथा एकान्त

स्थान में बैठे, जहां पर स्वच्छ वायु आती हो तथा प्राकृतिक दृश्य दिखाई देते हों। पुनः पद्मासन लगाकर वह नवकार मंत्र का जप करे और प्रत्येक नमस्कार को उच्चारण करते समय उसके अर्थ को भी सोचता जाय। ऐसा करते करते वह अपनी आत्मा को मंत्रों के उच्चारण तथा ध्यान में डुबा दे।

वह पंचपरमेष्ठी को नमस्कार करते समय यह सोचता जाय कि मेरी मनचाही वस्तु मेरे पास आरही है और मेरा आत्मा व शरीर शुद्ध होता जारहा है। मुझ में नया प्रकाश व शक्ति भर रही है, मैं धीरे धीरे संसार से ऊपर को उठता जारहा हूं। जब वह ध्यान करके उठे तो मनमें सोचे और अनुभव करे कि मैं एक नया और अपूर्व आदमी बन गया हूं। मुझ में अपूर्व शक्ति आगई है। मैं सब कुछ कर सक्ता हूं। धीरे धीरे इस विश्वास का फल यह होगा कि मनुष्य जैसा चाहता है वैसा बन जायगा, जिस वस्तु की उसे आकांक्षा है, पा जायगा। उसका मन और हृदय बहुत ही हलका, प्रसन्न तथा सुखी हो जायगा।

इस बात की जांच तो एक दिन विधिपूर्वक ध्यान करने से लग सकती है कि इससे मन में कुछ नवीनता आई या नहीं? इस प्रकार आप इस कल्प-वृक्ष से मनचाहा फल ले सके हैं इसमें कोई सन्देह नहीं है।

नवकार मंत्र का महात्म्य

॥ दोहा ॥

निरमल हिरदे से जपा, जिसने श्री नवकार।
मनवांच्छित फल पायके, वह उतरा भवपार॥

पिछले हिस्से में हमने जगह जगह पर नवकार मंत्र की महिमा बतलाई है परन्तु इस अध्याय में हम जैन ग्रन्थों में दिए हुए कुछ उदाहरण देदेना चाहते हैं। यों तो इसके महात्म्य में बहुतसी कहानियां प्रचिलित हैं पर उनमें से दो-एक बहुत ही उत्तम हैं।

पुराने समय की बात है कि हमारे देश में पोतनपुर नाम का एक बड़ा ही सुन्दर शहर था। उसमें सुगुप्त नाम का एक बड़ा चतुर श्रावक रहता था। उस श्रावक की पुत्री का नाम श्रीमती था जो कि धर्म पर बड़ी ही प्रीति रखती थी।

एक दिन, एक सेठ का पुत्र उस कन्या को देखकर उस पर मोहित होगया और उसके पिता से अपने साथ विवाह करने के लिए कहा। श्रीमती के पिता ने देखा कि वह लड़का मिथ्यात्व (झूठे) धर्म में चलनेवाला है इसलिए विवाह करने से इन्कार कर दिया।

अब वह सेठ का पुत्र बड़ी चिन्ता में पड़गया और बहुत दिनों तक विचार करने के बाद उसने खुद श्रावक बनजाने की ठानली। और इस प्रकार उसके पिता को धोखा देकर वह श्रीमती का ब्याह कर घर ले आया। श्रीमती भी ससुराल में आकर जैन धर्म का पूर्ण रीति से पालन करती हुई अपने पति की सेवा में लग गई।

वास्तव में श्रीमती की ससुराल के लोग झूठे धर्म के माननेवाले थे इसलिए वे श्रीमती को जैन धर्म का पालन करते देखकर बड़े नाराज़ हुए। एक दिन उसके पति ने एक बड़े जहरीले साँप को एक करण्डिया में बंद करके रखदिया और कहा कि उसमें फूलों की माला है उसे लेआओ।

जब श्रीमती ने उसे खोला तो नवकार मंत्र के प्रभाव से तथा धर्म में दृढ़ता होने के कारण उसमें से साँप के बजाय फूलों की माला ही निकली जिसको लेकर वह अपने पति के पास पहुंची।

जब उसके पति ने यह बात देखी तो उसकी आँखें खुलगईं, और उसे नवकार मंत्र की महिमा मालूम हुई। तब उसने यह हाल सब लोगों से कहा जिससे वे श्रीमती से क्षमा मांगकर उसकी प्रशंसा करने लगे। अन्त में सबों

ने नवकार मंत्र पर पूर्ण श्रद्धान किया और उसके प्रभाव से परमसुख को प्राप्त हुए।

२. रत्नपुर नामक नगर में यशोभद्र नामक एक श्रावक रहता था। उसके शिवकुमार नाम का एक लड़का था जो कि जुआ, चोरी, व्यभिचार इत्यादि बुरे कामों में फंसा रहता था। उसका पिता सदा इस बात की कोशिश में रहता था कि किसी तरह उसका लड़का सदाचारी बन जावे। इसी विचार से कभी कभी वह अपने लड़के को उपदेश दिया करता था परन्तु शिवकुमार अपने पिता की बातों पर तनिक भी ध्यान न देता था।

इसी प्रकार दिन बीतते गए। अन्त में उसके पिता का अन्त समय निकट आया। पिता ने पुत्र को पास बुलाकर कहा, "हे पुत्र! जब तू अकस्मात् किसी संकट में पड़जावे तो नवकार मंत्र का ध्यान करना" इस प्रकार उपदेश देकर यशोभद्र की आत्मा परलोक को सिधार गई।

अब शिवकुमार को छुट्टी मिलगई। यह खूब खुलकर खेलने लगा, और पिता के कमाए हुए धन को खोकर सब लोगों की निगाहों में घृणित बनकर राह का भिखारी हो गया।

एक दिन एक त्रिदंडी साधू ने शिवकुमार से कहा कि यदि तु मेरे कहने के मुताबिक काम करे तो मैं तुमे फिरसे पहिले जैसा धनवान बनादूं। शिवकुमार उस ढोंगी योगी के चक्कर में आगया—आखिर लोभ का फंदा बुरा होता ही है।

ढोंगी साधु काली अमावस्या की रात्रि में शिवकुमार को मरघट में लेगया। उसने शिवकुमार से एक जगह पर चौकासा लगवाया और एक मुर्दा मंगवाकर उस जगह पर सुलाने को कहा। लोभी शिवकुमार ने वैसा ही किया।

इसके बाद उस योगी ने उस मुर्दे के हाथ में एक नंगी तलवार देदी और शिवकुमार से उसके तलुवे मलने को कहा, और स्वयं मंत्र पढ़कर आग में आहुतियां डालने लगा। मंत्र के प्रभाव से वह मुर्दा तलवार लिए हुए एकदम खड़ा होगया और शिवकुमार को मारने के लिए झपटा। सहसा शिवकुमार को अपने पिता के आखिरी शब्द याद आगए और उसने नवकार मंत्र का स्मरण किया। उसके ऐसा करते ही वह मुर्दा धड़ाम से पृथ्वी पर गिर पड़ा। अब वह योगी अपने मंत्रों के प्रभाव से बार बार उस मुर्दे को खड़ा करने की कोशिश करने लगा परन्तु शिवकुमार के एकाग्रचित्त से 'नवकार'

मंत्र का ध्यान करने के कारण वह मुर्दा फिर खड़ा न हुआ और उस योगी के सारे मंत्र बेकार होगए।

अन्त में योगी को बड़ा क्रोध आया, उसकी आँखों से चिनगारियाँ निकलने लगीं और उसने सबसे जबरदस्त मंत्र पढ़ा। अबकी बार मुर्दा तलवार लेकर उठ खड़ा हुआ पर वह शिवकुमार की ओर नहीं दौड़ सका तब वह उस नीच योगी पर ही टूट पड़ा और उसके दो टुकड़े कर दिए।

वह योगी तो यमपुरी को चलागया पर वह मुर्दा सोने का होकर शिवकुमार के सामने गिर पड़ा। उसमें ऐसा प्रभाव था कि उसका कोई अंग काटने पर फिर से निकल आता था। शिवकुमार उस कभी न घटनेवाले सोने के पुतले को लेकर अपार धनी बनगया और वह नवकार मंत्र का जप नहीं भूला।

नवकार मंत्र का प्रभाव ऐसा ही है। सम्भव है कि नई रोशनी के आदमी इन कहानियों को झूठा कहें परन्तु हम यही कहेंगे कि बिना परीक्षा किए हुए किसी भी बात को झूठा कहना अन्याय है।

परिशिष्ट

(क)

बल-वृद्धि के उपायः—

(१) शारीरिक बल—व्यायाम तथा ब्रह्मचर्य धारण करने से बढ़ता है। इसमें ब्रह्मचर्य मुख्य वस्तु है। विवाहित पुरुष अपने को नियमित करके इसका लाभ उठा सके हैं।

(२) बुद्धि का बल—सच्चे ज्ञान को प्राप्त करने से बढ़ता है।

(३) मन का बल—मन को बुरी बातों से हटाकर ईश्वर में लगाने से बढ़ता है। मन को काबू में कर लेने ही से वह बलवान् बनता है जिस प्रकार एक बहती हुई नदी को बाँध कर रोक देने से उसका बल और उपयोग बढ़ जाता है।

(४) आत्मा का बल—सत्य का अनुसरण करने से बढ़ता है।

(५) पुरुषार्थ का बल—मेहनत करने से बढ़ता है, हिम्मत हार कर बैठने से नहीं।

(८) धन का बल—धन को गरीबों की सहायता व अन्य पुण्य कार्य्यों में खर्चे करने से बढ़ता है, गाड़ कर रखने से नहीं।

(६) इच्छा का बल—विश्वास करने से बढ़ता है। तुम विश्वास रक्खो कि तुम कभी असफल नहीं हो सक्ते, तुम में अपार शक्ति है। बस तुम जो काम करोगे, जो कुछ चाहोगे उसमें तुमको अवश्य सफलता मिलेगी।

ऊपर लिखे बलों को प्राप्त करके यदि तुम नवकार मंत्र का जप करोगे तो संसार में तुम्हारे समान दूसरा न मिलेगा।

(ख)

दश प्रकार के अधर्मः—

(१) दूसरों की वस्तु की इच्छा रखना।

(२) किसी भी प्राणी का अनिष्ट विचारना।

(३) झूठी बात पर सत्य के समान विश्वास रखना।

(४) ऐसे वचन कहना जिससे किसी को दुख पहुंचे।

(५) आत्मा की इच्छा के विरुद्ध काम करना।

(६) दूसरों की निन्दा करना।

(७) व्यर्थ की बातों में समय नष्ट करना।

(८) जीवों की हिन्सा करना।

(९) पराई स्त्री के लिये बुरी इच्छा रखना।

(१०) सदा ही स्वार्थ में लीन रहना और देश तथा धर्म के लिए कुछ न करना।

आपको चाहिये ऊपर लिखे अधर्मों को भली भाँति समझ लें और उन से बचने का उपाय करें। यदि आपके भीतर एक भी अधर्म रह गया तो आपका जप सफल होने में सन्देह है।

आप क्या चाहते हैं ?

यह		या	वह
(१) अहिन्सा	जीवन है	हिन्सा	मृत्यु है।
(२) सत्य	,,	असत्य	,,
(३) पुरुषार्थ	,,	आलस्य	,,
(४) ब्रह्मचर्य	,,	व्यभिचार	,,
(५) एकता	,,	विरोध	,,
(६) वीरता	,,	कायरता	,,
(७) सत्संग	,,	कुसंग	,,
(८) सन्तोष	,,	लोभ	,,

(६) ईमानदारी	,,	बेईमानी	,,
(१०) धर्म कर्म	,,	पाप कर्म	,,
(११) अल्पहार	,,	अत्याहार	,,
(१२) सद्विचार	,,	दुर्विचार	,,
(१३) क्षमा	,,	क्रोध	,,

आवश्यक सूचना

१. जैन शिक्षण संस्था—इस संस्था में बालक बालिकाओं को विद्वान, सदाचारी, धर्मप्रेमी, बलवान, बनाने की पूरी चेष्टा की जाती है। धार्मिक विषय के साथ संस्कृत, प्राकृत, अंग्रेजी, महाजनी, व्यापारिक शिक्षा आदि का ज्ञान भली भांति स्वल्प समय में कराया जाता है। इस पढ़ाई के साथ ही हुनरकला का भी ज्ञान कराया जाता है।

२. जैनरत्न हुनरशाला—इस हुनरशाला में स्व-देशी हर किस्म का कार्य सिखलाया जाता है। विधवा सधवा बहिनों से सूत कताकर उनको पूरा महिनताना दिया जाता है। बेकारों को थोड़े ही समय में उद्यमी बना दिया जाता है।

३. **जैन उत्तम साहित्य प्रकाशक मंडल**—इसमें अच्छी अच्छी पुस्तकें प्रकाशित होती हैं। जिनकी सूची नीचे लिखी हुई है।

≡) जैन धर्म प्रवेशिका	=) जैन ज्ञानप्रकाश प्र० भाग
≡) जैन ज्ञानप्रकाश दू० भा०	-)॥ आत्मरत्न अनुपूर्वी
)॥। उत्तम विचार	-) नित्यस्मरण
=) सुख शान्ति का उपाय	)॥ जैन उत्तम स्मरण
) जैनधर्म शिक्षावली प. दू. ती चौ. पां. छठा और सातवां ये सातों ही भाग	)॥। शरीर सुधार
भेट पंजाब भ्रमण	-) कल्पवृक्ष
भेट विज्ञापन	भेट संस्था की रिपोर्ट
)॥ वरदान	भेट उत्तम कार्य के लिए चेतावनी

जो भाई अपने शहर व ग्रामों में धर्म पुस्तकालय स्थापित करना चाहें वे हमसे पुस्तकें मंगावें। इनके अतिरिक्त सर्वोपयोगी व स्वाध्यायोपयोगी अन्य पुस्तकालयों से प्रकाशित हुई पुस्तकें सदा मौजूद रहती हैं। इसलिए स्वाध्याय प्रेमी अवश्य लाभ उठावें। पुस्तकों की सूची जैनज्ञान-प्रकाश द्वि० भाग में है सो देखें।

पुस्तक मिलने का पता—

रत्नलाल महता,

संचालक—जैन ज्ञान पाठशाला,

उदयपुर (मेवाड)

जैन उत्तम साहित्य पुष्प नम्बर १६

* ॐ *

आत्मरत्न-अनुपूर्वी

संग्रहकर्ता—

रत्नलाल महता.

प्रकाशक—

जैन उत्तम साहित्य प्रकाशक मण्डल
उदयपुर (मेवाड़)

मुद्रक—

दि डायमण्ड ज़ुबिली प्रेस, अजमेर.

प्रथमावृत्ति २०००

वीर संवत् २४५६
वि० सं० १९८७

मूल्य -)॥

निवेदन

महानुभावो! मोक्ष साधन के लिए पंच परमेष्टी के भजन व सर्वज्ञ प्रभु के कथन किये हुए ज्ञान की बहुत आवश्यकता है। जिस आत्मा को निजज्ञान नहीं हुआ उसका मानव-जीवन सार्थक कभी नहीं होता। इसलिए अपने बोध के वास्ते सदैव-काल आत्मरत्न-अनुपूर्वी का स्मरण, पठन-पाठन कर आत्म-तत्व की खोज करना प्रत्येक सज्जन का कर्तव्य है। जो प्राणी संसारी वासनाओं में फसे हुए हैं वे रात-दिन कष्ट भोगते हैं वे दो घड़ी एकाग्र-चित्त से ध्यान कर इस अनुपूर्वी का विचार करें। और कार्य-रूप में लावें तो अल्प-समय में आत्म-अनुभव से सब काम सफलता-पूर्वक करने का अधिकारी हो सकता है। पंच-परमेष्ठी के स्वरूप को विशेष जानने की इच्छा हो तो "कल्प-वृक्ष" अर्थात् नवकार-मंत्र की पुस्तक हमारे यहां से मंगाकर पढ़ें तो बहुत लाभ होगा।

संवत्सरी पर्व
वीर संवत २४५६.

निवेदक—
रत्नलाल महता,
उत्तम-साहित्य प्रकाशक मंडल.

विधि फल सूचना

पंच परमेष्ठी का भजन स्मरण विधि पूर्वक करने वाले महानुभाव को शान्त-चित्त से बैठकर मनको पवित्र भावों के द्वारा इस पुस्तक को पढकर विचार करना चाहिए कि जिन गुणों से अखूट लक्ष्मी प्राप्त हुई वे गुण मुझ में भी प्राप्त हो फिर कोष्ट का ध्यान करे।

(१) अरिहंत प्रभु को मैं आत्म-गुण की प्राप्ति के लिये नमस्कार करता हूं।

(२) सिद्ध भगवान् को मैं सब कर्मों से दूर हटने के लिये नमस्कार करता हू।

(३) आचार्यजी महाराज को मैं आपके गुणों का अनुकरण मेरी आत्मा में होने के लिये नमस्कार करता हूं।

(४) उपाध्यायजी महाराज को मेरी आत्मा में ज्ञानज्योति बढ़ने के लिये नमस्कार करता हू।

(५) सर्वसाधुजी महाराज को मैं पाप कर्मों से विरक्त भाव होने के लिये नमस्कार करता हू।

इन भावों को लेकर आत्म-गुणों में प्रवर्ते तो अनुपूर्वी गुणने वालों को छः महिने की तपस्या का फल होवे और पांचसौ

सागर के पापों का आयु नरक का बंधा हो तो क्षय कर देव गति का आयु बांधता है और घर में ऋद्धि सिद्धि सुख शान्ति अनेक लाभ प्राप्त होते हैं। चाहिये पूर्ण आस्ता और इस मंत्र का विश्वास।

॥ दोहा ॥

अशुभ कर्म के हरण को, मंत्र बड़ा नवकार।
वाणी द्वादश अंक में, देख लियो तत्सार॥
एक अक्षर नवकार को, शुद्ध गणे जे सार।
ते बांधे शुभ देव नो, आयु अपरंपार॥

दो घड़ी समभाव से सामायिक करे और शुभ विचार करे तो उन्नीस-लाख तरेसठ-हजार वर्ष बासठ पल्या तक सुख भोगवता है।

रत्नलाल महता,
जैन उत्तम साहित्य प्रकाशक मंडल,
उदयपुर (मेवाड़).

॥ श्री ॥

आत्म रत्न अनुपूर्वी

मंगलाचरण

शुद्धदेव अनुभव कहूं, शासन पति महाराज।
सूत्रदेव गुरू सुमरतां, सफल होत सब काज॥

(१) नमो अरिहंताणं

(१) सबसे पहले मनुष्यों को देव, गुरू, धर्म पर पूर्ण विश्वास रख पांचों पदों की स्मरण भक्ति करना चाहिये। जिससे सब कार्य सफल होते हैं।

१	२	३	४	५
२	१	३	४	५
१	३	२	४	५
३	१	२	४	५
२	३	१	४	५
३	२	१	४	५

(२) देव

(१) अरिहंत और (२) सिद्ध ये दोनों देव रागद्वेष का सर्वथा नाश करने वाले वीत-राग ज्ञानावरणीय आदि का नाश करनेवाले, सत्यधर्म के प्रवर्तक, हितोपदेशी, एवं अलौकिक आत्म प्रभाव से तीनों लोक के चित्त में चम-त्कार उत्पन्न करनेवाले सत्य

देव हैं। इसलिये इनका स्मरण शुद्ध मन से करे तो जीव का परम कल्याण होता है।

(३) गुरू

(३) आचार्य, (४) उपाध्याय और (५) सर्व-साधु महात्मा चित्त को वश में रखनेवाले, जितेन्द्रिय, समदृष्टि, महाव्रत धारण करनेवाले, परिग्रह रहित सद्गुरू हैं, और सम्यक् ज्ञान, दर्शन, चारित्र रूप रत्नत्रय के समान प्रकाश करनेवाले, क्षमा, दया आदि सद्गुणों के भंडार ऐसे तीनों पदों का स्मरण करने से जीव का परम कल्याण होता है।

धर्म

(१) ज्ञान, (२) दर्शन, (३) चारित्र और (४) तप इन चारों पदों की आराधना में धर्म वृक्षों में कल्पवृक्ष, मणियों में विषहरण मणि, रत्नों में चिन्तामणि रत्न समान, पशुओं में कामधेनु औषधियों में संजीवनी औषधी के समान सदा सुखदायी है, और विद्या तथा कलाओं की खानि है, इसलिये इसको प्रीति पूर्वक हृदय में स्थान दे तो जीव का परम कल्याण होवे।

गुण० । (६) बहुश्रुत्रि गीतार्थों का गुण० । (७) तपस्वीजी महाराज के गुण० । (८) लिखे पढ़े ज्ञान को बारबार चिं० । (६) दर्शन (समकित) निर्मल आराधन से० । (१०) सात तथा १३४ प्रकार के विनय करने से । (११) कालोकाल प्रतिक्रमण करने से । (१२) लिए हुए व्रत प्रत्याख्यान निर्मल पालन से । (१३) धर्मध्यान शुक्ल ध्यान ध्याते रहने से । (१४) बारह प्रकार की तपश्चर्या करने से । (१५) अभयदान सुपात्रदान देने से । (१६) दस प्रकार की वैयावच्च करने से । (१७) चतुर्विध संग को समाधि देने से । (१८) नये २ अपूर्व ज्ञान पढ़ने से । (१६) सूत्र सिद्धान्त की भक्ति सेवा करने से । (२०) मिथ्यात्व का नाश और समकित का उद्योत करने से ।

(जल्दी मोक्ष जाने के २३ बोल)

शुद्ध आत्म अनुभव करे, व्रत संयम से युक्त ।
जिनवर भाषे जीव यह, निश्चय होवे मुक्त ॥

(३) नमो आयरियाणं

मोक्ष की अभिलाषा रखनेवाले उत्तम जीव यदि इन २३ बोलों को पहले सम्यक् प्रकार से समझ कर सेवन करें तो जल्दी मोक्ष में आवे ।

१	३	४	२	५
३	१	४	२	५
१	४	३	२	५
४	१	३	२	५
३	४	१	२	५
४	३	१	२	५

(१) मोक्ष की इच्छा रखने वाला जल्दी मोक्ष जावे। (२) तीव्र उग्र तपस्या करने से०। (३) गुरु गम्यता पूर्वक सूत्र सिद्धान्त सुने तो जल्दी०। (४) आगम सुनकर उनमें प्रवृति करने से०। (५) पांचो इन्द्रियों का दमन करने से०। (६) छकाया को जानकर उनकी रक्षा करे तो०। (७) भोजन समय साधु साध्वियों की भावना भावे तो०। (८) आप ज्ञान पढ़ें और दूसरों को पढ़ावे तो०। (९) नवनिदान करनो कोटि प्रत्याख्यान करने से०। (१०) दश प्रकार की वैयावच्च करने से०। (११) कषाय को निर्मूल करे पतली पाड़े तो०। (१२) छती शक्ति क्षमा करे तो०। (१३) लगे हुए पाप की शीघ्र आलोचना करने से। (१४) गृहण किये हुए नियम अभिग्रह को निर्मल पाले तो०। (१५) अभयदान सुपात्र दान देने से। (१६) सच्चे मन से शील ब्रह्मचर्यव्रत पालने से। (१७) निरवद्य (पाप रहित) मधुर वचन बोलने से०। (१८) लिये हुए संयम भार को अन्त तक पहुंचाने से०। (१९)

धर्मध्यान शुक्लध्यान ध्याने से० । (२०) एक मास में ६-६ पौषध करने से० । (२१) उभयकाल प्रतिक्रमण करने से० । (२२) रात्रि के अन्त में धर्म जाग्रण करने से० । (२३) आराधी हो आलोचना कर समाधि मरन करे तो जल्दी मोक्ष जावे ।

(४) नमो उवज्झायाणं

दोहा—आदि ऋषभ प्रभु नामले, महावीर प्रभुअंत।
निशदिन निर्मल ज्ञानयुत, जनसुख लहे अनन्त ॥

चौबीस जिनवरों के नाम

प्रातःकाल चौवीसों भगवान का स्मरण करने से मन पवित्र होता है। जहां मन पवित्र होता है वहां देवाधिदेव निवास करते हैं।

२	३	४	१	५
३	२	४	१	५
२	४	३	१	५
४	२	३	१	५
३	४	२	१	५
४	३	२	१	५

१. ऋषभनाथजी । २. अजितनाथजी । ३. संभवनाथजी । ४. अभिनन्दनाथजी । ५. सुमतिनाथजी । ६. पद्मप्रभुजी । ७. सुपार्श्वनाथजी । ८. चन्द्रप्रभुजी । ९. सुविधिनाथजी । १०. शीतलनाथजी । ११. श्रेयांस नाथजी । १२. वासुपुज्यजी । १३. विमलनाथजी । १४.

अनन्तनाथजी । १५. धर्मनाथजी । १६. शांतिनाथजी । १७. कुंथुनाथजी । १८. अरहनाथजी । १९. मल्लिनाथजी । २०. मुनिसुव्रतजी । २१. नेमिनाथजी । २२. अरिष्टनेमिनाथजी । २३. पार्श्वनाथजी । २४. श्री महावीरजी ।

(श्री सिद्धों की अल्प बहुत्व के १०८ बोल)

नमो लोएसव्व साहूणं

सिद्धाणं नमो किच्चा, संजयाणं च भावओ ।
सन्नि सन्ति करे लोए, अन्तो गइ अणुत्तरं ॥

ज्ञान दर्शन चारित्र की आराधना करने वाले उत्तम जीव सदैव इसको गुणे, इससे कर्मों की निर्जरा होती है। और प्रातः काल इस माला को गुणने से सर्व कार्य सिद्ध होते हैं।

१	२	३	५	४
२	१	३	५	४
१	३	२	५	४
३	१	२	५	४
२	३	१	५	४
३	२	१	५	४

(१) सर्व से थोड़े एक समय में १०८ सिद्ध हुए।

(२) उन्हों से एक समय में १०७ सिद्ध हुए अनन्त गुणे

(३) उन्हों स एक समय में १०६ सिद्ध हुए अनंत गुणे एवं ५८ वा बोल में एक समय में ५१ (५९) उन्हों से एक समय में ५० सिद्ध हुए असंख्यात गुणे ।

(६०) उन्हों से एक समय में ४६ सिद्ध हुए असंख्यात गुणे। (६१) उन्हों से एक समय में ४८ सिद्ध हुए असंख्यात गुणे। एवं क्रमसर ८४ वां बोल में एक समय में २५ सिद्ध हुए असंख्यात गुणे। (८५) उन्हों से एक समय में २४ सिद्ध हुए असंख्यात गुणे। (८६) उन्हों से एक समय में २३ सिद्ध हुए असंख्यान गुणे। एवं क्रमसर १०८ वां बोल एक समय में एक सिद्ध हुए असंख्यात गुणे।

वीस विरहमानों के नाम

सोरठा—प्रथम महाविदेह मध्य वर्तमान विराजत समय,
ज्ञान बखानत नघ, नामावली तिनकी कहूं ॥

महाविदेह क्षेत्र में अरिहंत भगवान चार घण घातिया कर्म नष्ट कर केवलज्ञान, केवलदर्शन सहित जीवनमुक्त विराजमान हैं। आप सर्व देखे सर्व जाणे आप (प्रभु) से कोई वात छिपी नहीं है अन्तःकरण की बात वहां विराजते हुए जानते हैं। ऐसे परमात्मा का नाम हमेशा स्मरण करने से अनन्त सुख की प्राप्ति होती है।

१	२	५	३	४
२	१	५	३	४
१	५	२	३	४
५	१	२	३	४
२	५	१	३	४
५	२	१	३	४

(१) श्री समंदिरजी (२) युगमंदिरजी (३) बाहुजी (४) सुबाहुजी (५) सुजातजी (६) स्वयंप्रभुजी (७) ऋषमाननजी (८) अनंतवीर्यजी (६) सूर्यप्रभुजी (१०) वज्रधरजी (११) विशालजी (१२) चन्द्राननजी (१३) चन्द्रबाहुजी (१४) भुजंगजी (१५) ईश्वरजी (१६) नेमप्रभुजी (१७) वीरसेनजी (१८) महाभद्रजी (१६) देवयशजी (२०) अनन्तवीर्यजी ।

दोहा—इस अवसर्पिणी में हुए त्रेसठ पदवी धारि।
चौबीस तीर्थंकर कहे शेष सुनो अवतारि॥

१२ चक्रवर्ती

(१) भरतजी (२) सागरजी (३) माधवजी (४) शान्तिकुमारजी (५) शान्तिनाथजी (६) कुंथुनाथजी (७) अरहनाथजी (८) शंभुजी (६) महापद्मजी (१०) हरिषेणजी (११) जयषेणजी (१२) ब्रह्मदत्तजी ।

९ वासुदेव

१	३	५	२	४
३	१	५	२	४
१	२	३	२	४
५	२	३	२	४
३	५	१	२	४
५	३	१	२	४

(१) त्रिपुष्ट (२) द्विपुष्ट (३) स्वयंभू (४) पुरूषोत्तम, (५) पुरुषसिंह (६) पुरुष पुण्डरीक (७) दत्तजी (८) लच्मणजी (९) कृष्णजी ।

९ वलदेव

(१) अचल (२) विजय (३) सुभद्र (४) सुप्रभु (५) सुदर्शन (६) आनन्द (७) नन्दन (८) रामचन्द्र (९) वलभद्र ।

९ प्रतिवासुदेव

(१) अश्वगिरि (२) तारक (३) मेदक (४) मधु (५) निशम्भू (६) वलेन्द्र (७) प्रह्लाद (८) रावण (९) जरासिंधु ।

दोहा—एकादश गणधर गिनो, जिन जग तारण काज।
राखी भवसागर विषे, जैन धर्म की लाज॥

(११ गणधर)

(१) इन्द्रभूतिजी (२) अग्निभूतिजी (३) वायु भूतिजी (४) वित्तजी (५) सुधर्मजी (६) मंडीपुत्रजी (७) मोर्यपुत्रजी (८) अकम्पितजी (९) अचलभूतिजी (१०) मेतारजजी (११) प्रभासजी ।

षोडश सतियन को नमूं, जिन इस जगत् मझार।
तनिक तजो नहि धर्म को, सह कर दुःख हजार॥

(१६ सतियां)

(१) ब्राह्मीजी (२) सुन्दरीजी (३) चन्दनबालाजी (४) राजमतिजी (५) द्रौपदीजी (६) कौशल्याजी (७) मृगावतीजी (८) सुलसाजी (९) सीताजी (१०) सुभद्राजी (११) सीताजी (१२) कुंतीजी (१३) चेलणाजी (१४) प्रभावतीजी (१५) दमयंतीजी (१६) पद्मावतीजी ।

भरतक्षेत के अतीत (भूत) काल की चौबीसी के नाम

(१) श्री केवल ज्ञानीजी	(२) निर्माणजी
(३) श्री सागरजी	(४) श्री महाशयजी
(५) विमल प्रभुजी	(६) श्री सर्वानुभूतिजी

२	३	५	१	४
३	२	५	१	४
२	५	३	१	४
५	२	३	१	४
३	५	२	१	४
५	३	२	१	४

(७) श्री धरजी
(८) श्री दत्तजी
(९) श्री दामोदरजी
(१०) श्री सूरतेजजी
(११) श्री स्वामीनाथजी
(१२) श्री मुनिसुव्रतजी
(१३) श्री सुमतिनाथजी
(१४) श्री शिवगतिजी
(१५) श्री अस्तांगजी
(१६) श्री नेमीश्वरजी
(१७) श्री अनीलनाथजी।

(२१) श्री शुद्धमतिजी (२२) श्री शिवशंकरजी (२३) श्री स्यंदननाथजी (२४) श्री ससांतजी।

नव तत्व के नाम

दोहा–जाने जीव अजीव को, भेद भले प्रकार।
राखे जो दिल में दया, तो उतरे भवपार ॥१॥

जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, बन्ध और मोक्ष ये नवतत्व जानने योग्य हैं।

(१) जिसमें ज्ञान और चेतना हो उसे जीव कहते हैं। (२) जिसमें ज्ञान-चेतना नहीं है उसे अजीव कहते हैं। (३) जिस कर्म से जीव सुख पाता है उसे पुण्य कहते हैं।

१	२	४	५	३
२	१	४	५	३
१	४	२	५	३
४	१	२	५	३
२	४	१	५	३
४	२	१	५	३

(४) जिस कर्म से जीव दुख पाता है उसे पाप कहते हैं। (५) आत्मा से सम्बन्ध (मेल) करने के लिये जिसके द्वारा पुद्गल द्रव्य आते हैं उसे आश्रव कहते हैं (६) आत्मा से पुद्गल-द्रव्य का सम्बन्ध होना जिसके द्वारा रुक जाय उसे संवर कहते हैं। (७) आत्मा से लगे हुए कुछ कर्म जिसके द्वारा आत्मा से अलग होजायें उसे निर्जरा कहते हैं। (८) दूध और पानी की तरह आत्मा और पुद्गल-द्रव्य का सम्बन्ध होना बन्ध कहलाता है। (९) सम्पूर्ण कर्मों का आत्मा से अलग होना मोक्ष कहलाता है।

चौदह नियम

दोहा—जे स्वरूप समझ्या बिना, पायो दुख अनन्त।
समझाव्युं ते पदनमुं, श्री सद्गुरू भगवंत ॥

सचित्त—सचित वस्तु। द्रव्य—स्वाद तथा नाम पल्टे जितने। विगय—दूध, दही, घी, तैल, मीठा। पन्नी—पगरखी, मौजा, खड़ाऊ वगैरा। तम्बोल—मुखवास, सुपारी, प्रमुख। वस्त्र—पहरने ओढ़ने के कपड़े। कुसुम—सूंघणे की वस्तु फूल प्रमुख। वाहन—घोड़ा, गाड़ी, जहाज प्रमुख। शयन—पाट, पलंग, बिछौने विलेपन—तेल, पीठी शरीर के लगाने की वस्तु। बंभ—ब्रह्मचर्य कुशील की मर्यादा। दिशा—ऊंची, नीची, तिरछी दिशा। नहाणा—स्नान करने की वस्त्र धोने की। भत्तेपु—आहारपाणी कावजन। पृथ्वी-काय—मिट्टी लवण इत्यादिक। अपकाय—पाणी, निवाण,

१	२	५	४	३
२	१	५	४	३
१	५	२	४	३
५	१	२	४	३
२	५	१	४	३
५	२	१	४	३

परण्डे, प्रमुख। तेउकाय—अग्नि, दिवा, चूल्हा, चिलम। वायु-काय—हवा, पंखा, झूला। वनस्पतिकाय—लिलोती, शाक, फल। त्रसकाय—हलते, चलते, जीव। अस्सी—हथियार, सूई तलवार। कस्सी—खेती, वाड़ी। मस्सी—लिखणे का व्योपार।

(छे काय का थोकड़ा)

छे काय का नाम द्वार	छे काय के गोत्र द्वार	छे काय के द्वार	पृथ्वी काय सठाण द्वार	एक महुर्त में भव	अल्प वर्ग बहुत्व
१	२	३	४	५	६
इंदी स्थावर काय	पृथ्वीकाय	पीलो	चन्द्रमसुर की दाल	१२,८२४	३ विशेष पृथ्वीकाय
बंभी स्थावर काय	अपकाय	सफेद	पाणी का परपोटा	१२,८२४	४ विशेष अपकाय
सपी स्थावर काय	तेउकाय	लाल	सूइ कलाइ (भारी)	१२,८२४	२ असंख्यात गुण तेउकाय
सुमति स्थावर काय	वायुकाय	नीलो	पत्ताका	१२,८२४	५ विशेष वायुकाय
पीयवच्छ स्थावर काय	वनस्पतिकाय (२) प्रत्येक साधारण	नाना प्रकार को	नाना प्रकार को	३२,००० प्रत्येक ६५,५३६ साधारण	६ अनंत गुण वनस्पतिकाय
जंगम काय	त्रसकाय	,,	,,	*८०,६०,४०,२४,१	१ सब से थोड़ा त्रसकाय

* त्रसकाय के कोठा में ८० भवबेन्द्रिय, ६० भव तेइन्द्रिय, ४० भव चौइन्द्रिय, २४ भव असन्नी पचे, १ सन्नी पचेन्द्रिय ।

सर्व मंगल मांगल्य, सर्व कल्याण कारणम् ।
प्रधाणं सर्व धर्म्मीणां, जैनं जयति शासनम् ॥

कल्याण के बोल

उत्तम जीवों के उत्तम कार्य, जैन सिद्धान्तों के अति उपयोगी महापुरुषों के नाम काम की नियमावली पर विचार करना सदैव स्मरण करना यथाशक्ति गुणों को प्राप्त करने से परम कल्याण होता है ।

(१) समकित निर्मल पालने में जीवों का परम कल्याण होता हैं । "राजा श्रेणिक कि माफिक" (श्री स्थानायांग सूत्र) (२) तपश्चर्याकर निदान न करने से जीवों का परम कल्याण होता हे । तामली तपस की माफिक (सूत्र श्री भगवतीजी) । (३) मन, वचन काया के योगों को निश्चल करने से जीवों का परम कल्याण होता है 'गजसुकमाल मुनिकी माफिक (श्री० अंतगढ सूत्र) (४) ससामर्थ्य क्षमा धर्म को धारण करने से जीवों का परमकल्याण होता है" अर्जुन माली की माफिक (श्री अंतगड सूत्र) (५) पांच महाव्रत निर्मल पालने से जीवों का परम कल्याण होता है । श्री गौतम स्वामीजी की माफिक (श्री भगवतीजी सूत्र) । (६) प्रमाद त्याग अप्रमादि होने से जीवों का परम कल्याण होता है । श्री शैलग राज-

१	४	५	२	३
४	१	५	२	३
१	५	४	२	३
५	१	४	२	३
४	५	१	२	३
५	४	१	२	३

ऋषि की माफिक (श्री ज्ञाता सूत्र) (७) पांचों इंद्रियों का दमन करने से जीवों को परम कल्याण होता है। श्री हरकेशी मुनिराज के माफिक (श्री उत्तराध्ययनजी सूत्र) (८) अपने मित्रों के साथ मायावृत्ति न करने से जीवों को परम कल्याण होता है। मल्ली नाथजी के पूर्व भव के छः मित्रों के माफिक (ज्ञातासूत्र) (९) धर्म चर्चा करने से जीवों का परम कल्याण होता है जैसे केशीस्वामी गौतम स्वामी के माफिक (श्री उत्तराध्ययनजी सूत्र) (१०) सच्चे धर्म पर श्रद्धा रखने से जीवों का परम कल्याण होता है। वर्णनागनत्वा के बाल मित्र के माफिक (श्री भगवती सूत्र) (११) जगत् के जीवों पर करुणाभाव रखने से जीवों का परम कल्याण होता है" मेघ कुमार के पूर्व भव हाथी के माफिक (श्री ज्ञाता सूत्र) (१२) सत्यव्रत निःशंकपणे करने से जीवों का परम कल्याण होता है। आनन्द श्रावक और गौतमस्वामी के माफिक

(उपाशकदशांग सूत्र) (१३) आफत समय नियमव्रत में दृढ़ता रखने से जीवों का परम कल्याण होता है। अम्बंड परिव्राज्य के सात सौ शिष्यों के माफिक (श्री उववाइजी सूत्र)

२	४	५	१	३
४	२	५	१	३
२	५	४	१	३
५	२	४	१	३
४	५	२	१	३
५	४	२	१	३

(१४) सच्चे मन शील पालने से जीवों का परम कल्याण होता है। सुदर्शन सेठ के माफिक (सुदर्शन चरित्र) (१५) परिग्रह के ममत्व का त्याग करने से जीवों का परम कल्याण होता है। कपिल ब्राह्मण के माफिक (श्री उतराध्ययनजी सूत्र) (१६) उदार भाव से सुपात्र दान देने से जीवों का परम कल्याण होता है शौमक गाथापति की माफिक (श्री विपाक सूत्र) (१७) अपने व्रतों से गिरते हुवे जीवों को स्थिर करने से जीव का परम कल्याण होता है। राजमति और रिद्धनेमि की माफिक (श्री उत्तराध्यायन सूत्र) (१८) उग्र तपश्चर्या करे तो जीवों का परम कल्याण होता है। धन्ना मुनि के माफिक (श्री अनुत्तर उववाइ सूत्र) । (१९) अग्लान

पणे गुरूवादि का वैयाव्रच्च करने से जीवों का परम कल्याण होता है पन्थक मुनि की माफिक (श्री ज्ञाती सूत्र) (२०) सदैव अनित्य आदि भावना भावने से जीवों का परम कल्याण होता है। भरत चक्रवर्त्ती के माफिक (श्री जम्बु द्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र) (२१) परणामों की लहरों को रोकने से जीवों का परम कल्याण होता है। प्रसन्नचन्द्र मुनि की माफिक (श्रेणिक चरित्र में) (२२) सत्य ज्ञान पर श्रद्धा रखने से जीवों का कल्याण होता है। अर्हन्नक श्रावक की माफिक (श्री ज्ञाता सूत्र) (२३) चतुर्विध संघ का वैयावच्च करने से जीवों का परम कल्याण होता है। सनत्कुमार चक्रवर्ती के पूर्व भव के माफिक (श्री भगवती सूत्र) (२४) चढ़ते भावों से मुनियों का वैयावच्च करने से जीवों का परम कल्याण होता है बाहुबलजी के पूर्वभव के माफिक (श्री ऋषभ चरित्र) (२५) शुद्ध अभिग्रह करने से जीवों का परम कल्याण होता है। पांच पांडवों की माफिक (श्री ज्ञाता सूत्र) (२६) धर्म दलाली करने से जीवों का परम कल्याण होता है, श्रीकृष्ण नरेश की माफिक (श्री अन्तगड दशांग सूत्र) (२७) सूत्र ज्ञान की भक्ति करने से जीवों का परम कल्याण होता है, उदाई राजा की माफिक

(श्री भगवति सूत्र) (२८) जीव दया पाले तो जीवों का परम कल्याण होता है, श्रीधर्म रुचि अणगार की माफिक (श्री ज्ञाता सूत्र) (२६) व्रतों से गिरजाने पर भी चेत जाने से जीवों का परम कल्याण होता है। अरणिक मुनि की माफिक (श्री आवश्यक सूत्र) (३०) आफत आने पर भी धैर्यता रखने से जीवों का परम कल्याण होता है। खंधक मुनि के माफिक (श्री आवश्यक सूत्र) (३१) जिनदेव की भक्ति करने से जीवों का परम कल्याण होता है। प्रभावति राणी की माफिक (श्री उत्तराध्ययन सूत्र) (३२) परमेश्वर की भक्ति करने से परम कल्याण होता है। श्रेणिक राजा के माफिक (श्रेणिक चरित्र) (३३) छती शक्ति क्षमा करने से जीवों का परम कल्याण होता है प्रदेशी राजा की माफिक (श्री रायपसणी सूत्र) (३४) परमेश्वर का त्रिकाल ध्यान करने से जीवों का परम कल्याण होता है। शान्तिनाथजी के पूर्वभव के मेघरथ राजा को

१	३	४	५	२
३	१	४	५	२
१	४	३	५	२
४	१	३	५	२
३	४	१	५	२
४	३	१	५	२

माफिक (शान्तिनाथ चरित्र) (३५) देवादि के उपसर्ग सहन करने से परम कल्याण होता है। कामदेव श्रावक की माफिक (श्री उपाशकदशांग सूत्र) (३६) निर्भीकता से भगवान की वन्दना करने को जाने से परम कल्याण होता है। श्री सुदर्शन सेठ के माफिक (श्री अन्तगडदशांग सूत्र) (३७) चर्चाकर वादियों का पराजय करने से परम कल्याण होता है। मंडुक श्रावक की माफिक (श्री भगवती सूत्र)।

१	३	५	४	२
३	१	५	४	२
१	५	३	४	२
५	१	३	४	२
३	५	१	४	२
५	३	१	४	२

(१३) न्यायपूर्वक उपार्जन किए हुए द्रव्य को शुभ कार्य में खर्च करना धर्म है, और अन्याय के पैसे को पाप कार्य में खर्च करना अधर्म है।

३	४	५	१	२
४	३	५	१	२
३	५	४	१	२
५	३	४	१	२
४	५	३	१	२
५	४	३	१	२

(१४) प्रेमपूर्वक व्यवहार करना धर्म है, और सत्ताधारी होकर अन्याय करना अधर्म है।

(१५) मातृभूमि की अल्पारंभ की वस्तुएं काम में लाना धर्म है, और महारंभ की वस्तुएं काम में लाना अधर्म है।

(१६) गुणवान और बड़ों की सेवा भक्ति करना धर्म है, और उनके सामने बोलना उनका अविनय करना अधर्म है।

(१७) हाथ की बनी हुई अल्पारंभ की वस्तुएं काम में लाना धर्म है, और मशीनों की वस्तुएं काम में लाना अधर्म है।

(१८) गरीबों के हाथ का कता-बुना एक गज कपड़ा पहनना धर्म है, और लाखों गायों की चर्बी से बना हुआ कपड़ा पहनना अधर्म है।

(१६) शरीर को तन्दुरुस्त रखना, और धर्म पुरुषार्थी होना धर्म है, और बुरे कर्म कर तन्दुरुस्ती बिगाड़ना अधर्म है।

(२०) बिना आज्ञा दूसरों की चीजों को न उठाना धर्म है, और उनको चुपके से उठा लेना अर्थात् चोरी करना अधर्म है।

(२१) धर्मशास्त्र और नीति धर्म की पुस्तकें पढ़ना धर्म है और अनीति खेल तमाशों की पुस्तकें और अश्लील उपन्यास आदि पढ़ना अधर्म है।

(२२) नीति से काम कर जीवन बिताना धर्म है और निकम्मे बैठे रहना इधर उधर की व्यर्थ बातों में समय बिताना अधर्म है।

२	३	४	५	१
३	२	४	५	१
२	४	३	५	१
४	२	३	५	१
३	४	२	५	१
४	३	२	५	१

(२३) सादगी रखना धर्म है और विलासिता बढ़ाना अधर्म है।

(२४) आत्मा के स्वरूप को पहचानना धर्म है और उससे अनभिज्ञ रहना अधर्म है।

(२५) अष्टमी, एकादशी और चतुर्दशी को उपवास करना आमिल करना, लूका खाना और एक

वक्त भोजन करना धर्म है और मेवा मिष्टान्न खाकर शरीर में विकार पैदा करना अधर्म है।

(२६) भूखे को भोजन देना और गरीबों को आराम पहुंचाना धर्म है और गरीबों की मदद न करना अधर्म है।

(२७) विद्यार्थियों को जैनधर्म पढ़ने में सहायता देना धर्म है और सहायता नहीं देना अधर्म है।

(२८) दोनों पखी संवत्सरी के दिन अपने दोषों का प्रायश्चित करना और सर्व प्राणियों से प्रेम पूर्वक व्यवहार करना धर्म है, और अपने दोषों की आलोयणा नहीं करना अधर्म है।

(२६) दिन में भोजन करना धर्म है, और रात्रि में भोजन करना अधर्म है।

२	३	५	४	१
३	२	५	४	१
२	५	३	४	१
५	२	३	४	१
३	५	२	४	१
५	३	२	४	१

(३०) ब्रह्मचर्यव्रत धारण करना धर्म है, और व्यभिचारी बनना अधर्म है।

(३१) संतोष रखना धर्म है और तृष्णा बढ़ाना अधर्म है।

(३२) प्रातःकाल सायंकाल प्रतिक्रमण करना और सोते समय प्रभुका स्मरण करना धर्म है और बिना स्मरण किये सोना अधर्म है।

दोहा—चिन्तामणि है भावना, अनुभव रस की खान।
यही मुक्ति का मार्ग है, यातें उपजत ज्ञान॥

भावना

प्रत्येक मनुष्य को प्रतिदिन इस प्रकार के विचार रखने चाहिए कि मैं क्रोध का नाश कर क्षमावान् बनूं, अपने वैरी के भी सब अपराध भूल जाऊं। विश्व में जो शान्ति रूपी मंत्र फूकने वाले हैं उनसे प्रेम करूं पृथ्वी के समान सहनशील बनूं ताकि दूसरों के अपराधों को सदा क्षमा करता रहूं। भूलकर भी क्रोध के फंदे में न पड़ूं। जिस प्रकार चन्दन काटने वाले को भी सुगन्ध देता है उसी प्रकार मैं भी कष्ट पहुंचाने वाले के साथ भलाई का व्यवहार करूं। मन वचन और काया से दूसरों का कदापि अपकार न करूं। सदा यही सोचता रहूं कि इस आत्मा में क्षमा आदि जो गुण भरे हुए हैं उनको कहीं क्रोध रूपी चोर अपहरण न करले। परोपकार करना मेरा प्रधान कर्त्तव्य है उसे भूल न जाऊं। मैं अपने चित्त को सरल और शुद्ध बनालूं। हे प्रभु आपका बताया हुआ धर्म ही अमोध मंत्र है।

(१) अनित्य भावना—संसार में जो जो पदार्थ देखने में आते हैं, वे सर्व अनित्य हैं। कोई भी स्थिर नहीं है। हमारा शरीर भी नाशवान है।

(१) अशरण भावना—संसार में दुःखों से पीडित होते हुए जीवों को केवल एक धर्म की ही शरण होती है। अन्य माता पिता भार्यादि कोई भी रक्षा करने में समर्थ नहीं होते हैं तथा जब मृत्यु आती है उस काल में कोई भी साथी नहीं बनता किन्तु एक ऐसा धर्म ही है जो आत्मा की रक्षा करता है।

२	४	५	३	१
४	२	५	३	१
२	५	४	३	१
५	२	४	३	१
४	५	२	३	१
५	४	२	३	१

(२) संसार भावना—जो इस प्रकार से विचार करता है कि यही आत्मा अनेक बार योनियों में जन्म मरण करती है।

(३) एकत्व भावना—फिर इस प्रकार से विचार करे कि अकेले ही जीव की मृत्यु होती है और अकेला ही जन्म धारण करता है। किंतु कोई भी किसी के साथ नहीं आता और न कोई किसी के साथ जाता है। केवल धर्म ही अपना है जो सदैव काल जीव के साथ ही रहता है।

(४) अन्यत्व भावना—हे आत्मन् ! तू और शरीर भिन्न २ है। यह शरीर पुद्गल का संचय है, तू चेतन स्वरूप

तू अमूर्तिमान सर्व ज्ञानमय द्रव्य है। तू अक्षय अव्ययरूप है। यह शरीर मूर्तिमान जड़रूप द्रव्य है। किन्तु यह शरीर विनाशरूप धर्म वाला है फिर तू क्यों इसमें मूर्च्छित हो रहा है।

(५) अशुचि भावना—फिर ऐसे विचारे कि यह जीव तो सदा ही पवित्र है, किन्तु यह शरीर मलीनता का घर है।

(६) आश्रव भावना—रागद्वेष, मिथ्यात्व, अव्रत, कषाय, योग और मोह इनके ही द्वारा शुभाशुभ कर्म आते हैं उसका ही नाम आश्रव है।

(७) संवर भावना—जो जो कर्म आने के मार्ग हैं उनका निरोध करना संवर भावना है।

(८) निर्जरा भावना—उसका नाम है जिसके करने से कर्मों के एकदेश बीज का नाश हो जाय तब ही आत्मा मोक्षरूप होती है।

(९) लोक स्वभाव भावना—तीनों लोक के स्वरूप का अनुप्रेक्षण करना जैसे कि यह लोक अनादि अनन्त है, और इसमें तीन लोक कहे जाते हैं।

(१०) धर्म भावना—इस संसार चक्र में जीव ने अनन्त जन्म मरण नाना प्रकार की योनियों में किये हैं,

३	४	५	२	१
४	३	५	२	१
३	५	४	२	१
५	३	४	२	१
४	५	३	२	१
५	४	३	२	१

किन्तु यदि मनुष्यभव प्राप्त होगया तो आर्यदेश आदि का मिलना अतीव कठिन है।

(११) बोधजीव भावना—संसाररूपी समुद्र में जीव को सर्व प्रकार की ऋद्धियें प्राप्त हो जाती हैं। किन्तु बोध वीज का मिलना बहुत ही कठिन है। बोध नाम रत्नत्रय का है।

दोहा—ऋषभ आदि महावीरलो, चौवीसों जिनराय।
विघ्रहरण मंगलकरण, वन्दो मन वचकाय॥१॥

अथ श्रीपासाठयायन्त्रनो छन्द ॥

२२	३	६	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१६	२५
१८	२४	५	५	१२
१०	११	१७	२३	४

श्री नेमीश्वर संभव शाम, सुविधि धर्म शान्ति अभिराम । अनंत सुव्रत नेमनाथ सुजाण, श्रीजिनवर मुझ करो कल्याण ॥ १ ॥ अजितनाथ चन्द्रप्रभु धीर, आदीश्वर सुपार्श्व गंभीर । विमलनाथ विमल जगजाण, श्रीजिनवर० ॥ २ ॥ मल्लिनाथ जिन मंगल रूप, पचवीस धनुष सुन्दर स्वरूप । श्री अरनाथ नमुं, वर्द्धमान श्रीजिनवर० ॥ ३ ॥ सुमति पद्म प्रभु अवतंस वासुपूज्य शीतल श्रेयांस । कुंथु पार्श्व अभिनंदन भाण श्री जिनवर० ॥ ४ ॥ इणीपरे जिनवर संभारीये दुख दारिद्र विघ्न निवारी ये पच्चीसपांसठ परमाण श्रीजिनवर० ॥ ५ ॥ इम भणता दुख नावे कदा, तो निजपासे राखो सदा । धरिए पंच तणु मन ध्यान श्रीजिनवर० । ६ ।। श्रीजिनवर नामे वंछितफले, मन वंछित सहू आशाफले । धर्मसिंह मुनि नाम निधान श्रीजिनवर० ॥७॥

आवश्यक सूचना

१. जैन शिक्षण संस्था—इस संस्था में बालक बालिकाओं को विद्वान, सदाचारी, धर्मप्रेमी बलवान बनाने की पूरी चेष्टा की जाती है । धार्मिक विषय के साथ संस्कृत, प्राकृत, अंग्रेजी, महाजनी, व्यापारिक शिक्षा आदि का ज्ञान भली भांति स्वल्प समय में कराया जाता है । इस पढ़ाई के साथ ही साथ हुनरकला का भी ज्ञान कराया जाता है।

२. जैन रत्न हुनरशाला—इस हुनरशाला में स्वदेशी हर किस्म का कपड़ा बनकर बाहर बिक्री के लिए जाता है। विद्यार्थियों को भी इसीमें कार्य सिखलाया जाता है। विधवा-सधवा बहिनों से सूत कताकर उनको पूरा महिनताना दिया जाता है। वेकारों को थोड़े ही समय में उद्यमी बनादिया जाता है।

२. जैन उत्तम साहित्य प्रकाशक मंडल—इसमें अच्छी-अच्छी उपयोगी पुस्तकें प्रकाशित होती है। उसकी सूची नीचे लिखे मुआफिक है।

≡) जैनधर्म प्रवेशिका
≡) जैन ज्ञानप्रकाश दूसरा भाग
)॥ उत्तम विचार
=) सुखशान्ति का उपाय जैन धर्म शिक्षावली के द्वि. भाग
)॥ मेरी भावना
)॥। पंच कल्याण की भक्ति
-)। आत्मरत्न अनुपूर्वी
)॥ वरदान
)। भारत जागृति
=) जैनज्ञान प्रकाश प्रथम भाग
-) नित्य स्मरण
)॥। जैन उत्तम स्मरण
)॥। शरीर सुधार
-)। कल्पवृक्ष
भेट संस्था की रिपोर्ट
भेट पंजाब भ्रमण
भेट उत्तम कार्य की चेतावनी
भेट विज्ञापन

* वन्दे वीरम् *

शरीर सुधार

प्रकाशक—

रत्नलाल महत्ता

जैन उत्तम साहित्य प्रकाशक मण्डल
उदयपुर-मेवाड़

बाबू श्रीदुर्गाप्रसाद के प्रबन्ध से श्रीदुर्गा प्रेस, धानमण्डी
अजमेर में छापकर प्रकाशित किया।

प्रथमबार
२०००

वीर सं० २४५६

मूल्य)॥

सूचना

आज जब हम देशवासी महानुभावों को देखते हैं तो उनकी मुखाकृति से उनके शरीर निरोग नहीं होने की सूचना मिलती है। यद्यपि बहुत लोग ऐसे हैं कि जो खुद को निरोगी मान बैठे हैं तथापि सूक्ष्म दृष्टि से हमारी संग्रह की हुई सब बातों को आदि से अन्त तक पढ़ें तो वे स्वयं ही मान लेंगे कि हां, अवश्य हम रोगी हैं और यह तन्दुरुस्ती का ह्रास ही हमारे अशुभ दिनों की सूचना दे रहा है।

हमारे देशवासी भाई बहुधा कहा करते हैं कि अमुक रोग कैसा बुरा है कि वह हमारा पीछा नहीं छोड़ता, इसने हमारे शरीर को जर्जरीभूत कर दिया है, बहुत उपाय किये, किन्तु लाभ नहीं हुआ, अब हम कैसे जीएंगे? कोई कहता है कि हमारे पास पैसा नहीं है और बिना पैसे के दवा नहीं हो सकती, इस प्रकार तन्दुरुस्ती के लिये कई विचार किया करते हैं, परन्तु हमारे विचार से उनलोगों की मूर्खता उस मूर्खता से किसी प्रकार कम नहीं

है कि जैसे जहाज में बैठने वाला छिद्र उसमें हो जाने से उसकी परवाह न कर जल भर जाने पर डूबते समय हल्ला मचाता हुआ शीघ्रता से बचने का प्रयत्न करता है। यदि वह सुराख होते ही उसके मिटाने का प्रयत्न करता तो यह दशा क्यों प्राप्त होती। यही हाल हमारे उन भाइयों का भी है कि जिनका वर्णन ऊपर किया जा चुका है कि वे पूर्ण रोगी हो जाते हैं तब दवाइयों की खोज में निकलते हैं।

यह मसल मशहूर है कि "एक तन्दुरुस्ती हजार न्यामत" यदि एक इसी मसले को आप स्मरण रक्खें और अपनी तन्दुरुस्ती ठीक रखने के लिये हमारी "शरीर सुधार बिना पैसे की दवा" के नियमों को आचरण में लावें तो आप दवाई सेवन के बनिस्बत ज्यादह तन्दुरुस्त रह सकते हैं।

"बिना पैसे की दवा बताने के लिये उपदेशों तथा पुस्तकों की कमी है और इसी कमी के कारण डाक्टर वैद्य हकीमों की दिनोंदिन वृद्धि होती जा रही है। और इन महानुभावों की तादाद ज्यादह बढ़ने से तन्दुरुस्ती बिगड़ती जा रही है।

इसलिये बिना पैसे की दवा विद्वानों से संग्रह कर आरोग्य के लिये यहां लिखी गई हैं।

मेरे प्रेमी सज्जनों से निवेदन है कि आप इसे पढ़कर अपने शरीर को निरोग बनाने के लिये अपने दैनिक खानपान आहार विहार को ऐसा बनावें कि जिससे आप रोग के चंगुल से मुक्त हो सकें। अगर इस पुस्तक से हमारे देश भाइयों का कुछ भी लाभ हो और वे अपने अमूल्य शरीर रूपी रत्न की रक्षा करते हुए तन्दुरस्ती बढा सकें तो मैं अपना परिश्रम सफल मानता हुआ आगे १४ वें पुष्प में भयंकर रोगों से बचने के उपाय संग्रह कर लिखने का प्रयत्न करूंगा।

निवेदक

रतनलाल महता

उदयपुर (मेवाड़)

उपवास और अमेरिकन डाक्टर्स

उपवास चिकित्सा में से

(१) पेट पूर्ण होने से भोजन में स्वयं अरुचि होती है, फिर भी अज्ञानी लोग अचार, चटनी और मसाले के निमित्त से ज्यादा भोजन करके दाठ लगाते हैं, वह विष के समान हानि करता है।

(२) शरीर खुद खराब वस्तु को स्थान नहीं देता, मल, मूत्र, सेढ़ा, पसीना आदि को उत्पन्न होते ही फेंक देता है।

(३) खिड़कियें बन्द करके सोने के बाद उसे खोलने से सरदी लगती है। किन्तु हवा में सोने से सरदी नहीं लगती। ज्यादा भोजन करने से मल सड़ने से दिमाग में दर्द व शनेखम आदि होते हैं।

(४) शरीर के लिये हवा बहुत कीमती पदार्थ है हवा से शरीर को कभी नुकसान नहीं होता है।

(५) शरीर में अन्न जलादि के सिवाय सर्ववस्तु विष का काम करती है।

(६) शरीर अपने भीतर रातदिन झाड़ू देकर रोग को बाहिर निकालता है।

(७) उपवास करने से जठराग्नि रोगों को भस्म करती है।

(८) बुखार आने के पहले बुखार की दवा लेना यह निकलते विष को शरीर में बढ़ाने के समान है।

(९) ऐसा एक भी रोग नहीं है जो उपवास से न मिट सके।

(१०) स्वाभाविक मृत्यु से दवाई से ज्यादह मृत्यु होती है।

(११) एक दवाई शरीर में नये बीस रोग पैदा करती है।

(१२) अनुभवी डाक्टरों को दवाई पर विश्वास नहीं है।

(१३) बिना अनुभव वाले डाक्टर दवाई पर विश्वास करते हैं।

(१४) दुनियां को नीरोग बनाने का बड़े २ डाक्टरों ने एक इलाज ढूंढा है वह यह है कि दवाइयों को जमीन में गाड़दो।

(१५) उपवास करने से मस्तिष्क शक्ति घटती नहीं है।

(१६) मनुष्य का खानपान पशु संसार से भी बिगड़ा हुआ है।

(१७) ज्यादा खाने से शरीर में विष और रोग बढ़ता है।

(१८) दुष्काल की मृत्यु संख्या से ज्यादह खाने वाले की मृत्यु संख्या विशेष होती है।

(१९) ज्यादा खाना अन्न को विष और रोग रूप बनाने के समान है।

(२०) कचरे से मच्छर पैदा होते हैं और उस को दूर करना परम जरूरी है। उसी तरह ज्यादा खाने से रोग रूप मच्छर पैदा होते हैं उनको भी दूर करना परम आवश्यक है, दूर करने का एक सरल उपाय उपवास है।

(२१) ज्यों २ अनुभव बढ़ता है त्यों २ डाक्टरों को दवाई के अवगुण प्रत्यक्ष रूप से मालूम होते जाते हैं।

(२२) बड़े २ डाक्टरों का कहना है कि रोग को पहिचानने में हम सर्वथा असमर्थ हैं केवल अन्दाज से काम लेते हैं।

(२३) रोग उपकारक है वह चेताता है कि अब नया कचरा शरीर में मत डालो। उपवास से पुराने को जलादो।

(२४) शरीर को सुधारने वाला डाक्टर शरीर ही है। दवाई को सर्वथा छोड़ विवेक पूर्वक उपवास करने से सौ रोगियों में से नव्वे रोगी सुधरते हैं और यदि दवाई लेवें तो नव्वे रोगी ज्यादा बिगड़ते हैं।

(२५) जैसे शरीर में घाव स्वयं भर जाता है वैसे ही सब रोग बिना दवाई के मिट जाते हैं।

(२६) शरीर में उत्पन्न हुए विष को फैंकने वाला रोग है। घरके मैले व कचरे को ढांकने के तुल्य दवाई है जो थोड़े समय अच्छा दिखाव करके भविष्य में भयंकर रोग फूट निकालती है। जब कि शुद्ध उपवासों से रोग के तत्व नष्ट होते हैं, यह इस मेले कचरे को फैंकने के समान है कचरा फेंकने में पहले थोड़ा कष्ट, पीछे बहुत सुख, इसी प्रकार तपश्चर्या में थोड़ा कष्ट पड़ता है। कचरा ढांकने में पहले थोड़ा आराम पीछे से बहुत दुःख। इसी प्रकार दवाइयों से रोग ढांकने में प्रथम लाभ पीछे से बहुत दुःख निरन्तर भोगने पड़ते हैं।

(२७) ज्यों २ दवाई बढ़ती जाती है त्यों २ रोग भी बढ़ते जाते हैं। मनुष्य दवाइयों की आतुरता

और मोह छोड़कर कुदरत के नियम पालेंगे तब ही सुखी होवेंगे।

(२८) दवाई से रोग नष्ट होता है यह समझ ही शरीर का नाश करने वाली है। आज इसीसे जनता रोगों से सड़ रही है।

(२९) सरदी लगने पर तम्बाखू आदि दवाई लेना विष को भीतर रखना है।

(३०) एडवर्ड सातवें बादशाह का डाक्टर कह गया है कि डाक्टर लोग रोगों के दुश्मन है।

(३१) अज्ञान के जमाने में दवाई का रिवाज शुरू हुआ था।

(३२) दवाइयें विष की बनती हैं और वे शरीर में विष बढ़ाती हैं।

(३३) शरीर में विष डालकर सुखी कौन हो सकता है।

(३४) जुलाब लेने से रोग भीतर रह जाता है किन्तु उपवास से रोग जड़मूल से नष्ट होकर आराम होता है।

(३५) उपवास करने वाले रोगी को मुंह में और जीभ पर उत्तम स्वाद का अनुभव होवे तब रोग का नष्ट होना समझना चाहिये।

(३६) शरीर में जो रोग कार्य करता है वही काम दवाई करती है।

(३७) अनुभवी डाक्टर कहते हैं कि दवाई से रोगी ज्यादह बिगड़ते हैं।

(३८) दवाई न देना यह रोगीपर महान उपकार करने के समान है, केवल कुदरती पथ्य हवा, भावना आदि परम ऊपकारक है।

(३९) ज्यों २ डाक्टर बढ़ते हैं त्यों २ रोग और रोगी बढ़ते हैं।

(४०) डाक्टर घट जांय तो रोग और रोगी भी घट जांय।

(४१) रोगी के पेट में अन्न न डालने से रोग स्वयं ही नष्ट हो जाता है।

(४२) दवाई को निकम्मा समझ ले वही सच्चा डाक्टर है।

(४३) हाथ पैर आंख को आराम देते ही वैसे उपवास करना यह जठर (पेट) को आराम देना है।

(४४) अमेरिका में डाक्टर लोग रोगी को उपवास कराके रात्रि को देखते रहते हैं कि शायद वह गुप्त रीति से खाना खा न ले।

(४५) तीनदिन के बाद उपवास में कठिनाई मालूम नहीं पड़ती।

(४६) टूटी हड्डी का जुड़ना और बन्दूक की गोली की मार को भी उपवास से आराम पहुंचता हैं।

(४७) पशु पची भी रोगी होने के बाद तुरंत आराम न हो वहां तक खाना पीना छोड़ देते हैं।

(४८) कफ पित्त और वायु में घट बढ़ होने से रोग होता है।

(४९) वायु का सात दिन में, पित्त का दस दिन में, कफ़ का रोग बारह दिन में अन्न न लेने से (उपवास करने से) आराम होता है और रोग नाश हो जाता है।

(५०) दवाई से थककर अमेरिकन डाक्टरों ने उपवास की अनादि सिद्ध दवाई शुरू की है।

(५१) जो दवाई नहीं करता है वह सब रोगियों से ज्यादह सुखी है।

(५२) भूख न लगना रोग नहीं है किन्तु जठराग्नि की नोटिस है कि पेट में माल भरा हुआ है। नये माल के लिये स्थान नहीं है। एकआध उपवास कीजियेगा।

(५३) उपवास करने से शरीर में दर्द होता है, चक्कर आते हैं, मुंह का स्वाद बिगड़ जाता है।

इसका प्रयोजन यह है कि शरीर में से रोग निकल रहा है।

(५४) लकवे जैसे भयङ्कर रोग भी उपवास से मिट जाते हैं।

(५५) गर्मी में तीन उपवास से रोग नष्ट होता है और वही रोग शर्द ऋतु में दो उपवास से नष्ट होता है।

शरीर सम्बन्धी नियम।

(१) मनुष्य शरीर बहुत पवित्र है परन्तु अज्ञानी लोग शारीरिक प्रकृति के विरुद्ध शराब, भङ्ग, अफीम, गांजा, बीड़ी, सिगरेट, तम्बाखू आदि अनेक नशीली चीज़ों का दुर्व्यसन सेवन करते हैं जिससे उनके फेफड़ों में विकार उत्पन्न हो जाता है और स्वास्थ्य को भारी धक्का पहुंचता है।

(२) जो लोग देश में उत्पन्न होने वाली दूध, दही, घृत आदि बलवर्द्धक वस्तुओं को छोड़ कर विदेशी चीजें-जैसे मोरस शक्कर की बनी हुई मिठाइयां, बिस्कुट, विदेशी दूध की टिकियां और वेजिटेबल घृत आदि आरोग्य

नाशक पदार्थों को काम में लाते हैं। वे स्वास्थ्य से हाथ धो बैठते हैं।

(३) मानसिक तथा शारीरिक परिश्रम करने वालों को महीने में चार दिन उपवास कर विश्राम लेना चाहिये। प्रत्येक कारखाने महीने में चार दिन अर्थात् सप्ताह में एक दिन बन्द रहते हैं। भगवान् महावीर ने फरमाया है कि महीने में ६ दिन उपवास कर अपने आत्मकृत भले बुरे कामों का चिन्तवन करना चाहिये। क्योंकि इससे सब रोग नष्ट होते हैं और विश्राम लेने से शक्ति बढ़ती है। जो ऐसा नहीं करते उनकी मानसिक तथा शारीरिक शक्ति अवश्य घट जाती है।

(४) मर्यादा पूर्वक सोने से भी शरीर तथा मस्तिष्क को बहुत लाभ होता है परन्तु बहुत से लोग इसका विचार न करके नाटक, सिनेमा, वेश्यानृत्य देखने तथा खराब२ उपन्यास आदि पढ़ने में निद्रा के समय को व्यर्थ खराब कर स्वास्थ्य बिगाड़ते हैं।

(५) यहां के देशवासियों की गर्म प्रकृति है जिन के लिये यहीं की उत्पन्न हुई चीजों का सेवन

विशेष लाभदायक होता है और शरीर की तन्दुरुस्ती को बढ़ाने वाला होता है। पहिले बहुधा लोग हाथकते सूत के कपड़े पहिनते थे। अब खराब संगति के कारण प्रायः सब जीवों के बलिदान का कारण चर्बी लगा हुआ मीलों द्वारा तैयार किया हुवा कपड़ा जरूरत से जियादा पहिनकर अपने स्वास्थ्य को नष्ट करते हैं।

(६) जो मनुष्य सूर्योदय होने तक सोते रहते हैं उनका स्वास्थ्य खराब हो जाता है। इसलिए ज्ञानवान पुरुष ब्रह्म मुहूर्त्त में नींद खुलते ही उठकर ईश्वर स्मरण में अपना मन लगाते हैं। उनका शरीर तन्दुरुस्त रहता है। इसलिए सब मनुष्यों को अपनी नींद खुलते ही स्वास्थ्य की रक्षा के लिए चार घड़ी रात बाकी रहे उठना चाहिये। इसका वर्णन तुलसीदासजी व चाणक्य ने अपने ग्रन्थों में विस्तार पूर्वक किया है। यह तो रामायण-पढने वाले सर्व साधारण भलीभांति जानते हैं कि राम और लक्ष्मण मुर्गे की बांग की आवाज सुनकर शैया छोड़ देते थे।

(७) जो मैले और बदबूदार वस्त्र पहिनते हैं और मुंह शुद्ध नहीं करते, हर समय बहुत खाते हैं और कटु शब्दों का प्रयोग करते हैं । सायंकाल होते ही सोजाते हैं और सूर्य्य उदय होने के पश्चात् उठते हैं। ऐसे मनुष्यों को चाहे वे देशाधिपति ही क्यों न हो लक्ष्मी उन को छोड़ देती है।

(८) सोते समय मुंह खुला रहना चाहिये जिस से सांस लेने में कठिनाई न हो। मुंह ढककर सोना स्वास्थ्य के लिये बहुत हानिकारक है।

(९) रात्रि को जब ओस गिरे तब खुले मैदान में नहीं सोना चाहिये और खुले बदन और खुले शरीर बाहिर न निकलना चाहिये, क्योंकि इससे हाथ पैर टूटने लगते हैं और कभी कभी तो ज्वर भी आजाता है।

(१०) निर्द्धारित समय पर पेशाब व टट्टी हमेशा जाना चाहिये। भूल कर भी टट्टी व पेशाव की हाजत नहीं रोकना चाहिये। अगर कब्ज मालूम हो तो उपवास कर थोड़ा २ गर्मपानी का सेवन करना चाहिये। इससे कब्ज मिट कर साफ दस्त लग जाती है।

विशेष लाभदायक होता है और शरीर की तन्दुरुस्ती को बढ़ाने वाला होता है। पहिले बहुधा लोग हाथकते सूत के कपड़े पहिनते थे। अब खराब संगति के कारण प्रायः सब जीवों के बलिदान का कारण चर्बी लगा हुआ मीलों द्वारा तैयार किया हुवा कपड़ा जरूरत से जियादा पहिनकर अपने स्वास्थ्य को नष्ट करते हैं।

(६) जो मनुष्य सूर्योदय होने तक सोते रहते हैं उनका स्वास्थ्य खराब हो जाता है। इसलिए ज्ञानवान पुरुष ब्रह्म मुहूर्त्त में नींद खुलते ही उठकर ईश्वर स्मरण में अपना मन लगाते हैं। उनका शरीर तन्दुरुस्त रहता है। इसलिए सब मनुष्यों को अपनी नींद खुलते ही स्वास्थ्य की रक्षा के लिए चार घड़ी रात बाकी रहे उठना चाहिये। इसका वर्णन तुलसीदासजी व चाणक्य ने अपने ग्रन्थों में विस्तार पूर्वक किया है। यह तो रामायण पढने वाले सर्व साधारण भलीभांति जानते हैं कि राम और लक्ष्मण मुर्गे की बांग की आवाज सुनकर शैया छोड़ देते थे।

चित नियमों का पालन करना आवश्यक है।

१-आंखें अच्छी तरह काम न दे व धुंधलाहट मालूम होने लगे तो लिखना पढ़ना बन्द करदो।

२-बहुत तेज रोशनी व बिजली की रोशनी में पढने लिखने से नेत्रों को बहुत हानि पहुंचती है।

३-कमजोर नेत्रों वालों को सूर्य्य की रोशनी के सामने टकटकी लगाकर नहीं देखना चाहिये और चलते फिरते अथवा रेलगाड़ी मोटर आदि में बैठे हुवे पढ़ना लाभदायक नहीं है।

४-नेत्रों को त्रिफला तथा ठण्डे पानी से धोना भी लाभदायक है।

(१३) मनुष्यों को सिर के बाल नहीं बढ़ाना चाहिये। बालों को कटाकर छोटे करा लेना आवश्यक है। ऐसा करने से बालों की जड़ों पर कम भार पड़ता है और स्याही रहती है। बदन में तेल का मालिश करना भी लाभदायक है।

(१४) शुद्ध वायु और शुद्ध अन्न, जल, वस्त्र आदि जविन के लिये अत्यन्त आवश्यक हैं ये किस

(११) तालाब, कुए, बावड़ी आदि गहरे जल में और वर्षा ऋतु में बहती हुई नदी में स्नान करना भयप्रद है ; वैसे भी देखा जाय तो हाथ के सहारे स्नान करना बहुत साधारण व उपयोगी होता है । इसमें अधिक जल की आवश्यकता नहीं होती । बहुत से बग़ैर तैराकू लोग गहरे जल में उतर कर डुबकी लगाते हैं जिससे उनके मुंह व कानों के द्वारा शरीर में पानी पहुंचता है और अधिक जल पहुंचने से वे बहुत दुखी होते हैं । इसी तरह बहुत से मनुष्यों की पानी में डूब कर मृत्यु होजाती है । सभ्य और समझदार लोग घर पर ही स्नान करते हैं जिससे बन्द मकान के कारण ठंडक भी मालूम नहीं होती और हवा के ठण्डे झोंकों से बचाव भी होता है ।

(१२) शरीर को साफ़ रखने के लिये हाथ से बने हुवे हस्नाड़ों को काम में लाना चाहिये । सब इन्द्रियों में नेत्र मुख्य हैं ! बिना नेत्रों के मनुष्य जीवन दुखदायी होजाता है इसलिये नेत्रों की रक्षा करना मनुष्य का सबसे पहिला कर्तव्य है । नेत्रों की रक्षा के लिये निम्नलि-

चित नियमों का पालन करना आवश्यक है।

१–आंखें अच्छी तरह काम न दे व धुँधलाहट मालूम होने लगे तो लिखना पढ़ना बन्द करदो।

२–बहुत तेज रोशनी व बिजली की रोशनी में पढने लिखने से नेत्रों को बहुत हानि पहुंचती है।

३–कमजोर नेत्रों वालों को सूर्य्य की रोशनी के सामने टकटकी लगाकर नहीं देखना चाहिये और चलते फिरते अथवा रेलगाड़ी मोटर आदि में बैठे हुवे पढ़ना लाभदायक नहीं है।

४–नेत्रों को त्रिफला तथा ठण्डे पानी से धोना भी लाभदायक है।

(१३) मनुष्यों को सिर के बाल नहीं बढ़ाना चाहिये। बालों को कटाकर छोटे करा लेना आवश्यक है। ऐसा करने से बालों की जड़ों पर कम भार पड़ता है और स्याही रहती है। बदन में तेल का मालिश करना भी लाभदायक है।

(१४) शुद्ध वायु और शुद्ध अन्न, जल, वस्त्र आदि जीवन के लिये अत्यन्त आवश्यक हैं ये किस

प्रकार प्राप्त हो सकते हैं ? इसका विचार प्रत्येक व्यक्ति को करना चाहिये।

(१५) आरोग्यता का सादगी से बड़ा घनिष्ट सम्बन्ध है। आडम्बर और फजूलखर्ची से कुछ भी लाभ नहीं होता। मनुष्यों को इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिये कि हमारे मकानों में प्रकाश आता है या नहीं तथा हवा काफी आती है अन्न, जल, वस्त्र शुद्ध काम में आते हैं या नहीं ? हमारे घर के मनुष्य अच्छे तन्दुरुस्त तो रहते हैं। आदि बातों पर चिन्तन कर यथाशक्ति प्रबन्ध करना चाहिये।

(१६) स्वास्थ्य कायम रखने के लिये वायु स्नान, सूर्य्य के तेज का (अर्थात धूप का स्नान) भी लाभदायक है।

(१७) घर में प्रकाश तथा सफाई रखना नितान्त आवश्यक है।

(१८) मनुष्यों को अन्न. जल, का अधिक आदर करना चाहिये। शुद्ध अन्न जल अधिक क्रिया से अर्थात् शुद्धता से तैयार होगा। वही तन्दुरुस्ती जियादा रहेगी।

(१९) जिन खाद्य पदार्थों पर-मिठाई, दूध, दही आदि पर मक्खियें जियादा बैठती हों उनको

काम में नहीं लाना चाहिये क्योंकि उनके बैठने से वे जहर के कीटाणु भोजन पर छोड़ जाती हैं। इसलिये इसका पूरा ध्यान रखना स्वास्थ्य के लिये लाभदायक है।

(२०) जो मनुष्य उपवास नहीं करते उनके शरीर में निम्नलिखित रोगों में से एक आध तो जरूर हो ही जाता है। (अ) अघोवायु में दुर्गन्ध। (आ) मल में दुर्गन्ध (इ) खट्टी डकार या हिचकियें आना (ई) भोजन पर अरुचि। (उ) शरीर या पेट का भारीपन। जिनको ऊपर बताई हुई कोई शिकायत हो उसको उपवास द्वारा निवारण करना चाहिये। इन बीमारियों के लिये उपवास के बराबर दूसरी कोई दवाई लाभ नहीं पहुंचा सकती।

(२१) निरोग वही मनुष्य है जिसके निरोग शरीर में निरोग मन का निवास है।

(२२) आरोग्य की दृष्टि से मनुष्यों को पोशाक पर कुछ विचार करने से लाभ ही होगा क्योंकि वजनदार जेवर और चमकीली पौशाकों की सजावट में भारत रोगग्रस्त होरहा है अगर मनुष्य गहने और कपड़े शरीर पर कम लादे तो शरीर से बहुत लाभ उठा सकता है।

(२३) भगवान् महावीर स्वामी ने अपने कर्म रोग क्षय करने के लिये और मनुष्यों में अहिंसा धर्म फैलाने के लिये अनेक कष्ट सहन किये और स्वयं साढ़े बारह वर्ष और पन्द्रह दिनों के (बेले) २२९, (तेले) तीन २ दिन के बारह, एक २ पखवाड़े के बारह, और महीने २ के ६, और डेढ़ २ मास के दो, दो २ मास के ६, और ढाई २ मास के दो, तीन २ मास के २, चार २ महीने के ९, और छः २ महीने के दो उपवास किये और भोजन केवल ३४९ दिन ही किया है।

(२४) त्याग और तप के बराबर उत्कृष्ट कोई पदार्थ इस जगत में नहीं है इससे द्रव्य रोग और भाव रोग दोनों नष्ट होते हैं।

(२५) जिनका शरीर कमजोर हो जिनके पैरों में दर्द रहता हो उनके लिये हमारी यही सम्मति है कि हाथकते सूत की धोती आदि कपड़े पहन कर नंगे पैर चलने का प्रयोग कर देखे। जो स्वच्छ हवा में सुबह शाम घूमता है और पुरुषार्थ करता हुआ ईश्वर भजन करता है वह बहुत तन्दुरुस्त रहता है। ओं शान्ति ३ ॥

जैन उत्तम साहित्य पुष्प नं. २१

चिन्ता-मुक्त

लेखक—

रत्नलाल महता

प्रकाशक—

प्रेमराजजी मोतीलालजी बोहरा,
अमला (ग्वालियर)

मुद्रक —

दि डायमण्ड जुबिली प्रेस, कड़क्का चोक, अजमेर.

प्रति १००० | महावीर जयन्ति
वीर सं० २४५६ | न्योछावर

आवश्यक सूचना।

१—जैन शिक्षण संस्था में बालक बालिका के सुशिक्षित सदाचारी बनाने के लिये पढाई का वा विद्यार्थियों के भोजन वस्त्रादि का अच्छा प्रबन्ध है।

२—जैन हुन्नरशाला में विद्यार्थियों को धार्मिक व व्यवहारिक पढाई के साथ उद्योग धन्धे सिखाने का व निराधार को काम सिखाकर एक साल में वेतन पाने के काबिल बनादिया जाता है। और इस हुन्नरशाला में हाथका बना हुआ हरतरह का कपड़ा तैयार मिलता है यहां का बना हुआ कपड़ा उदयपुर, जोधपुर, बीकानर, रतलाम, चूरूशहर, भोपाल, सरदारशहर खानदेश के व्यापारी मंगवाकर दुकानों पर वेंचते हैं। जिन सज्जनों को हाथ का कपड़ा खरीदने की ज़रूरत हो तो यहां से किफायत के साथ मगावें।

३—जैन उत्तम साहित्य प्रकाशक मंडल में २१पुष्प जैन ज्ञानप्रकाश धार्मिक छप चुके हैं और बाकी छपकर निकलते जाते हैं।

निवेदक—
रत्नलाल महता
संचालक जैन ज्ञान पाठशाला,
उदयपुर (मेवाड़)

वन्देवीरम

चिन्ता-मुक्त

यह संसार असार है, इसके रंग नित्य पलटते रहते हैं। मनुष्य जीवन पानी के बुलबुले के समान है, परन्तु उसीका जन्म ग्रहण करना सार्थक है, जिससे अपने कुटुम्ब जाति एवं देश की कुछ भलाई होती रहे, और स्वयं धार्मिक जीवन बितावे।

जो देश की स्थिति को सुधारते एवं देश सेवा में भाग लेते हैं उनहीं का नाम सदा अमर रहता है। देश में एक तरफ गरीब भाइयों की बेकारी है, तो दूसरी ओर लोग फेशन और कर्जदारी को बढ़ा रहे हैं। पूंजीपति फेशन की वृद्धि को ही मौज-मजा उड़ाना समझते हैं। उन जेण्टलमेनों को अपने देश के गरीब भाइयों का कुछ भी खयाल नहीं है। मैं आज आपके सामने दो मित्रों की वार्ता हुबहु यहां लिखता हूं। जिसको मैंने सुनी है। कृपा कर दोनों मित्रों की कथा पढ़कर विचार करेंगे तो इस कथा

से आपको व आपकी सन्तान को जरूर लाभ होगा। मैं उन मित्रों का नाम जाहिर नहीं करता हूं क्योंकि उन्होंने अपना नाम जाहिर करने की आज्ञा नहीं दी है।

दो मित्रों की वार्ताएँ

पहिला व्यक्ति—मित्रवर! कहिये! आजकल आप कहां रहते हैं? कभी आपके दर्शन भी नहीं होते?

दूसरा व्यक्ति—(बड़ी चिन्ता के साथ) क्या कहूँ भाई............!

पहिला—प्रियवर! आपकी यह दशा देखकर तो मेरा हृदय शून्यसा हो गया। आप पर ऐसी कौनसी आपत्ति आई है, जिससे इतनी उदासीनता छायी है।

दूसरा—मेरी करुण कहानी सुनकर तो आपका हृदय भी दहल उठेगा। आजकल मेरी स्थिति बड़ी ही नाजुक हो रही है। यहां तक कि पैसे २ के लिये तंग हो रहा हूं, कर्जदार मेरी जान खाते हैं, स्त्री, बच्चे जेवर कपड़े के लिये तंग करते हैं, वेतन तो वही ३०) ही है, फिर मेरी पोजी-

शन रखना। यदि पोजीशन नहीं रखता तो फिर लोग बड़ा आदमी जेण्टलमैन नहीं जानेंगे; और मेरा अदब भी नहीं रहेगा, इसी चिन्ता से मैं दुःखी हूं, अतः कई दिन तक आप से नहीं मिल सका।

पहिला—अच्छा! भाई साहब! देखिये! आपकी चिन्ता की बात मैं समझ गया। और इसके ऊपर मैंने अभी कुछ विचार भी लिया है। वह भी समझाता हूं।' मेरी मासिक आमदनी और आपका मासिक वेतन बराबर ही है। पर उसमें एक बात मालूम पड़ती है कि आप अपना खर्च मितव्ययता पूर्वक नहीं करते होंगे, फिजूल खर्च करते होंगे।

आपकी पत्नी स्वयं काम नहीं करती होगी। इसलिये आपको इतना चिन्ता ग्रसित होना पड़ता है। मैं अपना सादा जीवन बिताता हूं, यही कारण है कि मैं स्वस्थ हूं, कभी चिन्ता का नाम भी नहीं। सदा हंसता, खेलता रहता हूँ और सादगी का अभ्यास मैंने स्त्री बच्चों को भी करा दिया है। वे भी इससे बड़े प्रसन्न हैं।

दूसरा—ये बातें तो मैंने आपकी सुनी, पर मैं तो सादा जीवन नहीं बिता सकता हूं, क्योंकि मेरी पोजीशन में बट्टा लगता है। फेशन छोड़ने मे लोग मेरी तरफ अंगुली उठाकर सुअर की भांति घूरते हैं, और कहते हैं कि "ये देखो पहिले के जेण्टलमेन" अब सादगी धारण की है, मालूम पड़ता है कि जेब खाली होगई है।

पहिला—मित्रवर! आप उन लोगों की बातों पर ध्यान मत दीजिये। इनके कोई काम नहीं है। इसमे ये लोग सदा छिद्र ही खोजा करते हैं। कहा भी है—बैठा ठाला क्या करे। दूसरी बात यह भी है कि सबको प्रसन्न रखना एक आदमी के हाथ की बात नहीं है। काम वही करना चाहिये जो निजको हितकर, और जिसको ज्यादा लोग पसंद करें। अतः अपनी आमदनी को देखकर तथा लोगों की बातों पर खयाल न करके मितव्यय पूर्वक काम करिये तो अच्छा हो नहीं तो लोगों की बातों में अमीर भी तीन दिन में फकीर हो जायगा।

दूसरा—प्रियवर! मैंने आपकी ये बातें तो अक्षरशः ग्रहण करली, परन्तु घर की औरत को कैसे समझाऊं, वह भी मेरे जैसे फेशनेबुल कपड़े पसन्द करती है, और रात को ही समाचार मिला है कि मेरे साले की शादी होने वाली है, उसमें उसको जाना जरूरी है। शादी की फेशन अदा करने के लिये नया बढ़िया, चमकीला शिल्क का घाघरा, साड़ी के ऊपर सच्ची किनारी का काम और सिर के लिये सोने की छूंत सवेरे ही तैय्यार करा दो, नहीं तो मैं जाने का नाम भी नहीं लूंगी, और न आपको काम करने दूंगी, यही जटिल समस्या है।

दूसरी समस्या ने तो मेरे प्राण ही शरीर से सुखा दिये हैं। वह यह है कि—जिसका कर्ज देना है वह मेरे से तगाजा कर रहा है। उसका भी तीन साल में ५००) रुपया हो गया सो कर्जदार ने तीन साल का ब्याज जोड़ा तो १३३॥≡)॥ हुआ है, उसका कहना है कि यदि आप मूल रुपया नहीं दे सकते तो केवल ब्याज का ही रुपया दे दीजिये, यदि नहीं देंगे तो सरकार में नालिश करके

और गिरफ्तारी का वारण्ट निकलवा कर कैद करा दूंगा। इन दोनों बातों की समस्या हल करने के लिये आपके पास आया हूँ। तथा आपके पास कुछ रुपया हो तो कृपया मुझे दे दीजिये जिससे मेरी भी कुछ सहायता हो जाय और आपकी भी कुछ हानि न होगी।

पहिला—मित्र! चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं है। कुछ मासिक रुपया बांध दीजिये कि इतना रुपया आपको प्रति मास देता रहूंगा और कुछ व्याज भी कम कराने की कोशिश करना जिससे, आपको भी कुछ फायदा होगा। और औरत को इस प्रकार समझाइएगा कि देखो! भारत की हजारों स्त्रियों ने विदेशी चटकीले वस्त्र पहिनने छोड़ दिये और स्वदेशी वस्त्र धारण किये। एवं गहना पहिनना छोड़ दिया और सादगी को ही अपनाया है। इसी तरह आप भी अपनी स्त्री को समझा कर सादगी का पाठ सिखलाइए और ग्रह प्रबन्ध का भार भी उसी के ऊपर छोड़िये। और स्वयं परिश्रम करके अपने गृह की काया पलट दीजिये तो बहुत ठीक होगा।

दूसरा—बहुत अच्छा–पहिले मेरा हिसाब सुन लीजिये फिर उसमें से जो फिजूल खर्चा हो उसको दूर करके मेरा बजट आप स्वयं बना दीजिये। उसके मुताबिक मैं काम करूंगा। सुनिये—

१५) भोजन खर्च	२) नाटक–सिनेमा
१०) पोजीशन खर्च (टाई, हेट, बो. इत्यादि)	२) तेल साबुन आदि
	२) धुलाई
	५) मकान भाड़ा बिजली
४) बीड़ी–सिगरेट	५) अन्य खर्च

मैं ४५) महावार में भी बड़ी कठिनाई से काम चला रहा हूं। इसीलिये लोगों का कर्जा हो गया है। इसके सिवाय घर में कोई विशेष बर्तन वगैरह फरनीचर नहीं है। अब आप बतलाइये मैं कैसे अपना गुजारा करूं। मेरी अक्ल हैरान है।

पहिला—मैंने आपका मासिक खर्च देखा। जिसको देखकर मेरे कान खड़े हो गये। आप तो पूरे रईस हैं। इतना खर्च तो अमीरों का होता है। फिर भी आपने

खद्दर भारत माता का सच्चा सुहाग है,खद्दर गरीब किसानों का उद्धारक है, खद्दर ही भूखमरों का अहार है सादगी से आदमी अमर पद पा सकता है ।

इससे आप खद्दर धारण कीजिये ।

सादा खान–पान पर ध्यान दीजिये और विलाशता को छोडिये ।

खद्दर के पहनने से उसमें लगा हुआ धन स्वदेश में ही रहेगा । भारतवासियों की आह, का बुझाने वाला खद्दर ही है । करोडों भूखों की रक्षा करने वाला खद्दर ही है । एक गज खद्दर के खरीदने से तीन आने गरीव को मीलते हैं, विदेशी कपड़ा एक गज खरीदने से उसका पूरा मूल्य विदेशियों के हाथमें जायगा और भारतवासी भूखे रह जाते हैं । अतः आप सादा जीवन विताने का प्रण कीजिये । और स्वदेशी वस्तुएँ खरीद कर स्वयं पहनिये और स्त्री, बाल बच्चों को भी पहनाइये । ऐसा करने से आपके भी ३०) में सब गृह प्रबंध होजायगा, और यदि आपकी स्त्री को कुछ समय मिले तो चरखा कातने की रूचि पैदा करिये,

यह बेकाम पर भी अच्छा काम देता है, फुरसत के समय में भी पैसे को पैदा करने एवं देश की दशा सुधारने का अमोघ शस्त्र है। खद्दर गरीबों से लेकर अमीरों तक को सुख देने वाला है। हमारे पूर्वजों का यही प्रण था कि "मोटा खाना, मोटा पहनना" इसी व्रत को आप दृढ़ता पूर्वक निभाइये। और हे मित्र ! आज महावीर जयन्ती है इसलिये स्वदेशी एवं सादगी का व्रत ग्रहण कीजिये।

दूसरा--(हाथ जोड कर) हे भगवान् ! मैं आज से आपके समक्ष प्रतिज्ञा करता हूं कि चमक, दमक, तड़क-भड़क के विदेशी कपड़े न पहिन कर स्वदेशी वस्त्र और चीजों का इस्तेमाल करूंगा, और सादगी से जीवन बिताऊंगा।

(हर्ष ध्वनि)

क्योंकि--

सादगी ही जीवन है, विलाशता ही मृत्यु है।
यह अमर सिद्धान्त है। इसी मे चैन की बंशी बजेगी ?

ॐ शान्तिः

१—फेशन का बॉयकाट

खूब खरच की डिगरी बढ़ा दीवी, इन प्यारे फेशन वालों ने।
और देश मर्यादा उठा दीवी, इन प्यारे फेशन वालों ने ॥
जो खद्दर उम्दा आती थी, उसको तो अनफिट करडाली।
यह जीन मखनियाँ चरवी की अपनाली फेशन वालों ने ॥ १॥
जो पगड़ी पेचे आते थे, उनको फेशन से दूर किये।
बाबूजी बनने को टोपी, लग वाली फेशन वालों ने ॥२॥
रेजा टुकड़ी का त्याग किया मखमल अतलस पर ध्यान दिया।
हिंसा का कुछ नहीं मान किया इन प्यारे फेशन वालों ने ॥ ३॥
अब अपटूडेट ही बनने में अपना कर्त्तव्य ही मान लिया।
नहीं देश बिगाड़ का ध्यान दिया, इन प्यारे फेशन वालों ने ४
चलने की कुव्वत पैरों से, फेशन वालों की जाती रही।
मोटर साइकल को फौरन ही, मंगवाली फेशन वालों ने। ५॥
सब देश की हालत बिगड़ गई, इस जेन्टलमेनी फेशन से।
लज्जा को तन से दूर करी, इन प्यारे फेशन वालों ने ॥६॥
यह दास तो फेशन वालों को, सोते निद्रा से जगा है रहा
अब भी नहीं सम्भलेंगे तो बलिहारी है फेशन वालों की ॥७॥

२—स्वदेश भक्ति

स्वदेशी नाम हो अपना. स्वदेशी काम अपना हो।
स्वदेशी बात हो अपनी, स्वदेशी गीत अपना हो ॥१॥
स्वदेशी बहन की चुन्दरी. स्वदेशी मातृ का दामन।
स्वदेशी भाई की पगड़ी, स्वदेशी अङ्ग अपना हो ॥२॥
स्वदेशी साड़ी गृहिणी की, स्वदेशी पुत्र की टोपी।
स्वदेशी देश की धोती, स्वदेशी कुर्ता अपना हो ॥३॥
स्वदेशी खाने खायेंगे, स्वदेशी वस्त्र सब पहिने।
स्वदेशी जिन्दगी अपनी, स्वदेशी कफ़न अपना हो ॥४॥
स्वदेशी उन्नति करना, धर्म अविरुद्ध चल कर के।
रहे उद्देश्य जीवन का, स्वदेशी राज्य अपना हो ॥५॥
न गोरों से जलन हमको, न कालों से हमें प्रीति।
फ़कत पर इच्छा है अपनी, नहीं अपमान अपना हो ॥६॥
बराबर गोरे अरु काले, बैठें सब एक आसन पर।
कहें सब प्रसन्न हो-होकर, करो स्वीकृत जो अपना हो ॥
यही है भावना मेरी. यही अरदास मेरी है।
यही हो कामना मङ्गल, यही मन भाव अपना हो ॥८॥

३—वन्दे वीरम्

है दिव्य शक्तिदाता, शुभ मन्त्र वन्देवीरम् ।
बल तेज का प्रदाता, शुभ मन्त्र वन्देवीरम् ॥ध्रुव॥
नसनस में मानवों के, भर देता वीर ज्योति ।
साहस विमल जगाता, शुभमन्त्र वन्दे वीरम् ॥१॥
कायरता और आलस, कर देता नष्ट क्षण में ।
दृढ़ आत्मशक्ति लाता, शुभमन्त्र वन्देवीरम् ॥२॥
हरलेता पापपुंज मङ्गल महान करता ।
है पापियों का त्राता, शुभमन्त्र वन्देवीरम् ॥३॥
पाखंडियों के मद का, करता है क्षण में मर्दन ।
मिथ्यात्व तम हटाता, शुभ मन्त्र वन्देवीरम् ॥४॥
सत्यार्थ धर्म रक्षक, भय शोक मद विनाशक ।
सत् ज्योति जगमगाता, शुभ मन्त्र वन्देवीरम् ॥५॥
आपत्तियों दुखों का, नाशक है सुख प्रकाशक ।
है ज्ञान गुण बढ़ाता, शुभ मन्त्र वन्दे वीरम् ॥७॥
बोलें ऐ वीरों मिलकर, अत्यन्त उच्च स्वर से ।
'वत्सल' सदैव गाता, शुभ मन्त्र वन्दे वीरम् ॥७॥

४—वीर दयानिधि ने—

सत्‌धर्म का डंका भारत में, बजवाया वीर दयानिधिने।
हिंसा का शासन नष्ट अहो, करवाया वीर दयानिधि ने॥
सबलों के अत्याचारों से, जब निर्बल पीसे जाते थे।
तब विश्वप्रेम का सरस सुधा, पिलवाया वीर दयानिधि ने॥
मूकों के भाषण आर्तनाद से, गगन अहो! जब गूँज उठा।
करुणा का अविरल मेघ, अहो! बरसाया वीर दयानिधिने॥
"वैदिक हिंसा हिंसा न भवति" यह मूढ़ मंत्र जब जपतेथे।
तब दिव्यदया का स्रोत अहो! सरसाया वीर दयानिधिने॥
थे क्रिया कांड में मग्न ज्ञान से शून्य लकीर फकीर बने।
सद् ज्ञानसूर्य की किरणों को चमकाया वीर दयानिधिने॥
थे आत्म शक्ति से रिक्त, भीरुता-कायरता थी समा रही।
"है शक्ति अनन्त आपमें" यह समझाया वीर दयानिधि ने॥
तब अखिलविश्वमें, शांतिसौख्यकी धारा विमल बहादी थी।
अविनाशी अविचल मोक्षमार्ग दिखलाया वीर दयानिधिने॥
हे दयाधर्मधारक "वत्सल" हे वीर उपासक शीघ्र उठो।
अब चलो उसीपथ पर, जिसपर चलवाया वीर दयानिधिने॥

५—देशहितैषी गायन

करो निज देश की सेवा, सभी सजन मिलजुल सारे।
बनो सब देश के प्रेमी, सभी सजन मिलजुल सारे॥
हिंसा के वस्त्र को त्यागो, मोह की नींद से जागो।
नहीं भय भीत हो भागो, सभी मिलजुल सजन सारे॥
अहिंसा वस्त्र को पहनो, यही सत्य गुरु नो—कहनो।
सदा स्वतन्त्र से रहणो, सभी मिलजुल सजन सारे॥
हटावो वस्त्र चर्वी के, करो निज देश को रोशन।
दिखाओ जोश अब अपना, सभी मिलजुल सजन सारे॥
मिटाओ शराब का पीना, जभी हो देश का जीना।
करो आबाद भारत को, सभी मिलजुल सजन सारे॥
बनो नेता वीर प्रताप जैसे, जगादी जिसने भारत को।
दिखादो रोशनी ऐसी, सभी मिलजुल सजन सारे॥
बढादो पैर आगे को, हटो मत जङ्ग से पीछे।
चलादो चर्खा घर घर में, सभी मिलजुल सजन सारे॥
पहनो निज देश का कपड़ा, बना कर हाथ से प्यारे।
दिखादो हुनर अब अपना, सभी मिलजुल सजन सारे॥

हंस यह "रत्न" से कहता, हुनर की उन्नत्ति कीजे।
मिटादो सब की बेकारी, सभी मिलजुल सज्जन सारे॥

६—विदेशी वस्त्र ने क्या कर दिया?

चाल—श्री राम ने घर छोड़ कर बनला दिया क्यूं॥

वस्त्र विदेशी ने तुम्हें यूं ख्वार कर दिया।
सारी तरह से अब तुम्हें लाचार कर दिया॥१॥
आते ही इसने छीन ली रोटी गरीबों की।
चौपट्ट देशी वस्त्र का व्यापार कर दिया॥२॥
हर साल चान्दी खींचता है हिन्द से देखो।
अब क्या है खाली ढोल का आकार कर दिया॥
गौ आदि पशुओं की लगे चर्बी बडी भारी।
ज्यादह कहें क्या भ्रष्ट सब आचार कर दिया॥४॥
फैशन ही फैशन दीखता है बस जिधर देखो।
बस सादगी का तो कतई संहार कर दिया॥५॥
बे रोजगार बनते हैं नित चोर और डाकू।
बदमाशों का यहां पर गरम बाजार कर दिया॥६॥

छोड़ो "अमर" करलो प्रतिज्ञा आज ही तुम सब ।
इस नीच ने तो जीना भी दुशवार कर दिया ॥७॥

७—सभी को हमेशा हँसाएगा खद्दर

चाल—विपत में सनम के सम्भाली कमलिया

सुखी हिन्द को यह बनाएगा खद्दर ।
गुलामी से सबको छुडाएगा खद्दर ॥१॥
विदेशों को जाता क्रोड़ों रुपैया ।
यह सारा का सारा बचाएगा खद्दर ॥२॥
क्रोड़ों जो रोते हैं हा भूखे भाई ।
सभी को हमेशा हंसाएगा खद्दर ॥३॥
मिटा के अदावत का नामों निशां अब ।
परस्पर मोहब्बत बढाएगा खद्दर ॥४॥
हुए हिन्द वाले जो फ़ैशन पे पागल ।
सभी को ठिकाने पे लाएगा खद्दर ॥५॥
विदेशी वसन से महा पाप यों ही ।
जो होता है उसको हटाएगा खद्दर ॥६॥

"अमर" सारा भारत हुआ हाय गारत ।
इसे फिर से उंचा उठाएगा खद्दर ।।७।।

विदेशी वस्त्र छांडदो

चाल—कौन कहता है कि मैं तेरे खरीदारों में हुँ ।

छोडदो वस्तर विदेशी धर्म सारा जा रहा ।
हिन्द का अब यह पुराना दिव्य गौरव जा रहा ।।१।।
उन्नती के उच्च गिरि पे शोभता था देश जो ।
अवनती के सिन्धु में अब हिन्द डूबा जा रहा ।।२।।
भेजता था वस्त्र जो नित अन्य देशों को सदा ।
हा ! वही तन ढांकने को वस्त्र आज मांग रहा ।।३।।
हो रहा है हिन्द भूखा इस विदेशी वस्त्र से ।
जा रही लक्ष्मी चली दारिद्र बढ़ता आ रहा ।।४।।
शुद्धतर पालन अहिंसा धर्म का होता नहीं ।
खेद है कैसे विदेशी वस्त्र फिर भी सुहा रहा ।।५।।
सूझती तुमको नहीं क्या देश की यह दुर्दशा ।
शोक है दिल में तुम्हारे घूप अन्धेरा छा रहा ।।६।।

देश के आजाद होने का तरीका है यही।
जांच कर अब ए "अमर" गांधी तुम्हें बतला रहा ॥७॥

९—खादी ही देगी आजादी

चाल—रिवाड़ी वाले अलाबक्स की,
कहां गया मिजाजन घर वाला।

अहा बढी बढी सबसे खादी,
सब से आदी सब से सादी ॥ ध्रुव ॥
शुद्ध धवल है आनन्द कारी।
जैसे चन्दा अरु चान्दी ॥ अ० ॥
सुन्दर वस्त्र जग में जितने।
खादी है सबकी दादी ॥ अ० ॥
जो जो श्रेष्ठ पुरुष कहलाते।
बन गये सब इसके आदि ॥अ०॥
भारत के सब दीन जनों की।
करती 'खाना' आबादी ॥ अ० ॥
खादी बिन भारत को देखो।
हो गई पूरी बरबादी ॥ अ० ॥

धर्म अहिंसा पालता इस से।
संपद है इसकी बांदी ॥ अ० ॥
"अमर" इससे जोड़ो नेहा।
खादी ही देगी आजादी ॥ अ० ॥

हिन्दवाले विदेश से कितने कितने में क्या क्या लेते हैं ?

विदेशी माल से रे-हो गया हिन्द विरान ॥ ध्रव ॥
अपनी रोटी देकर फैशन लेते हैं नादान।
मारे भूख के तड़फ तड़फ कर यमके हो महमान ॥वि०॥
साठ क्रोड़ का "वस्त्र" पहन कर दिखलाते हैं शान।
चार क्रोड़ की "मदिरा" पीकर होते हैं बलवान ॥वि०॥
पांच क्रोड़ की "बिस्कुट" खाकर बनते हैं बलवान।
"तम्बाकू" में दोय क्रोड़ का करते हैं अवसान ॥वि०॥
पांच क्रोड़ की "मोटर" दौड़ा कहलाते धनवान।
चार क्रोड़ की खाय 'दवाई" रखते हैं निज प्राण ॥वि०॥

सात क्रोड़ का तेल लगाते खोते दीन ईमान ।
नव्वे लाख का "चमड़ा" लेते देखो दया निधान । वि०
उन्नीस क्रोड़ की "शक्कर" खाकर करते मीठी जुबान ।
एक अरब के खेल खिलोने बालक तोड़ें तान । वि० ॥
"अमर" बिगाड़ो मतना अब तो भारत का सन्मान ।
छोड़ विदेशी वस्तु देश पै हो जावो कुर्बान । वि० ॥